* ॐ *

शुद्धि-व्यवस्था

लेखकः

श्री स्वामी चिदानन्द संन्यासी

प्रधान मन्त्री

भारतीय हिन्दू-शुद्धि-सभा दिल्ली

आषाढ़ सम्वत् १९८५ वि०	मूल्य
सृष्टि सं० १९७२९४९०२८	चारआना

प्रकाशकः—

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा,

श्रद्धानन्द बाज़ार दिल्ली ।

मुद्रकः—

बा० कृष्णानन्द, के प्रबन्ध से,

श्रद्धानन्द प्रेस, देहली.

में मुद्रित ।

ॐ

शुद्धि-व्यवस्था

सम्पादकः—

श्री स्वामी चिदानन्द संन्यासी

प्रकाशकः—

भारतीय-हिंदू-शुद्धि-सभा, दिल्ली

प्रथमबार	आषाढ़ सम्वत् १९८० वि०	मूल्य
४०००	सृष्टि सं० १९७२९४९०२८	चारआना।

प्रकाशक:
भारतीय हिन्दू-शुद्धि-सभा.
श्रद्धानन्द बाज़ार दिल्ली ।

मुद्रक:—
ला॰ कृष्णानन्द, के प्रबन्ध से,
श्रद्धानन्द प्रेस, दिल्ली
में मुद्रित ।

❋ प्रस्तावना ❋

आर्य जाति आज अरक्षित है। इस पर आज चारों ओर से प्रहार हो रहे हैं। वशिष्ठ, विश्वामित्र हरिश्चन्द्र, युधिष्ठिर, राम कृष्ण, भरत की सभ्यता आज बदली जा रही है। इसका इतिहास नये सिरे से बनाया जा रहा है। यह सब बातें होरही हैं, और हम देख रहे हैं। हम में से अनेक ऐसे भी हैं, जो इस देशद्रोही काम में योग दे रहे हैं। मखमली गद्दे के लोभ में, चांदी के बर्त्तनों में खाने की चाव में पड़कर भारत की सभ्यता, भारत की संस्कृति बेच रहे हैं। यह आश्चर्य की बात हो सकती है, परन्तु है सच्ची।

अपनी, अपने देश की, धर्म की और सभ्यता की ऐसी दुरवस्था देखकर कतिपय नवयुवक भारतियों में कर्तव्य बुद्धि जागृत हुई। उन लोगों ने अपना कर्तव्य पालन करना स्थिर किया और देशवासियों को भी कर्तव्य का उपदेश दिया। देश में इस समय जो कर्तव्य-प्रेमियों का दल दिखाई पड़ता है वह सब इसी प्रेरणा का फल है। इन नवयुवकों का हृदय अपने देश और सभ्यता का तिरस्कार कैसे सह सकता था। ये वीर नवयुवक संसार के उन महा प्राण नवयुवकों में से हैं जो अपने देश को नहीं बेचते, किंतु देश के लिये स्वयं बिक जाते हैं। ये युवक मातृ-भूमि के आह्वान पर अपना सर्वस्व न्योछावर करदेते हैं और अपने देश और माता

पिता को धन्य बनाते हैं। अपने देशवासियों को कर्तव्य का मार्ग दिखाते हुए स्वयं संसार के पूजित होते हैं। अब ये वीरमाता के पुजारी अपनी थोड़ी शक्ति पर भरपूर श्रद्धा से भारत माताकी सेवाके लिये उठ खड़े हुये हैं। आर्यजाति पर जिधर तिधर से प्रहार होते हैं और जो जो कमजोरियां इसमें हैं उनको दूर करना इनका आवश्यक कर्म है। उनकी सभाओं का प्रधान प्रयत्न शुद्धि का आन्दोलन भी है।

आर्य जाति के अरक्षित रहने के कई कारण हैं। जिन में प्रधान कारण हमारी ना समझी है। हमारी समाज के सञ्चालक पुरोहित और पुजारियों ने अपनी ना समझी के वश होकर ही सामयिक आवश्यकताओं की ओर ध्यान नहीं दिया। किन २ कारणों से हमारा समाज कमजोर हो रहा है और उस कमजोरी को दूर करने के लिये कौन से उपाय हो सकते हैं इन बातों की ओर विशेष ध्यान नहीं दिया गया। इसका फल यह हुआ कि हमारे अनेक भाई-बहिन विधर्मियोंके प्रलोभनों में फंसकर समाजच्युत हो गये हैं। उन्हें हमने अपनाया नहीं। वे बिछुड़े हुए थे, मिलना चाहते थे हमने उन्हें अपने में मिलने नहीं दिया। अपनी आधुनिक अनार्य संस्कृति की कई पुस्तकों के आधार पर ऐसा किया। उस समय हम बड़े प्रसन्न हुए, अपनी इस बहादुरी पर। हमने समझा कि हमने धर्म का पालन किया। सचमुच प्रसन्नता की बात होती यदि हमने धर्मका पालन किया होता। परन्तु बात वैसी नहीं थी। वह समय बीत गया। थोड़े ही दिनों के बाद हमें अपनी कमजोरियां मालूम होने लगी और सब जगह हम

तिरस्कृत होने लगे। उसी समय हमने अपने देशके महापुरुषों की दिव्यवाणी के प्रकाश में अपनी इन कमजोरियों का मूल कारण देखा और उसको दूर करने को अग्रसर हुए।

परिस्थिति भेद से उपदेश में भेद

कई कम समझ अदूरदर्शी मनुष्यों द्वारा शुद्धि आन्दोलन के विरुद्ध धार्मिक आपत्तियां उठाई जाती हैं। हम भी उन आपत्तियों को उठा सकते हैं। शुद्धि के विरुद्ध अनेक तर्क भी उपस्थित कर सकते हैं, पुराने और नये अनेक श्लोक बनाकर सुना सकते हैं। परन्तु ऐसा नहीं करते और करना भी नहीं चाहते। क्योंकि ऐसा करना आर्य जाति को रसातलमें ले जाना है। एक बात और सुनिये? अभी सन् १९२४ ई० मे गंगा नदी में भारी बाढ़ आयी थी। उसके आस पास का सारा देहात जलमें डूबगया-रात को जो लोग खाट पर सो रहे थे उन लोगों ने आधी रातके पश्चात् अपनी चारपाई को पानी में डूबते हुए पाया, वे घबरा गये। घर से बाहर निकले चारों ओर जल की प्रखर धारा बह रही थी। एक स्थान पर यह धारा दूर तक नहीं थी थोड़ीही दूर तैरने पर उनकी रक्षा हो सकती थी। अब कहिये उस समय कोई पंडित जाकर उन लोगों को उपदेश दे कि "बाहुभ्यां नदीं न तरेत्" बांह से नदी पार न करो? तो उससे बढ़कर मूर्ख शायद ही कोई निकले। ऐसा उपदेश देने वाला न केवल मूर्ख ही समझा जायगा किन्तु वह उन लोगों का पक्का शत्रु भी होगा। यही बात यहां भी है। ये सब उपदेश हमारे कल्याण के लिए हैं। हमारे लोक-परलोक

में वृद्धि करने के लिये हैं। हमारे पूर्व पुरुषों ने हमारे नाश के उपाय नहीं बतलाये।

परिस्थिति के भेद से उपदेश में भी भेद हो जाता है। एक संग्रहणी के रोगी को किसी ने बतलाया कि भैया दूध न पीना! तो क्या इसका यह आशय है कि वह कभी दूध पिये ही नहीं। यदि कोई इसका ऐसा अर्थ समझे तो समझना चाहिये कि उसे बुद्धि का अजीर्ण होगया है। उसे बरेली जाना चाहिये या रांची। यहां भी यही बात है। एक समय था जब हमारी पवित्रता अक्षुण्ण थी, हमारा समाज ऊंचे आचरणों और विचारों पर स्थित था, धर्म के सामने कोई प्रलोभन काम नहीं कर सकता था। उस समय के लोग धर्म के लिये राज्य तक छोड़ देते थे। यदि कोई अभागा हिन्दू दूसरा धर्म ग्रहण कर लेता या और कोई पाप कर्म कर लेता था तो उसे पुनः समाजमें लाने की व्यवस्था की गई थी। क्योंकि उसे अपनी समाज से धर्मान्तर ग्रहण करने में कोई दबाव या प्रलोभन न था। फिर भी जो धर्मान्तर ग्रहण करे उसे पुराना पापी समझ कर पृथक् रखना उस समय बुरा नहीं समझा जाता था किन्तु वर्तमान अवस्था वैसी नहीं है। आज हम जिस अवस्था से गुजर रहे हैं वह पराधीन अवस्था है। हमारा समाज विश्रृंखल है। हम अरक्षित हैं। हमें दुर्बल बनाने के लिये दूसरे धर्म वालों की ओर से जोर शोर से उद्योग हो रहे हैं। करने और न करने योग्य काम किये जा रहे हैं। अनाथ बच्चे, विधवा स्त्रियां, फुसलाई जारही हैं। कहीं कहीं कानूनके द्वारा

भी हम सताये जा रहे हैं। ऐसे समय में शुद्धि के विरुद्ध यदि कोई आवाज उठाये तो उससे बढ़ कर ना समझ कौन होगा? और उससे बढ़कर समाज का शत्रु किसे कहेंगे?

धर्म का सम्बन्ध

धर्म का सम्बन्ध प्रत्येक व्यक्ति के मन में उसके रचयिता परमात्मा से होता है। मन पर विजय उसी की होती है जिस को मन ही अपना विजेता मान ले। छल, धमकी, दबाव और शस्त्र के बल से तो कभी किसी का मन विजय ही नहीं हो सकता। तर्क से कभी कभी विद्वानों के मन में परिवर्तन होते देखा गया है किन्तु मूर्ख लोगों में तर्क भी विशेष काम नहीं देता। धर्म की वृद्धि उसके सद्गुणों के कारण होती है। यदि धर्माचार्यों के आचार, विचार अच्छे होते हैं तो साधारण जनता स्वतः उनमें प्रेम करने लगती है और धीरे धीरे उनके धर्म में दीक्षित हो जाती है।

इस अमिट सिद्धान्त के होते हुये भी इतिहास का यह प्रत्यक्ष प्रमाण है कि बाल काल से जो व्यक्ति जिस सम्प्रदाय में पलते हैं उसके संस्कार उस में अनायास ही घुस बैठते हैं। युवा होने पर संस्कारों और रूढ़ियों की स्वाभाविक दासता के कारण मनुष्य प्रायः अपने बाप दादों के ही धर्म में बना रहता है। यही कारण है कि जो हिंदू शस्त्र के बल से मुसलमान या ईसाई बनाये गये या धोखे से

पतित किये गये थे अपने जीवन में इतने कट्टर और हिंदू धर्म विरोधी नहीं हुए जितनी उनकी सन्तान हुई।

दूसरी बात यह है कि जो धर्म हमारी जीवन यात्रा में बाधक होता है वह बहुत काल तक जीवित नहीं रह सकता चाहे उसकी फिलोसफी कितनी ही उच्च कोटि की क्यों न हो। जैन और बौद्धों के ह्रास का प्रधान कारण उनके धर्मादि नियमों की सीमातीत कठोरता हुई। यही बात वर्तमान हिंदू धर्म पर भी ठीक घटती है। जिस जाति की स्त्री किसी विधर्मी के छूने मात्र से ही अपने घर वालों के काम की नहीं रहे, जिस जाति की विधवाओं को घर में मनुष्योचित स्थान न मिले, जिस धर्म के याजक स्वार्थान्ध होकर रूढ़ियों को सिद्धान्त समझ बैठें और अपने अनुयाइयों को बन्धन में ऐसा जकड़ दें कि उनका जीना ही दूभर होजाय, वह व्यक्ति जाति या धर्म यदि क्षीण हो जाय तो कौन से आश्चर्य की बात है।

संसार में मनुष्य खाने, पीने, पहरने, ओढने, रहने, सहने, और जीविका की सुविधा पहले चाहता है। जहां इन बातों में धर्म अनुचित बाधा डालता है वहां लोग ऐसे बाधक, अप्राकृतिक और असुविधाजनक धर्म को तिलाञ्जलि देने लगते हैं। जिन निर्धनों को हम हेय, नीच अछूत और बुरा समझ कर संसार में मनुष्य जाति के साधारण अधिकारों से वञ्चित रखते हैं वे दूसरे जन्म के उस सुख के लोभ से जिसका स्वप्न हमें धर्म शास्त्र, पुराण या गाथाएं

दिखलाती हैं कब तक बहलाये जा सकते हैं। धर्म को प्रत्येक व्यक्ति की स्वकीय इच्छा पर ही छोड़ देना ठीक है।

समझने की बात है कि धर्म तथा धर्म पुस्तक और परमात्मा किसी की सम्पत्ति नहीं है। यदि हम अपना धर्म सच्चा समझें, और धर्म पुस्तक को ईश्वरीय ज्ञान मानें और ईश्वर को जगत का नियन्ता स्वीकार करें, तो हमें निःसंकोच भाव से कह देना पड़ेगा कि ईश्वर धर्म और धर्म पुस्तक संसार के मनुष्यमात्र के लिये हैं, इसलिये धर्म याजकों का यह प्रधान कर्तव्य है कि वे अपने धर्म के महत्व का संसार में प्रचार करें। यह प्रचार इस भाव से होना चाहिये कि हमारे पास अमूल्य सुधासागर है इससे हम भी तृप्त हों और संसार के अन्य प्राणी भी संतृप्त किये जांय।

संसार के अनेक धर्मों में जो संसार के लिये विशेष उपयोगी सिद्ध होगा वही ठहर सकेगा, शेष सब कालान्तर में स्वतःएव निर्मूल हो जायंगे। हमें ईर्ष्यावश किसी को निर्मूल करना नहीं है, किन्तु हमें प्रेम वश भूले भटकों को सीधे मार्ग पर लाना है, इसी का नाम "शुद्धि" है।

जो शुद्धि का विरोध करते हैं, वह निम्न दो भारी अपराधों के अपराधी हैं:—

१—हमारे पास एक उत्तम पदार्थ है हम उससे दूसरों को लाभ पहुंचाने से रोकते हैं, जो सर्वथा

अनुचित है। धर्म याजक शुद्ध बुद्धि से. प्रेम से प्रेरित हो कर अपने धर्म प्रचार के लिये सर्वथा स्वतन्त्र है। याजक के काममें संकीर्णतावश. या राजनैतिक स्वार्थपरतावश बाधक होना कभी भी प्रशस्त नहीं कहा जा सकता।

जो लोग धर्म शास्त्रों या धर्म पुस्तकों को अपने ही जानने की वस्तु समझते हैं वे बड़े ही स्वार्थी तथा निकम्मे हैं। वह संसार का जान बूझ कर सन्मार्ग में प्रविष्ट होने से रोकने वाले होनेके कारण अधर्मी हैं। अपने धर्म के द्रोही हैं और ईश्वरीयज्ञान को अन्धकार में रखने की दुश्चेष्टा करने के कारण ईश्वर के सामने अवश्यमेव दण्डनीय हैं। जो मनुष्य अपने पिता की सम्पत्ति को अपने भाई से छुपा कर अकेला उपभोग में लाता है. उसको पिता अवश्य दण्ड देता है। इसी तरह ऐसे स्वार्थी, धर्म याजकों को भी ईश्वर अवश्य दण्ड देगा।

२—जो लोग दूसरों को अपनी अन्तरात्मा के आदेश के अनुसार अपनी भक्ति का मार्ग ग्रहण करने में बाधक होते हैं वे एक व्यक्ति की मानसिक स्वतंत्रता के अपहरण करने वाले हैं इसलिये यह कर्म भी समाज नीति के सर्वथा विरुद्ध है।

सुतरां जैसे मुसलमान. या ईसाई दूसरे धर्म वालों के लिये जो उनके धर्म में जाना चाहें उनके लिये अपने धर्म का दरवाजा खुला रखते हैं—वैसेही हिंदुओं को (जिन में सनातनी, आर्य. जैन, बौद्ध, सिक्ख सब शामिल हैं)

भी अपने धर्म का दरवाजा खुला सदा रखना चाहिये। यदि हिन्दू धर्मका दर्वाजा खुला रखते हैं तो जाना जायगा कि इन्हें धर्म और ईश्वर से प्रेम है और यदि ये अपने धर्मका दरवाजा दूसरे के लिए बन्द करते हैं तो समझना चाहिये कि इन का धर्म सार्वभौम, सार्वजनिक ईश्वरीय धर्म नहीं है किन्तु थोड़े से स्वार्थी लोगों का एक मठ्या मन्दिर मात्र है।

शुद्धि का कार्यारम्भ

कई शताब्दियों में आर्य जाति के बहुत से लाल मुसलमान और ईसाई होते जा रहे हैं। इनमें से कुछ मनुष्य तो ऐसे हैं जो सम्प्रति आर्य जाति के लिये हानि और भय का कारण बन गये हैं। और अपने को पक्का मुसलमान या ईसाई कहने लगे हैं। और अधिक संख्या में ऐसे मनुष्य हैं जो आर्य जाति के विशाल वृक्ष की छाया के नीचे ही रहना अच्छा समझते हैं। उनका खान, पान, रहन, सहन, भाषा भूषा और आचार व्यवहार प्रायः हिन्दुओं के तुल्य ही है वे गीता और रामायण को पढ़ते, गंगा-जमुना का स्नान करते, श्री राम-कृष्ण के नाम की रट लगाते तथा गौ-ब्राह्मण में श्रद्धा भक्ति रखते हैं।

ये लोग भारतवर्ष के विभिन्न प्रान्तों में मलकाने, अधभरिये, मूलेजाट, मूलेगूजर, मूलेतगा, लालखानी, संजोगी आदि नामों से करोड़ों की संख्या में, नव—मुस्लिम, के नाम से प्रसिद्ध हैं। किन्तु इनका आहार व्यवहार मुसलमानों से प्रायः सर्वथा पृथक है।

इनकी त्रिशंकुवत् अवस्था को देखकर ता० ३० अगस्त सन् १९२२ ई० को क्षत्रिय उपकारिणि महासभा की बैठक जो काशीधाम में श्रीमान् राजा सर रामपालसिंह जी के० सी० आई० ई०, मेम्बर कौन्सिल आफ स्टेट, प्रेसीडेन्ट तालुकेदारान सभा अवध के सभापतित्व में हुई थी। उस में इस आशय का प्रस्ताव पास हुआ कि किसी समय में जो राजपूत हिंदू-धर्म तथा हिन्दू जाति से पृथक होगये हैं तथा जो अब अपने धर्म और बिरादरी में मिलना चाहते हैं उन्हें शुद्ध करके पुनः बिरादरी में मिला लिया जाय। राजपूत जाति की सम्मति जानने के लिये यह प्रस्ताव समाचार पत्रों में छपवाया गया।

पुनः २९ दिसम्बर सन् १९२२ ई० को क्षत्रिय उपकारिणी सभा की बैठक आगरा में लेफ्टिनेण्ट राजा दुर्गानारायण सिंह जी तिरवा नरेश के सभापतित्व में हुई। उस समय इस शुभ कार्यमें क्षत्रिय जाति की सहमति ज्ञात करके मलकाना राजपूतों को मिला लेने का प्रस्ताव सर्व सम्मति से स्वीकृत किया गया।

इसके पश्चात् क्षत्रिय महासभा आगरा के २६वें वार्षिकोत्सव में ३१ दिसम्बर सन् १९२२ ई० को श्रीमान् राजाधिराज सर नाहरसिंह जी के. सी. आई. ई. शाहपुराधीश की अध्यक्षता में यह प्रस्ताव पुनः उपस्थित होकर सर्व सम्मति से स्वीकृत हुआ।

अभी शुद्धि का कार्य आरम्भ करने का विचार हो ही रहा था कि लाहौर के एक समाचार पत्र द्वारा मुसलमानों

को इस विचार का ज्ञान हुआ। बस फिर क्या था! मुसलमान लोग आपे से बाहर होगये और उन्होंने राजपूत महासभा को कोसना आरम्भ कर दिया। स्थान २ पर उनकी सभाएं होने लगीं और मुसलमानों को भड़काना आरम्भ कर दिया समाचार पत्रों द्वारा राजपूत जाति को युद्ध निमन्त्रण दिया जाने लगा। मौलवी लोग आगरा मथुरा आदि जिलों तथा भरतपुर राज्य में मलकाना भाइयों को भांति २ के प्रलोभन देकर शुद्ध न होने के लिये प्रेरणा करने लगे। सबसे पूर्व खड़राई ग्राम में कई चोटियां भी काट दी गईं। इन घटनाओं के कारण १३ फरवरी सन १९२३ ई० को आगरे में स्वर्गीय श्रीमान् स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज के सभापतित्व में समस्त हिन्दू सम्प्रदायों का सङ्गठन कर 'भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा" की स्थापना की गई। उस समय यह भी निश्चय हुआ कि जो मलकाना राजपूत अपनी शुद्धि कराना चाहें—उन्हें सभा द्वारा शुद्ध कर के उनकी बिरादरी में मिला दिया जाय।

इसके पश्चात् शुद्धि का कार्य आरम्भ किया गया जिसके फल स्वरूप सभा को पूर्ण सफलता प्राप्त हुई और ३१ दिसम्बर सन् १९२७ ई० तक केवल भा० हि० शुद्धि सभा ने एक लाख तरेसठ हजार मनुष्यों को शुद्ध करके आर्य जाति में दीक्षित किया।

आर्य जाति और विशेषतया राजपूत जाति का यह स्मरण रखना चाहिए कि सन् १९२१ ई० की मनुष्य गणना के अनुसार ३१ करोड़ भारत वासियों में २४ करोड़ के

लग भग सब हिन्दू राजपूत लोग हैं। ऐसी दशा में यदि ये ८ करोड़ के लग भग अपने बिछुड़े हुए राजपूत और दूसरे भाइयों को एकत्रित करके उनसे टूटी हुई जाति मालाका संग्रथ नकरलें तो न केवल हिन्दू जाति की ही अपितु अखिल मनुष्य जाति की शोभा बढ़ेगी।

यह बड़े सौभाग्य और हर्ष का विषय है कि सम्प्रति आर्य-हिंदू जाति का प्रायः प्रत्येक सम्प्रदाय 'शुद्धि' को निर्विवाद स्वीकार करते हुये आगे बढ़ रहा है। और दूरदर्शी विद्वानों तथा विद्वत्परिषदों ने वेद शास्त्रों के आधार पर 'शुद्धि' व्यवस्था देकर इस महान कार्य का पूर्णतया समर्थन किया है।

समकालीन शुद्धि की महत्ता को समझते हुये भी बहु संख्यक जन-समूह ऐसा है जिसके हृदय में वेद-शास्त्रों के अनभिज्ञ होने के कारण शुद्धि के सम्बन्ध में भिन्न २ प्रकार की शङ्कायें यदा कदा उठती रहती हैं। उन को इस प्रकार असमञ्जस में डालने वाली शङ्कायें कभी २ शुद्धि कार्य में इतनी बाधक सिद्ध होती हैं कि किया कराया काम चौपट हो जाता है। दूसरे जो व्यक्ति शास्त्रों से सर्वथा अनभिज्ञ हैं उन्हें शुद्धि सम्बन्धी प्रमाण ढूंढने में भी बड़ी कठिनता होती है।

इस लिये हमने इन उलझनों को सुलझाने के लिये सर्व साधारण का लाभ पहुंचाना लक्ष्य में रख कर वेद-शास्त्र

लोक, इतिहास और बड़े २ विद्वानों की शुद्धि सम्बन्धी व्यवस्थाओं का इस पुस्तक में संग्रन्थन किया है।

एक शुद्धि व्यवस्था का भा० हि० शुद्धि सभा द्वारा बहुत पहिले संग्रह किया गया था-जो समय २ पर बिना मूल्य और स्वल्प मूल्य में सभा की ओर से वितरण होती रही है। किन्तु उसका संग्रह शीघ्रता के कारण ऐसे ढंग से हुआ था कि एक विषय के प्रमाण एक स्थान पर नहीं मिल सक्ते थे। अत: इस पुस्तक में उनका सुधार कर और बहुत से नये प्रमाणों का समावेश करके जनता के सन्मुख रख रहा हूं। यदि इस में भी पाठकों को कहीं पर त्रुटि दृष्टि गत हो या और कुछ बढ़ाना घटाना अभीष्ट हो तो मुझे लिखें! उचित होने पर यथा सम्भव ठीक कर दिया जावेगा।

योजनाक्रम

इस पुस्तक की योजना निम्न क्रमानुसार की गई है।

१ वेद व्यवस्था–इस प्रकरण में उन वेद मंत्रों का संग्रह किया गया है जो शुद्धि करने का आदेश करते हैं।

२, शास्त्रीय–व्यवस्था–इस प्रकरण में विविध स्मृतियों के उन विषयों का संग्रह किया गया है जो शुद्धि का क्रियात्मिक समर्थन करते हैं।

३, विद्वन्मण्डल-व्यवस्था–इस प्रकरण में काशी आदि के विद्वानों की व्यवस्था का संग्रह किया गया है।

४. लोक-व्यवस्था-इस प्रकरण में विविध समाचार पत्रों की शुद्धि सम्बन्धी सम्मतियों का संग्रह किया गया है।

५. इतिहास-व्यवस्था-इस प्रकरण में उन ऐतिहासिक शुद्धियों का संग्रह किया गया है जो समय २ पर आर्येतरों की शुद्धि आर्यों द्वारा होती रही हैं।

आषाढ़ सुदी २ सं० १९८५ वि० | सबका मङ्गलाभिलाषी
१९ जून स० १९२८ ई०, भौमवार | —चिदानन्द संन्यासी

* श्री परमात्मने नमः

वेद-व्यवस्था

अनार्यों को शुद्ध करो !

वि जानीह्यार्यान्ये च दस्यवो बर्हिष्मते रन्धया शासदव्रतान् ।
शाकी भव यजमानस्य चोदिता विश्वेत्ता ते सधमादेषु चाकन॥

ऋग्वेद मण्डल १ अनुवाक १० सूक्त ५१ मन्त्र ८

हे मनुष्य ! तू (बर्हिष्मते) उत्तम सुखादि गुणों के उत्पन्न करने वाले व्यवहार की सिद्धि के अर्थ (आर्यान्) सर्वोपकारक धार्मिक परोपकारी विद्वान पुरुषों को (विजानीहि) जान-और (ये) जो (दस्यवः) पर पीड़ा करने वाले-अधर्मी वेद विरोधी-सदाचार को उल्लंघन करने वाले अनार्य मनुष्य हैं, उनको धर्म की सिद्धि के लिये (रन्धया) मार अर्थात् शुद्ध कर और (आशासत) शिक्षा करते हुये अर्थात् शुद्ध करते हुए (यजमानस्य) यज्ञ के करने वाले (चोदिता) प्रेरक और (शाकी) उत्तम शक्तिसम्पन्न सामर्थ्य को (भव) सिद्ध कर, जिससे (ते) तेरे उपदेश व तेरी संगति से (सधमादेषु) उत्तम सुखों से युक्त वर्तमान स्थानों में (ता)

उन (विश्वेत्) सब कर्मों को सिद्ध करने के लिये ही मैं चाकन इच्छा करता हूँ।

भावार्थः—इस ऋचा में परमेश्वर मनुष्यों को उपदेश करते हैं, कि जो वेदाज्ञा के विपरीत आचरण करने वाले, सत्य भाषणादि उत्तम व्रतों से रहित अनार्य पुरुष हैं, उन को शुद्ध करके सन्मार्ग वैदिक पथ) पर लाओ। जिस से संसार के गोवध आदि अधर्म युक्त काम बन्द होकर सत्य वैदिक धर्म की स्थापना हो—और मनुष्य उस प्रभु की आज्ञा का पालन करते हुये सुख तथा शान्ति का उपभोग करें। और अपनी सामर्थ्य को बढ़ाते हुये पारस्परिक एक दूसरे के सच्चे सहायक बन जावें।

इस वेदाज्ञा से स्पष्ट सिद्ध है कि जब तक संसार से अनार्यत्व को दूर करके आर्यत्व की स्थापना नहीं की जाती तब तक आर्य सभ्यता के पुजारी नेताओं का सर्व प्रथम यही कर्तव्य है, कि वे भारत से अनार्यत्व को दूर करने के लिये प्रबल प्रयत्न करें-और इसके लिये एक ही उपाय है और वह है-''शुद्धि''। अतः 'शुद्धि का प्रचार करो और अनार्य जगत को शुद्ध करो' यही इस ऋचा का आदेश है।

पतितों को जीवन दो

उत देवा अवहितं देवा उन्नयथा पुनः।
उतागश्चक्रुषं देवा जीवयथा पुनः॥
ऋ० १० । १३७ । १ ॥

हे (देवाः) विद्वान मनुष्यो ! तुम लोग अवहितं अधो-गत पतित मनुष्यों को (उत) अवश्य (पुनः फिर से (उन्नयथा) उठाओ पवित्र करो। (उत) और हे (देवा परो-पकारी जनों ! आप लोग अगश्चक्रुषं पाप गामी अपराधी मनुष्य को पुन. दुबारा (जीवयथा) जीवन दो अर्थात शुद्ध पवित्र करो !

भावार्थ—इस श्रुति में पतित पावन भगवान ने मनुष्य जीवन से पतित धर्म विहीन मनुष्यों को शुद्ध पवित्र करने और पवित्र मानव जीवन प्रदान करने की आज्ञा की है। जो लोग पवित्र आर्य हिंदू धर्म को प्रचारात्मक अथवा संशोधक धर्म मानने में आना कानी करते हैं उन्हें इस वेद मंत्र को ध्यानपूर्वक पढ़ना चाहिये।

मनुष्य स्वभाव से अल्पज्ञानी है इसलिये उससे भूल या अपराध का होना असाधारण बात नहीं है। मार्ग पर चलने वाले ठोकर खाते हैं घोड़े के सवार गिरते हैं। तैरने वाले भी यदा कदा डूबते देखे जाते हैं तो क्या यह अर्थ है कि ठोकर खाने वाला चलना बन्द करदे, घोड़े से गिरने वाला घोड़े की सवारी छोड़ दे अथवा डूबने वाला जल में तैरना ही छोड़ दे ? नहीं ! नहीं !! कदापि नहीं !!! जिससे कभी भूल होचुकी है, या जो कभी अधर्म पङ्क में फंस चुका है उसको उस से निकाल कर पवित्र जीवन बनाने और धर्म काम की ओर लगाना चाहिये।

इसी उद्देश्य को लक्ष्य में रखकर यह श्रुति पुकार २

कह रही है कि अपने पतित भाइयों को उठाओ और उनको पवित्र जीवन करके गले से लगाओ।

समस्त संसार को आर्य बनाओ

इन्द्रं वर्धन्तोऽप्तुरः कृण्वन्तो विश्वमार्यम्।
अपघ्नन्तोऽराव्णः॥ ऋ० मं० ९, सू० ६३ मं० ५॥

अर्थ—हे मनुष्यो! (अप्तुरः) उत्साह पूर्वक (इन्द्रम्) ईश्वर के नाम को (वर्धन्तः) बढ़ाते हुये (अराव्णः) स्वकीय स्वत्व अपहरण करने वाले अनार्यों को (अपघ्नन्तः) मार पछाड़ो, और (विश्वम्) समस्त संसार को (आर्यम्) आर्य बनाओ—शुद्ध करो।

भावार्थः—इस मन्त्र में परमेश्वर आज्ञा करते हैं, कि जो मनुष्य वेद विरोधी अनार्य हैं—उन सब को शुद्ध करके आर्य बनाओ अर्थात् अनार्यत्व का नाश करके समस्त संसार को शुद्ध करो। जिस से ईश्वर के गुण, कर्म स्वभाव का मनुष्य-मात्र के हृदय में प्रकाश होकर अधर्म, अन्याय कृपणता और अन्धकार का सर्वथा नाश होजाये।

जो मनुष्य आर्य धर्म को ऐसा बताते हैं कि इसमें आर्येतर जाति के लोग सम्मिलित नहीं होसकते (शुद्ध नहीं होसकते) और न उनके सम्मिलित करने की उनके शास्त्रों में आज्ञा है वे इस श्रुति को पढ़ें और इसके अर्थों का ध्यान पूर्वक विचार करें तो पता चलेगा कि हर एक मनुष्य चाहे

वह पतित, महा पतित और महा पतिततर पतित क्यों न हो उसके लिए भी वैदिक धर्म में दीक्षित करने की स्पष्ट आज्ञा है। ऐसी स्पष्ट आज्ञा किसी भी मज़हब के अन्दर नहीं है। यदि कहीं पर है भी तो बड़े संकोच और परिमित भाव के साथ कुछ हिचकिचाहट सी हुई दिखलाई देती है।

उदाहरणार्थ, मुसलमान मज़हब जो यह दावा करता है कि हमारा मज़हब तबलीगी मज़हब है उसमें भी ऐसी स्पष्ट आज्ञा नहीं है। इसीलिये तो हम कहते हैं कि "शुद्धि करना आर्य जाति का जन्म सिद्ध ईश्वर-प्रदत्त अधिकार है" और वह किसी के रोके नहीं रुक सकती।

हिन्दुओं को इस श्रुति की आज्ञा पालन करने के लिए कटिबद्ध होना चाहिये। इसी में उनका कल्याण और आर्य जाति का सन्मान है।

अनार्यत्व को दूर करो !

आ संयतमिन्द्रणः स्वस्तिं शत्रु तूर्याय बृहतीममृध्राम्।
यया दासान्यार्याणि वृत्राकरो वज्रिन सुतुकानाहुषाणि॥
ऋ० ६।२२।१०॥

भावार्थ—इस मंत्र में शत्रुओं पर विजय पाने के लिये परमेश्वर से प्रार्थना की गई है कि हे परमात्मन् हमें वह अमोघ शक्ति दो जिस के द्वारा हम अनार्यों को आर्य बनाकर अपनी आत्मिक उन्नति कर सकें।

इस ऋचा में "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" का ही रूपान्तर

से पुष्टि करण किया गया है और आज्ञा की है कि जो दास कुल अर्थात् अनार्यकुल (विधर्मी वंशज मनुष्य हैं, उन्हें शुद्ध करके आर्य कुल अर्थात् आर्य वंश में परिणत करें अर्थात् संसार से अनार्यपन सर्वथा दूर करके आर्य संस्कृति का प्रचार व प्रसार करें।

शुद्धि के लिये प्रार्थना

पुनन्तु मा देव जनाः पुनन्तु मनसा धियः।
पुनन्तु विश्वा भूतानि जातवेदः पुनीहि मा ॥
यजु० १९। ३९

अर्थ हे (देवजनाः) विद्वान् पुरुषो ! (मा) मुझे (पुनन्तु) शुद्ध करो (मनसा) विज्ञान और प्रीति से हमारी (धियः) बुद्धियों को (पुनन्तु) पवित्र करो (विश्वा भूतानि) समस्त जनो ! (मा) मुझको (पुनन्तु) पवित्र जीवन दो और हे (जातवेदः) वेदों के प्रचारक आचार्यो ! (मा) मुझको (पुनीहि) पवित्र करो।

भावार्थ—इस मंत्र में परमेश्वर शिक्षा देता है कि जो मनुष्य सद्धर्म को छोड़ कर विधर्म (मुसलमानादि) को ग्रहण कर लेते हैं, वह इस प्रकार से शुद्ध होने के लिये प्रार्थना करें कि मैं शुद्धि का इच्छुक हूं, मुझको देवता लोग शुद्ध करें मेरे मन को शुद्ध किया जाय, मेरी बुद्धि को पवित्र किया जावे, समस्त जनता मिल कर मुझ को शुद्ध करें और पर-

परमात्मा जो सम्पूर्ण ज्ञान का प्रकाशक है, मुझ अनार्य को शुद्ध करके सन्मार्ग पर चलावे।

सारांश यह है कि शुद्धि का इच्छुक सच्चे मन से प्रार्थना करता है कि हे ईश्वर तू मुझ को शुद्ध कर अर्थात् मेरी गिरी हुई आत्मा तेरी उपासना से बलवान् हो जावे जिससे मैं शुद्धि के व्रत को निभा सकूं। जो ईश्वर भक्त पुरुष हैं, उन के आत्मा में ईश्वरोपासना के कारण बड़ा आत्मिक बल आ जाता है। वह संसार के मानापमान और हानि लाभ को आत्मिक बल या धर्म बल के द्वारा ही सह सकते हैं और उस बल का केन्द्र ईश्वर है।

आत्मा की गिरावट अशुद्धि है। उसकी शुद्धि ईश्वरोपासना द्वारा ही हो सकती है। अतः शुद्धि के जिज्ञासुओं को आवश्यक है कि वे ईश्वर से आत्म बल की याचना करें जैसा कि इस मंत्र में बतलाया गया है। अतएव हम कह सकते हैं कि शुद्धि की प्रथा अति प्राचीन और वेदोक्त है। जिस का पालन करना हर एक वैदिक धर्मी का कर्तव्य है।

पराक्रम से शुद्धि करो !

पवित्रेण पुनीहि मा शुक्रेण देव दीद्यत्।
अग्ने क्रत्वा क्रतूँ २॥ रनु ॥ य० १९। ४०॥

हे (दीद्यत्) प्रकाशमान (देव) विद्या आदि से परोपकार करने हारे (अग्ने) विद्वान् लोगो! आप (पवित्रेण)

शुद्ध (शुक्रेण) वीर्यादि पराक्रम से युक्त होकर (मा) मुझ पतित मनुष्य को (अनु पुनीहि) पुनः पवित्र शुद्ध कृत्वा) करके मेरे (क्रतून) कर्मों को शुद्ध पवित्र करो।

भावार्थ इस मंत्र में भगवान उपदेश करते हैं कि परोपकारी विद्वान् लोग अपने पराक्रम को बढ़ा कर धर्म से पतित हुए लोगों के जीवन को शुद्ध करें और उन के मलीन कर्मों का संशोधन करके हर तरह उनको उन्नतिशील बनावें जिस से वे लोग फिर कभी अशुद्धाचरण के द्वारा पतित भाव को प्राप्त न हों किन्तु धर्म मार्ग पर चलते हुए सदा सुखी रहें। इस प्रकार अपने बल, पौरुष और पराक्रम को बढ़ाते हुये प्रत्येक को अपना तथा दूसरों का कल्याण सम्पादन करना चाहिये।

वेद ज्ञान से शुद्धि

यत्ते पवित्र मर्चिष्यग्ने विततमन्तरा।
ब्रह्म तेन पुनातु मा ॥ य० १९। ४१ ॥

हे अग्ने) प्रकाश स्वरूप परमेश्वर ! (ते) तेरे (अर्चिषि) सत्कार करने योग्य शुद्ध स्वरूप में (अन्तरा) सब से भिन्न यत जो (विततम) विस्तृत सब में व्याप्त (पवित्रम्) शुद्ध स्वरूप (ब्रह्म वेद ज्ञान है (तेन) उस से (मा) मुझको आप (पुनातु) शुद्ध कीजिये।

भावार्थ जिस प्रकार अग्नि के द्वारा धातु उपधातुओं की शुद्धि होती है और उनका सब मल दूर होजाता है।

ऐसे ही ज्ञान स्वरूप परमात्मा के ध्यान मे मग्न होने से सब कष्ट नष्ट होजाते हैं और शुद्ध ज्ञान का प्रकाश होते ही पाप रूपी अन्धकार भाग जाता है। जो पुरुष वेद के इस पवित्र ज्ञान का आश्रय लेकर शुभ कर्म करता है उसके अन्तःकरण की शुद्धि हो जाती है और वह भी जाती हो कर सबका पूज्य बन जाता है।

तात्पर्य

तात्पर्य यह कि—वेदों मे शुद्धि सम्बन्धी अनेकों मंत्र हैं, जिन में से कुछ मंत्र शुद्धि व्यवस्था के पाठकों के अवलोकनार्थ यहां उद्धृत किए गए हैं। मेरा विचार था कि मैं संग्रह किये हुए उन सब मंत्रों का इस पुस्तक में उल्लेख करता, जो शुद्धि से सम्बन्ध रखते हैं, किंतु मुझे संदेह है कि कहीं पाठक मंत्र बाहुल्य को देखकर अपना रुचि इसके मुख्य उद्देश्य से विमुख न करलें इसलिये संक्षेप मे कुछ मंत्रों का उल्लेख यहां किया गया है। इतने में ही पाठक समझ सकते हैं कि वेद शुद्धि के लिये स्थानर पर 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम' 'पुनन्तु मा देवजनाः' 'उत देवा अवहितम्' इत्यादि वेद मंत्र आदेश कर रहे हैं कि संसार को आर्य बनाओ! मलीन कर्मियों को शुद्ध करो! पतितों को उठाओ! इत्यादि ये आदेश हैं, जिनका पालन करना सभी आर्यों का कर्तव्य है।

इति वेद व्यवस्था

शास्त्रीय-व्यवस्था

क्षत्रिय जाति म्लेच्छ कैसे बनी ?

पौण्ड्काश्चौड् द्रविडः कम्बोजा यवनाः शकाः ।
पारदा पल्हवाश्चीनाः किराता दरदाः खशाः ॥
शनकैस्तु क्रियालोपादिमाः क्षत्रिय जातयः ।
वृषलत्वं गताः लोके ब्राह्मणाऽदर्शनेन च ॥
मनु० १० । ४४ - ४३ ।

अर्थः—पौण्ड् चौड् द्रविड कम्बोज, यवन (यूनानी) शक (तिब्बती और तातारी) पारद पल्हव (फारस देशीय) चीनी, किरात, दरद और खश ये सम्पूर्ण क्षत्रिय जातियां शनैः शनैः वैदिक संस्कारों को छोड़ देने और विद्वान् ब्राह्मणों के न मिलने अर्थात् उपदेश न करने के कारण वृषलत्व अर्थात् पौण्ड्रादि नाम से धर्म पतित हो गई और म्लेच्छ यवनादि नामों से पुकारी जाने लगीं । इस प्रकार महाभारत शान्ति पर्व के राज प्रकरण अध्याय ६५ में लिखा है कि:—

यवनाः किराता गान्धाराश्चीनाः शवरबर्बराः ।
शकास्तुषाराः कङ्कश्च, पल्हवाश्चांध्रमद्रकाः ॥

पौण्ड्रा पुलिन्दारमठा, काम्बोजाश्चैव सर्वशः ।
ब्रह्म क्षत्र प्रसूताश्च, वैश्याः शूद्राश्च मानवाः ॥
महा भा० शा० प० उप० ५६ । १३ । १४

अर्थः—यवन, किरात (भील) गन्धार (कन्धारी) चीन (चीनी) शवर, बर्बर शक, तुषार कंक, पल्लव आंध्रमद्र, चौंड, पुलिन्द रमठ और काम्बोज यह समस्त जातियां ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र इन चार वर्णों से उत्पन्न हुई हैं । अर्थात् उपनयनादि वैदिक संस्कार रहित होने पर यवन आदि बनी हैं । इसी प्रकार विष्णु पुराण अंश ४ अध्याय ३ क. २६ में लिखा है कि:—

सतथेति तद्गुरु वचनमभि नन्द्यतेषां वेशान्य मकारयत्
यवनान् मुण्डित शिरसोऽर्द्ध मुण्डान्शकान केशान
पल्हवांश्च स्मश्रु धरान् निःस्वाध्याय वषट्कारान् ।
एतानन्यांश्च क्षत्रियांश्चकार ते चात्म धर्म परित्यागात्
ब्राह्मणैश्च परित्यक्ताः म्लेच्छतां ययुः ॥
विष्णु पु० अंश ४ अ० ३ । २६ ॥

अर्थ—क्षत्रिय जातियों में से किसी का सिर मुड़ाकर यवन नाम रक्खा किसी के केश रखवा दिये और शकनाम रखा और किसी की डाढ़ी रखवा कर उस का पल्हव नाम रक्खा तथा उनको वेदादि के स्वाध्याय से पृथक् करके म्लेच्छ बना दिया । इस प्रकार के अनेकों प्रमाण हैं जिनसे सिद्ध होता है कि संसार की समस्त जातियां किसी समय आर्य जाति का एक अंग प्रत्यंग थीं और समय २ पर आर्य

उपदेशकों के अभाव में संस्कारहीन होने के कारण अनार्य बन गईं।

शुद्धि का विधान

देशभङ्गे प्रवासेच व्याधिषु व्यसनेष्वपि।
रक्षेदेव स्वदेहादि पश्चाद्धर्मं समाचरेत्॥
पाराशर ७। ४१॥

देश में उपद्रव होने पर, विदेश जाने पर, रोग में और घोर मुसीबत के समय में, जिस प्रकार होसके अपने शरीर धन-दौलत, स्त्री-बच्चों आदि की रक्षा करे और जब देश में शांति होजावे तो शुद्ध होकर अपने धर्म को ग्रहण कर ले।

बलाद्दासीकृता ये च, म्लेच्छ चाण्डाल दस्युभिः।
अशुभं कारितं कर्म, गवादि प्राणिहिंसनम्॥
देवल स्मृ० १७॥

उच्छिष्टमार्जनं चैव, तथा तस्यैव भोजनम्।
खरोष्ट्र विड् वराहाणां, मांसस्यचभक्षणम्॥
दे० स्मृ० १८॥

तत्स्त्रीणां तथासंग स्ताभिश्च सहभोजनम्।
मासोषिते द्विजातौ तु प्राजापत्यं विशोधनम्॥
दे० स्मृ० १९॥

जिसको म्लेच्छों ने बलपूर्वक या धोखे आदि से दास अर्थात् विधर्मी मुसलमान आदि बना लिया हो और उससे गोवध आदि प्राणियों की हिंसारूप अशुभ कर्म कराये हों

उसने म्लेच्छों की झूठ मांजी हो, या उनका झूठा भोजन किया हो, खरगोश ऊंट आदि का मांस भक्षण किया हो उनकी स्त्री के साथ मैथुन किया हो (मुसलमानी ईसायन आदि को घर में रख लिया हो और उसके साथ भोजन किया होना उनकी शुद्धि प्राजापत्य व्रत से होजाती है।

गोमूत्रं गोमयं क्षीरं दधि सर्पिः कुशोदकम् ।
एकरात्रोपवासश्च, कृच्छ्रं सान्तपनं स्मृतम् ॥
॥ मनु० ॥ ११-२१२ ॥

अर्थ—उपरोक्त श्लोक में प्रायश्चित्त करने की साधारण विधि इस प्रकार बतलाई है कि गोमूत्र, गोबर, दूध दही, और कुशाओं से लिया हुआ जल, इन सब को मिलाकर पंचगव्य बनाकर शुद्ध होने व्यक्ति वाले को पिलाने के पश्चात् एक रात्रि उपवास करावे। यही कृच्छ सांतपन व्रत शुद्ध करने वाला है।

तात्पर्य यह कि शुद्धि के पहिले पञ्चगव्य पिलाने और एक रात उपवास कराने की आवश्यकता है

"मैं फिर ऐसा न करूंगा" कहने मात्र से शुद्धि

कृत्वा पापं हि सन्तप्य तस्मात्पापात्प्रमुच्यते ।
नैवं कुर्यां पुनरिति निवृत्त्या पूयते तु सः ॥
मनु० ११-२३१ ।

अर्थ—अपने धर्म को छोड़कर दूसरों के धर्म ग्रहण करने पर भी तप अर्थात् प्रायश्चित्त करके उस पाप से छूट

जाता है और 'मैं ऐसा फिर न करूंगा' अर्थात् फिर अपने धर्म को न त्यागूंगा इस प्रकार प्रतिज्ञा करने पर वह शुद्ध हो जाता है।

पश्चात्ताप से शुद्धि

आचम्यन्तः परं मौनं ध्यायन दुष्कृत मात्मनः।
मनः संतापनं तीव्रमुद्वहे च्छोक सन्ततः ॥ व० स्मृ० ॥

अर्थ—जिस ने दुष्कर्म किया हो अर्थात् जो पतित हो गया हो वह आचमन करके मौन साधन कर मन में उसका पश्चात्ताप करे तो शुद्ध हो जाता है।

म्लेच्छों के साथ खाने पीने पर शुद्धि

अपेयं येन संपीत मभक्ष्यंचापि भक्षितम्।
म्लेच्छै नींतेन विप्रेण, अगम्यागमनंकृतम् ॥ ७
तस्य शुद्धिं प्रवक्ष्यामि यावदेकं तु वत्सरम्।
चान्द्रायणन्तु विप्रस्य सपराकं प्रकीर्तितम् ॥ ८

देवल स्मृति

अर्थ—जिस हिंदू ने किसी विधर्मी के चुंगल में फंस कर न पीने योग्य (मदिरा आदि) पी लिया हो, अभक्ष्य पदार्थ (मांसादिक) खा लिया हो, अगम्य में गमन भी किया हो अर्थात् यवनी आदि के साथ शादी करली हो और एक वर्ष तक वह उसी धर्म में बना रहा हो उसकी शुद्धि चाहे वह ब्राह्मण ही हो पराक सहित चांद्रायण करने से हो जाती है।

गोभक्षक की शुद्धि

सुरायाः संप्रपानेन गोमांसे भक्षणे कृते ।
तप्त कृच्छ्रं चरे द्विप्रो मौञ्जी होमेन शुद्ध्यति ॥
वृ० यम स्मृति अ० ५-६

अर्थ--मदिरा पीने और गोमांस खाने पर भी तप्त-कृच्छ्र व्रत द्वारा होम करने से पतित हुआ ब्राह्मण भी शुद्ध होजाता है ।

अमेध्यरेतो गोमांसं चाण्डालान्न मथापिवा ।
यदि भुक्तं तु विप्रेण कृच्छ्रं चान्द्रायणं चरेत् ॥
पारा० ११-१

दूषित वीर्य, गोमांस और पतित का अन्न खाकर ब्राह्मण कृच्छ्र, चान्द्रायण से शुद्ध होता है ।

अगम्यागमनं कृत्वा मद्य गोमांस भक्षणम् ।
शुद्ध्यंश्चान्द्रायणाद्विप्रः प्राजापत्येन भूमिपः ॥
गरुड पु० म० अ० २१४ । ४०

निषिद्ध स्त्री के साथ गमन और शराब तथा गोमांस भक्षण करने के पश्चात् विद्वान् विप्र चान्द्रायण व्रत करने से शुद्ध होता है ।

म्लेच्छों से मुक्त हुवों की शुद्धि

म्लेच्छैर्हृतानां चौरैर्वा कान्तारेषु प्रवासिनाम् ।
भुक्त्वा भक्ष्यमभक्ष्यं वा क्षुधार्त्तेन भयेन वा ॥

पुनः प्राप्य स्वकं देशं चातुर्वर्ण्यस्य निष्कृतिः ।
कृच्छ्रमेकं चरेद्विप्र स्तदर्धं क्षत्रियश्चरेत् ॥
दे० स्म० ४०-४८

म्लेच्छों या चोरों से पकड़े जाने, शत्रुओं के देश में भूख से व्याकुल या समय अवस्था में अभक्ष्य भक्षण करने पर (स्त्री पुरुष दोनों) फिर अपने देश में वापिस आ कर ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, इन चारों वर्णों की शुद्धि निम्न प्रकार से हो जाती है। एक कृच्छ्र व्रत से ब्राह्मण की। अर्ध कृच्छ्र से क्षत्रिय वैश्य और शूद्रों की शुद्धि होती है।

गर्भवती स्त्री की शुद्धि

विनिसृते ततः शल्ये रजसो वापि दर्शने ।
तदा सा शुध्यते नारी विमलं काञ्चनं यथा ॥
दे० स्मृ० ५१ ॥

जिस स्त्री को बलात् विधर्मी पुरुष से गर्भ रह जाता है वह स्त्री उस गर्भ से मुक्त हो जाने पर अथवा रजोदर्शन हो जाने पर इस प्रकार शुद्ध हो जाती है जैसे मल दूर हो जाने पर स्वर्ण शुद्ध और निर्मल हो जाता है।

योषा बिभर्त्ति या गर्भं म्लेच्छात्कामादकामतः ।
ब्राह्मणी क्षत्रिया वैश्या तथा वर्णेतरापि च ॥
अभक्ष्यं भक्षितं चापि तस्याः शुद्धिः कथं भवेत् ।
कृच्छ्रं सान्तपनं शुद्धघृतैर्योनि विपाचनम् ॥ यय०

यदि ब्राह्मणी, क्षत्रिया, वैश्या अथवा शूद्रा स्त्री इच्छा या अनिच्छा से किसी म्लेच्छ का गर्भ धारण करले, अथवा अभक्ष्य भक्षण करले तो कृच्छ्, सांतपन से या शुद्ध किये घी से योनि प्रक्षालन करने से शुद्ध हो जाती है।

गो दुग्ध पान से शुद्धि

कपिलायाश्च गो दुग्ध्वा धारोष्णं यः पयः पिबेत् ।
एष व्यासकृतः कृच्छः श्वपाकमपि शोधयेत् ॥
दे० स्मृ० ६८ ॥

कपिला गौ को दुह कर जो धारोष्ण दूध पीता है यह व्यास कथित कृच्छ् व्रत है। इस प्रकार का दुग्ध पान करने से महान् मलीनकर्मा चाण्डालादि भी शुद्ध हो जाता है।

गायत्री से शुद्धि

गायत्र्यास्तु परं नास्ति शोधनं पाप कर्मणाम् ।
महा व्याहृति संयुक्तां प्रणवेन च संजपेत् ॥ सम्वर्त २२१ ।

पाप कर्मा मनुष्यों को शुद्ध करने के लिये गायत्री मंत्र से बढ़ कर कोई दूसरा साधन नहीं है। इसलिये प्रायश्चित्तीय पुरुष महाव्याहृति और ओंकार से युक्त गायत्री मंत्र का जप करे।

गायत्र्याः शत साहस्रं सर्वं पापहरं स्मृतम् ।
वृ० पा० ६ । २९१ ॥

गायत्री मंत्र के जप करने से पापी के सम्पूर्ण पाप नष्ट हो जाते हैं।

दान देने से शुद्धि

स्वर्णदानं गोदानं भूमिदानं गवाह्निकम् ।
विप्रेभ्यः सम्प्रयच्छेत् प्रायश्चित्ति विशुध्यति ॥
देवल स्मृति ७३ ॥

वेद वेत्ता परोपकारी विद्वानों को स्वर्णदान, गोदान. भूमिदान और गवान्हिक दान देने से प्रायश्चित्ति शुद्ध हो जाता है।

नाम से शुद्धि

प्रायश्चित्तानि सर्वाणि तपः कर्मात्मकानि वे ।
यानि तेषामशेषाणां कृष्णानुस्मरणं परम् ॥
वि० पु० २ । ६ । ३७

तप्त कृच्छ्रादि प्रायश्चित्त के लिये जितने भी साधन वर्णन किये गये हैं उन सबसे बढ़ कर कृष्ण नाम स्मरण से शुद्धि हो जाती है।

किरात हूणान्ध्र पुलिन्द पुक्कसा आभीर कंका यवनाः खसादयः
येऽन्ये च पापा यदपाश्रया श्रयाः शुध्यन्ति तस्मै प्रभविष्णवे नमः
श्रीमद्भागवत ।

किरात. हूण, पुलिन्द, पक्कस, आभीर कंक और यवनादि

मलीन कर्मा प्रायश्चित्त विष्णु भगवान के नाम मात्र स्मरण करने से शुद्ध हो जाते हैं।

श्वपच शबर खल यवन जड़, पामर कोल किरात।
राम कहत पावन परम होत भुवन विख्यात॥ तु॰ रा॰

चाण्डाल और यवनादि 'राम' का नाम लेने से पवित्र हो जाते हैं।

विद्वानों की वाणी से शुद्धि

धर्मस्य ब्राह्मणो मूलमग्रं राजन्य उच्यते।
तस्मात् समागमे तेषा मेनो विख्याप्य शुध्यति॥
तेषां वेदविदो ब्रूयुस्त्रयोऽप्येनः सुनिष्कृतिम।
सा तेषां पावनाय स्यात्पवित्रा विदुषां हि वाक॥
मनु० ११। ८३-८४॥

अर्थ—धर्म का मूल वेद वेत्ता ब्राह्मण है और अग्र भाग राजा है, इस लिये उनकी सभा में अपने पाप का वर्णन करने से प्रायश्चित्ती शुद्ध हो जाता है। क्योंकि तीन वेदवेत्ता ब्राह्मण जिस पाप के लिये जो प्रायश्चित्त नियत करदें, उसी से पापी की शुद्धि हो जाती है क्योंकि विद्वानों की पवित्र वाणी ही शुद्धि का कारण होती है।

नव मुसलिम की शुद्धि

गृहीतो यो बलान्म्लेच्छैः पञ्चषट् सप्त वा समाः।
दशादि विंशति यावत्तस्य शुद्धिर्विधीयते॥
अत्रि० स्मृति २२.५३

अर्थ—जिसको म्लेच्छों ने बलात् म्लेच्छ बना ५. ६. ७. १०. २० वर्ष तक अथवा इससे भी अधिक काल तक म्लेच्छ बनाये रक्खा हो. उस को शुद्ध करलेना चाहिये। भाव यह कि जो मनुष्य बलात विधर्मी किया गया हो उसको शुद्ध करलेना चाहिये।

अनाविष्कृत पापास्तु, जपैर्होमैश्च शोधयेत् ॥
। अ० स्मृ० ११-१२६

अर्थ—जिनका पाप अज्ञात है अर्थात् यह ज्ञात नहीं कि इसने क्या पाप कृत्य किया है या वह स्वयं अज्ञानता से अपना पाप प्रकाशित नहीं करता। उसको गायत्री आदि पवित्री करण के मंत्रों और अग्निहोत्र करके शुद्ध करलेना चाहिये।

ब्राह्मणों की कृपा से शुद्धि

अंगीकारेण ज्ञातीनां ब्राह्मणानुग्रहेण च।
पूयन्ते तत्र पापिष्ठा महापातकिनोपि ये ॥
। अत्रि स्मृति २६४ ॥

अर्थ—जाति अर्थात् बिरादरी के लोग अपने में मिलाने के लिये तयार हों और ब्राह्मणों का अनुग्रह (दया) हो—तो पापी और महापापी मनुष्य भी शुद्ध हो जाते हैं। भाव यह कि बिरादरी की स्वीकृति होने पर विद्वान् ब्राह्मणों की कृपा दृष्टि से महा पतितों की भी शुद्धि होजाती है।

स्त्री और बालक अशुद्ध नहीं होते

स्त्रियां बालाश्च वृद्धाश्च न दुष्यन्ति कदाचन ।
आपस्त० २ । ३ ॥

स्त्री बालक और वृद्ध पुरुष कभी भी दूषित नहीं होते हैं । क्योंकि:—

रजसा शुद्धयते नारी नदी वेगेन शुद्धयति ॥
अङ्गिरा । ४२॥

अङ्गिरा ऋषि कहते हैं कि स्त्री रजोदर्शन के होने के पश्चात उसी प्रकार शुद्ध हो जाती जिस प्रकार नदी का जल बहने से शुद्ध हो जाता है । इसीलिये शास्त्र की आज्ञा है कि पतित पुरुष की कन्या को पतित नहीं समझना चाहिये ।

आपविधान में शुद्धि का विधान

अनुक्तनिष्कृतीनान्तु पापानामनुपत्तये ।
शक्तिं चावेक्ष्य पापं च प्रायश्चित्तं प्रकल्पयेत् ॥
मनु० ११ । २०९ ॥

शास्त्रों में जिन पापों का प्रायश्चित्त वर्णन नहीं किया गया है, उन पापों के प्रायश्चित्त के लिये शक्ति और पाप को देख कर शुद्धि करनी चाहिये तथा ।

अनिर्दिष्टस्य पापस्य तथोपपातकस्य च ।
तच्छुद्ध्यै पावनं कुर्याच्चान्द्रायणं समाहितः ॥
वृ० पा० ६ । ११२

जिन पातकों और उपपातकों के प्रायश्चित्त का विधान शास्त्रों में नहीं है उन सब की शुद्धि चान्द्रायण व्रत के करने मात्र से हो जाती है ।

देशः कालं वयः शक्तिः पापं चावेक्ष्य यत्नतः ।
प्रायश्चित्तं प्रकल्प्यं स्याद्यत्र चोक्ता न निष्कृतिः ॥
याज्ञ० स्मृ० ३-२९४

अर्थ–विद्वानों को चाहिये कि वह लोभ, मोह आदि से रहित होकर धर्म शास्त्रानुकूल देश--काल और शक्ति के अनुसार शुद्धि की व्यवस्था करें, अर्थात् जहां म्लेच्छों का प्रभाव है, वहां गाजे बाजे के साथ शुद्धि करने की आवश्यकता नहीं, वहां शान्तिपूर्वक केवल कान में "ओ३म्" शब्द कह कर या अन्य किसी इसी प्रकार के उचित साधनों द्वारा पवित्र आचरण करने के आदेश मात्र से शुद्धि कर लेनी चाहिये । इसी प्रकार आयु और कालादि विचार कर सुगम से सुगम शुद्धि की व्यवस्था होनी चाहिये ।

आपत्काल में शुद्धि

आपत्काले तु सम्प्राप्ते, शौचाचारं न चिन्तयेत् ।
शुद्धिं समुद्धरेत् पश्चात्, स्वस्थो धर्मं समाचरेत् ॥
पाराशर स्मृति ७-४३

अर्थ आपत्ति काल में [जैसा कि सम्प्रतिप्राप्ति है] है शौकाशौच का विशेष विचार न करके शुद्धि कर लेनी चाहिये। पश्चात् स्थिति सुधरने और शान्ति स्थापित होने पर वैदिक संस्कारादि धर्मका अच्छी तरह से आचरण करें।

जातिच्युत का पाप पुनः जाति में न मिलाने वाले को लगता है

जातित्यक्ता हि कुरुते पापं ज्ञाति विवर्जितः।
तत्पापं ज्ञाति बन्धूनां, जायते मनुरब्रवीत् ॥
स्क० पु० 3?८

अर्थः—जातिच्युत [पतित] होने पर पतित मनुष्य जो पापकृत्य करता है, उसको यदि प्रायश्चित्त करा कर शुद्ध नहीं किया जाता-तो उसके द्वारा किया हुआ पाप उसकी अपनी बिरादरी में न मिलाने वाले जाति के मनुष्यों को लगता है। भाव यह कि हर एक जाति के लोगों को चाहिये कि वे अपनी २ बिरादरी में बिछुड़े हुए भाइयों को शुद्ध करके अपने में मिला लेवें। यदि वह ऐसा नहीं करते तो ये सम्पूर्ण गोवधादि पाप उस बिरादरी के मनुष्यों को लगता जो उनको शुद्ध करने के लिये तैयार नहीं हैं। इस लिये प्रत्येक बिरादरी के मनुष्यों को चाहिये कि वह अपने बिछुड़े हुए भाइयों को शुद्ध करके शीघ्र अपने में सम्मिलित कर लेवें और जाति भ्रंश के दोष से अपनी जाति को बचावें।

॥ इति शास्त्रीय व्यवस्था ॥

विद्वन्मण्डल-शुद्धि व्यवस्था

भारतीय विद्वत्परिषद्—व्यवस्था

श्री मन्महाराजाधिराज जम्बूकाश्मीराद्यनेकदेशाधीश नृपतिवर श्री रणवीरसिंहादिष्टैः प्रकाण्डपण्डितैः संगृहीता धर्मशास्त्रमहानिबन्धोपाख्य रणवीरप्रायश्चित्तादुद्धृत्य महामहोपाध्यायेन पण्डितशिवदत्तशर्मणा प्रकाशितायाः "म्लेच्छी भूतानां शुद्धि व्यवस्थाख्याया" लिख्यतेऽधोभागः।

जानतोऽजानतो वापि भक्त्याभक्त्याऽपि वा कृतम् ।
गङ्गास्नानं सर्वविधं सर्वपापप्रणाशनम् ॥१॥
चान्द्रायण सहस्रं तु यश्चरेत्कायशोधनम् ।
पिबेद्यश्चापि गङ्गाम्भः समौ स्यातां न वा समौ ॥२॥
भवन्ति निर्विषाः सर्पा यथा तार्क्ष्यस्यदर्शनात् ।
गङ्गायाः दर्शनात्तद्वत्सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥ ३ ॥
पुण्यक्षेत्राभिगमनं सर्वपापप्रणाशनम् ।
देवाभ्यर्चनं पुंसामशेषाऽघविनाशनम् ॥४॥

भविष्येपि

स्नानमात्रेण गङ्गायाः पापं ब्रह्मवधोद्भवम् ।
दुराधर्षं कथं याति चिन्तयेद्यो वदेदपि ॥ १ ॥

तस्याहं प्रवदः पापं ब्रह्म कोटिवधोद्भवम् ।
स्तुतिपादमिमं मत्वा कुम्भीपाकेषु जायते ॥२॥
आकल्पं नरकं भुक्त्वा ततो जायेत गर्दभः ।

इत्यादि वचनैः श्री गङ्गातीर्थस्नानादेः सकलपापनाशकता सिद्ध्यति । एवं बृहन्नारदीये सर्वसाधारणप्रायश्चित्तानि प्रोक्तानि—

प्रायश्चित्तानि यः कुर्यान्नारायणपरायणः ।
तस्य पापानि नश्यन्ति अन्यथा पतितो भवेत् ॥१॥
यस्तु रागादिनिर्मुक्तो ह्यनुतापसमन्वितः ।
सर्वभूतदयायुक्तो विष्णुस्मरणतत्परः ॥२॥
महापातक युक्तो वा युक्तो वाप्युपपातकैः ।
सर्वैः प्रमुच्यते सद्यो यतो विष्णुरतं मनः ॥ ३ ॥

इत्यादिना विष्णुभक्तस्य नर मात्रस्य सकलपापनाशोऽभिहितः । इत्थञ्च बहुत्र प्रायश्चित्त विधायकवचनेषु 'नर' इति सामान्यपदोपादानादुदाहृतवचनैर्म्लेच्छादीनामपि भगवद्भक्त्याधिकार सिद्धेश्च सर्वेषामपि स्वाधिकारे स्वयोग्यतानुसारेण वैदिकमार्गोन्मुखत्वं निरबाधं सिध्यति । इत्थं च त्रिपुरुषावधिनिश्चित् सवर्णोत्पत्तिकानां कामतोऽकामतो वा म्लेच्छैः संसृष्टानां प्रायश्चित्ताचरणेन पुनः स्व स्व वर्णान्तर्गतत्वपूर्वकधर्मप्राप्तिः । तदन्येषामपि व्रात्यतमानां मूलतो म्लेच्छादीनां वा सत्यमिच्छायां नास्तिक्यत्यागेन भक्तिशास्त्रप्रत्यभिज्ञाशास्त्र राममन्त्राद्युपदेश्यताधिकारः -इ क ।-

लाकरोक्तसंस्कारादिप्राप्तिः सिध्यतीत्यत्र न कस्यचित्कटा-क्षावसर इति सकल श्रुतिस्मृतिपुराणेतिहासपर्यालोचन-निगलितो विमर्शो निष्पक्षपातादिभिः सुधीभिर्निपुणं विचारणीय इति दिक् ।

व्यवस्थापकाः—

महामहोपाध्याय श्री० पं० अन्नदाचरण तर्कचूडामणि भारत धर्म महामण्डल. काशी ।

स्मृति सुधाकर श्री पं० शशिभूषण स्मृतितीर्थ भारत-धर्म महामण्डल काशी ।

महामहोपाध्याय पं० शिवदत्त शास्त्री. प्रधान संस्कृता-ध्यापक ओरियण्टल कालेज लाहौर ।

महामहोपदेशक विद्यानिधि विद्या-वाचस्पति व्याख्यान वाचस्पति श्री पं० गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी, व्याकरणाचार्य न्यायशास्त्री. प्रिंसिपल सनातनधर्म संस्कृतकालेज लाहौर ।

महोपदेशक पं० यदुकुल भूषण शास्त्री. मुलतान ।

साहित्यरत्नाकर महोपदेशक, पंडित अखिलानन्द शर्मा कविरत्न. अनूपशहर ।

साहित्यनिधि वेदरत्न महोपदेशक पं० गङ्गाविष्णु काव्य-तीर्थ, पटना ।

महामहोपदेशक पं० श्रवणलाल वाणीभूषण, झालरा-पाटन ।

भाषार्थ

[भारतवर्ष के सनातनी विद्वानों की एक "विद्वत्परिषद्" नाम की सभा है उसने शुद्धि को शास्त्र सम्मत स्वीकार करके उपरोक्त शुद्धि व्यवस्था संस्कृत में अपने हस्ताक्षरों सहित प्रकाशित कराई है। जिसका भाषार्थ निम्न प्रकार है:-]

महाराजाधिराज जम्बू कश्मीराधिपति श्री मन्महाराज रणवीरसिंहजी ने भारत के बड़े २ पण्डितों से "रणवीर प्रायश्चित्त" नामक एक ग्रन्थ बनवाया था। उसमें से श्री० महामहोपाध्याय पं० शिवदत्त शर्मा ने "म्लेच्छीभूतानां शुद्धि" व्यवस्था नाम का एक छोटा सा ट्रैक्ट प्रकाशित किया है। इस पुस्तक से नीचे लिखा स्वल्प भाग उद्धृत किया जाता है, जिससे जनता को प्रकट हो जाय कि इस विषय में प्राचीन प्रकाण्ड पण्डितों की सम्मति क्या थी।

श्लोकार्थ—ज्ञान से अज्ञान से भक्ति से या बिना भक्ति के किया हुआ गंगास्नान हर प्रकार के पापों को नाश कर देता है ॥ १ ॥

सहस्रों चान्द्रायणों के द्वारा जो पुरुष शुद्ध होते हैं और जो गंगाजल पान से शुद्ध होते हैं दोनों ही बराबर हैं ॥ २ ॥

गरुड़ के देखने से जिस प्रकार सर्प विष रहित होजाते हैं उसी प्रकार गंगा के दर्शन से तमाम पाप नष्ट हो जाते हैं ॥ ३ ॥

भविष्यपुराण में लिखा है, कि जो मनुष्य ऐसा कहता है कि गंगास्नान से बड़े २ ब्रह्महत्यादि पापों का नाश कैसे हो सकता है और जो लोग इनको केवल प्रशंसात्मक समझते हैं, वे कुंभीपाक नरक में जाते हैं, और कल्प भर नरक में रहकर अन्त में गदहा बनते हैं। इत्यादि बचनों से गंगा स्नान व तीर्थ गमन सब प्रकार के पापों को नष्ट करने वाला सिद्ध होता है। यही बात बृहन्नारदीयपुराण में लिखी है कि जो मनुष्य भगवद्भक्ति परायण होकर प्रायश्चित्त करता है उसके सब पाप नष्ट हो जाते हैं। जो रागादि से रहित होकर पश्चात्ताप करता हुआ सब भूतों पर दया पूर्वक विष्णु का स्मरण करता है वह बड़े २ पातक और उपपातकों से मुक्त हो जाता है। इत्यादि बचनों से सिद्ध होता है कि विष्णु भक्त मनुष्य के सब पाप नष्ट हो जाते हैं। प्रायश्चित्त के वचनों में मनुष्यमात्र के प्रायश्चित्त का विधान है। इसलिये सब लोगों को अपने २ अधिकार तथा योग्यता के अनुसार वैदिक मार्ग प्रवृत्ति में कोई बाधा नहीं है। इससे यह सिद्ध होता है कि यदि ब्राह्मण क्षत्रियादि को इच्छा से या बलात्कार से म्लेच्छों के साथ संसर्ग हो जाय तो वह प्रायश्चित्त के अनन्तर अपने २ वर्ण में मिल जाते हैं। इसके अतिरिक्त अन्य पतित तथा जन्म के म्लेच्छ भी यदि इच्छा करें तो नास्तिकता के त्याग से भक्ति शास्त्र तथा हिन्दू धर्मानुकूल कर्मों के अधिकारी हो जाते हैं और उनका प्रायश्चित्त "शूद्र कमलाकर" लिखित रीति से हो सकता है। सम्पूर्ण श्रुति स्मृति इतिहास पुराण आदि का भी यही मत है।

ऊपर लिखित व्यवस्थाओं का निष्कर्ष यह है कि बलात्कार म्लेच्छीकृत ब्राह्मणादि आर्यों (हिन्दुओं) की तथा जन्म के म्लेच्छों की शुद्धि शास्त्रानुकूल है।

(व्यवस्थापक देखो संस्कृत भाग)

काशीस्थ विद्वत्परिषद् व्यवस्था

"ये तु चतुर्वर्णेषूपनयनादि संस्कारहीनाः स्वकर्मभ्रष्टाश्चेति तासां जातीनां तेषां वर्णानां सर्वेषामेव जनानां वर्णान् विनिर्णीय वर्णाश्रमसमाजे ग्रहणं स्वाधिकारप्रदानपूर्वकं जातीयशिक्षया शास्त्रीय संस्कारेण च संपादनीयम्। एवं जातीयशिक्षया शास्त्रीयसंस्कारेण च जात्युत्कर्षविधानं सर्वस्मिन्नेव युगे समोद्गतमिति प्राचीनेतिहासे बहुत्र दृश्यते"

व्यवस्थापकाः—

विद्याश्रमीत्युपनामकाः श्री भोलानाथशर्माणः।
तर्करत्नेत्युपाधिकाः श्री अनन्तदेव शर्माणः॥
विद्यारत्नोपाधिकाः श्री विश्वेश्वर शर्माणः।
विद्यादित्योपनामकाः श्री ज्ञानेन्द्र नाथ शर्माणः।

(यह प्रस्ताव काशीस्थ वेदोद्बोधिनी सभा ने कार्तिक शुक्ला पञ्चमी सं० १९८३ वि० को स्वीकृत किया था जो पौष मास के संस्कृत 'सुप्रभातम्' में प्रकाशित हुआ है।)

भाषार्थ

काशी के विद्वानों की शुद्धि व्यवस्था

जो व्यक्ति चारों वर्णों में उपनयनादि संस्कार रहित हैं और अपने कर्म से भ्रष्ट (यवनादि) होगये हैं, उन्हें

उन्हों जाति व वर्णों में निर्णय करके वर्णाश्रम समाज में ले लेना चाहिये और जातीय शिक्षा तथा शास्त्रीय संस्कार द्वारा उन्हें उनका अधिकार (हक़) देना चाहिये। हर एक युग में यह जाति उन्नति का विधान प्राचीन इतिहास मे अनेक स्थानों में मिलता है।

(व्यवस्थापक देखो संस्कृत भाग)

मलकाना राजपुत्र प्रायश्चित्त-व्यवस्था

रजोवीर्यशुद्धिरेव वर्णाश्रमधर्मावलम्बिन्या हिन्दुजातेः प्रधानमार्य्यत्वलक्षणम्। रजोवीर्य्यशुद्धौ सत्यां सामान्य बहुविधानाचारैग्रस्तापि हिन्दुजातिः प्रायश्चित्तसंस्कारद्वारा ताननाचारान् दूरीकृत्य स्वीयसमाजे प्रवेष्टुमर्हतीति सनातनधर्मस्य सर्ववादिसम्मतः सिद्धान्तः। एतत्सिद्धान्तानुसारेणानुसन्धानद्वारा निश्चितमिदं यन्मलकानानाम्ना प्रसिद्धाः क्षत्रिया इदानीं यावदपि भोजनविवाहसम्बन्धं मोहम्मदैः सार्द्धं न कुर्वन्तीति। सुतरां नैते मोहम्मदा, अपितु हिन्दव एव। केवलमनेकवर्षतः क्षत्रियजातिसम्बन्धविरहितेष्वेतेषु काश्चन कुरीतयः प्रचरन्ति। ताः कुरीतीर्निवारयितुं विदुषां ब्राह्मणानां परिषदियं यां प्रायश्चित्तव्यवस्थां निर्द्धारयति, तां स्वीकृत्य ते सर्वे तत्तज्जातीयैः स्वजातिषु मेलयितव्याः। तथाहि—

अङ्गीकारेण बन्धूनां ब्राह्मणानुग्रहेण च।
पूयन्ते तत्र पापिष्ठा महापातकिनोऽपिये ॥ (अत्रिस्मृतिः २७४)

जातित्यक्तो हि कुरुते पापं जातिविवर्जितः ।
तत्पापं जातिबन्धूनां जायते मनुरब्रवीत् ॥ स्कन्द पु० ३।१८
चत्वारो वा त्रयो वाऽपि वेदवन्तो द्विजोत्तमाः ।
पञ्च त्रयो वा धर्मज्ञैः परिषत् सा प्रकीर्तिता ॥

(पाराशरस्मृतिः ८-२०)

इत्याद्युपर्युक्त परिषदा विहिता व्यवस्था धर्मशास्त्रानुसारं सर्वैः समादरणीया मलकानानाम्ना प्रख्यातिं गतानां क्षत्रियाणां पुनःसंस्कारविषये निम्नलिखिता व्यवस्था हिन्दु पुनःसंस्कारसमिति द्वारीकृत्य प्रकाश्यते—

प्रथमं क्षौरं कार्यं, तदनन्तरं पञ्चगव्यप्राशनपूर्वकं यथाशक्ति उपवासः कर्तव्यः। उपवासदिने राम-कृष्ण-शिवनामानि जपनीयानि । उपवासे ऽसमर्थः फलाहारं कुर्यात् ।

सति सामर्थ्ये, सर्वैर, अन्यथा-प्रतिगेहमेकेनापि पुरुषेण गङ्गातीरे मुण्डनं स्नानं च कृत्वा गाङ्गजलमानेयम् । यदि गङ्गा दूरे भवेत्तदा यमुनातट एव उपर्युक्तं सर्वमनुष्ठेयम्। आनीतेन गङ्गाजलेन यमुनाजलेन वा सर्वैः तत् कुटुम्बिभिर्मार्जनं कर्तव्यम् । तेनैव सर्ववस्तूनि च पावयितव्यानि । अनन्तरं संस्कारेच्छुभिर्धर्माचार्य समीपमुपस्थातव्यम् । तत्र उपाध्यायगणः स्वस्तिवाचन-पुण्याहवाचन-गणपति-कलश षोडशमातृका-पञ्चोंकार-नवग्रहादिपूजन--गायत्रीजप संकल्पानन्तर होमं कुर्यात् । अनन्तरं संस्कारेच्छुभिर्धर्माचार्यस्य चरणस्पर्शपूर्वकं मन्त्रोपदेशः, यथाधिकारं यज्ञोपवीतं वा

ग्राह्यम् । जपहोम—गायत्री-गङ्गा-हरिनाम माहात्म्यम् यथा—

अनाविष्कृतपापांस्तु जपहोमैश्च शोधयेत्॥ (मनुः ११-२२६)

गायत्री छन्दसां माता माता लोकस्य जाह्नवी ।
उभे ते सर्वपापानां नाशकारणतां गते ॥
वेदमार्गबहिष्ठानां जनानां पापकर्मणाम् ।
मनःशुद्धिविहीनानां हरिनाम्नैव निष्कृतिः ॥

(नारदपुराणषष्ठाध्यायः)

इत्याद्य पर्युक्तशास्त्रीयप्रमाणैः निर्दिष्टकृत्येषु मस्पादितेषु ते संस्कृताः सन्तः यथाविधि भोजनादि द्वारा स्वजातौ प्रवेष्टुमर्हन्ति । जातिप्रविष्टैरपि तैः उपदिष्टमन्त्रजपः इष्टदेव ध्यानं व्रतं तीर्थस्नानादिः नत्समाचरणीयम । तदीयैस्त्रिभिरपि उपर्युक्तप्रकारं नाममन्त्रजपव्रतोपवासादि यथाशक्त्यमवश्यं कर्तव्यम ।

महामहोपाध्यायः पंडित शिवदत्त शास्त्री, लाहौर
महामहोपाध्यायः गिरिधरशर्मा चतुर्वेदी लाहौर
महामहोपाध्यायः अन्नदाचरणतर्कचूड़ामणिः महामण्डलः काशी
स्मृतिसुधाकर शशिभूषणस्मृतितीर्थः, महामण्डलः, काशी
महोपदेशक पण्डित यदुकुलभूषण शास्त्री, मुलतान
साहित्यनिधि वेदरत्न गङ्गाविष्णु मिश्रः, पटना
महामहोपदेशक श्रवणलाल शर्मा, झालरापाटन

भावार्थ

मलकाना राजपूतों के प्रायश्चित्त की व्यवस्था

वर्णाश्रम धर्म पर अवलम्बन रखने वाली हिन्दु जाति में आर्यत्व का प्रधान लक्षण रजोवीर्य की शुद्धि ही मानी जाती है, परन्तु इस रजोवीर्य की शुद्धि को सनातन धर्म का विशेष सिद्धान्त मानते हुए भी अनाचारादि में फंसी हुई हिन्दु जाति उन सब दोषों को प्रायश्चित्त संस्कार के द्वारा दूर करके आचार भ्रष्टों को शुद्ध करके अपनी समाज में शामिल कर सकती है अनुसंधान से मालूम हुआ है कि जो लोग मलकाना क्षत्रिय के नाम से प्रसिद्ध हैं वह अभी तक रोटी-बेटी का सम्बन्ध मुसलमानों के साथ नहीं करते बल्कि ये कट्टर हिन्दू कहलाने के योग्य हैं न कि मुसलमान। हां, कुछ वर्षों से क्षत्रिय जाति से सम्बन्ध टूट जाने के कारण इन लोगों में कई एक कुरीतियें आगई हैं। उन कुरीतियों को दूर करने के लिये विद्वान् ब्राह्मणों की यह सभा जिस प्रायश्चित्त व्यवस्था को निर्धारित करती है सब का कर्तव्य है कि उस व्यवस्था के अनुसार उनको अपनी २ जाति बिरादरी में मिला लेवें।

भाई बन्धुओं के मिला लेने से और ब्राह्मण की कृपा हो जाने से बड़े से बड़े महापातकी भी शुद्ध होजाते हैं

(अत्रि स्मृति २७४)

जाति से त्यागा हुआ पुरुष जो पाप करता है वह पाप

जाति के सब लोगों को भुगतना पड़ता है ऐसा मनुजी महाराज ने कहा है (स्कन्ध पुराण ३।१८)

जिसमें तीन या चार वेद के ज्ञाता ब्राह्मण हों या १८ धर्म शास्त्र के जानने वाले विद्वान् हों तो वह सभा परिषत् कहाती है (पराशर स्मृति ८-२०

मलकाना राजपूतों की शुद्धि के सम्बन्ध में इस व्यवस्था का पुनः संस्कार समिति द्वारा समर्थन ।

पहिले मुण्डन कराना चाहिये फिरपञ्चगव्य खिला कर यथाशक्ति उपवास कराना चाहिये । उपवास के दिन राम, कृष्ण या शिव आदि नामों का जाप करना चाहिये ।

यदि उपवास न रख सके तो फलाहार कराना चाहिये, यदि हो सके तो सब. अन्यथा हर घर मे एक व्यक्ति को गंगा स्नान करना और वहीं मुण्डन कराके गंगा जल लाना चाहिये । यदि गंगा दूर हो तट यमुना तट पर ही अनुष्ठान करना चाहिये ।लाये हुए गंगा अथवा यमुना जल मे सब घर वालों को मार्जन कराना चाहिये और उसी जल से सब चीजों को पवित्र करना चाहिये । इसके बाद शुद्धि की इच्छा रखने वाले धर्माचार्य के पास जायँ वहां विद्वान् लोग स्वस्ति वाचन, पुण्याहव अचन, गायत्री जप तथा संकल्प कराके अग्निहोत्र करें. फिर शुद्धि की इच्छा रखने वाले लोग धर्माचार्य के चरणों का स्पर्श करके मन्त्र का उपदेश ग्रहण करें । और यदि अधिकारी हों तो यज्ञोपवीत को भी ग्रहण करें ।

जप, होम, गंगास्नान और हरि के नाम की बड़ी भारी महिमा है जैसा कि कहा है—

जिनके पाप प्रकट न हों उनको जपों और होमों से शुद्ध करे (मनुः अ० ११, श्लोक २२६) गायत्री वेदों की माता और गंगा लोकों की माता है इस लिये इन दोनों के द्वारा सब पापों का नाश हो जाता है। जो लोग वेद मार्ग से बाहिर हैं और तरह तरह के पाप करते हैं और दिल के काले हैं उन सब की हरि के नाम को उच्चारण करने से शुद्धि हो जाती है। (नारद पुराण अध्याय ६)

इन शास्त्रीय प्रमाणों के अनुसार प्रायश्चित्त करा कर भोजन और विवाहादि के द्वारा अपनी जाति में मिला लिया जावे जाति में प्रवेश करने वालों का कर्तव्य है कि उपदेशों, मंत्रों और जपादि का अनुष्ठान करते हुए इष्ट देवता का ध्यान व्रत और तीर्थस्नानादि करते रहें इस प्रकार जहां तक हो सके नाम, व्रत, मन्त्र और जपादि पर अवश्य आचरण किया जावे।

समर्थन कर्ता:—
(देखो संस्कृत भाग)

श्रीभारतधर्ममहामण्डलव्यवस्था।

विद्यन्ते परमापद्ग्रस्ताः सम्प्रति देशकालपात्रद्य इति सिद्धान्तितं सर्ववादिसम्मतञ्च। न चात्रास्ति विज्ञानस्य शुक्रे वो किमपि प्रयोजनम्। वर्तमानकालीना नानोपद्रव-

संकुला राजनैतिकपरिस्थितयोऽपि परिणामन्स्यनिश्चयतामा-
वहन्ति च प्रतिक्षणम्। तासामेव दुष्प्रभावतो वर्णाश्रमसदा
चारा अनेकैरुपद्रवैराक्रान्ता भवन्ति, भविष्यन्ति च। अतः
राजनैतिकपरिस्थितीनामापद्धर्माणां च निम्नलिखितप्रकारा
अत्यावश्यकीयप्रश्नाः सुविचार्य मीमांस्यन्ते।

स्पृश्यास्पृश्यसम्बन्धिनः प्रश्ना वर्त्तमानदेशकालपात्रेषु
प्रायशः सततमेव प्रत्यवतिष्ठन्ते। स्पृश्यास्पृश्यव्यवस्थेयं वेद-
शास्त्रानुमोदितेति निश्चीयते।

आपद्धर्मविचारेण भावशुद्धिमूलकमनुष्ठितं पापकर्मापि
कर्त्तव्यरूपेण परिणमति। यथा—महाभारते विश्वामित्रस्य
चाण्डालवेश्मनि श्वमांसग्रहणम्, छान्दोग्योपनिषदि प्रथमा
ध्यायस्य दशमखण्डे च दुर्भिक्षपीडितस्यैकस्य महर्षेश्चा-
ण्डालोच्छिष्ट चणकग्रहणमिति। अत्र बहूनि प्रमाणानि वेदेषु
धर्मशास्त्रेषु चोपलभ्यन्ते, यथाऽऽह भगवान् मनुः—

"जीवितात्ययमापन्नो योऽन्नमत्ति यतस्ततः।
आकाशमिव पङ्केन न स पापेन लिप्यते॥
श्वमांसमिच्छन्नार्त्तोऽत्तुं धर्माधर्मविचक्षणः।
प्राणानां परीक्षार्थं वामदेवो न लिप्तवान्॥
क्षुधार्त्तश्चात्तुमभ्यागाद् विश्वामित्रः श्वजाघनीम्।
चाण्डालहस्तादादाय धर्माधर्मविचक्षणः॥" इत्यादि।

देशकालपात्रानुसारतः सति कारणबाहुल्ये स्पृश्यास्पृश्य-
सम्बन्धिसदाचारनिरूपणमवश्यमेव करणीयमित्यत्र धर्मशा-

स्त्रकृद्भिर्विस्पष्टमनुज्ञातमस्ति। यथा बृहस्पतिर्निर्दिशति—

"तीर्थे विवाहे यात्रायां संग्रामे देशविप्लवे।
नगरग्रामदाहे च स्पृष्टास्पृष्टिर्न दुष्यति॥"

तथा चोक्तमत्रिस्मृतौ—

"देवयात्राविवाहेषु यज्ञप्रकरणेषु च।
उत्सवेषु च सर्वेषु स्पृष्टास्पृष्टिर्न विद्यते॥
प्रकाररोधे विषमप्रदेशे सेनानिवेशे भवनस्य दाहे।
आरब्धयज्ञेषु महोत्सवेषु तथैव दोषा न विचारणीया॥

अपि च मिताक्षरायाम्—

"आपद्गतः सम्प्रगृह्णन् भुञ्जानो वा यतस्ततः।
न लिप्यतैनसा विप्रो ज्वलनार्कसमो हि सः॥"

तथा च पराशरस्मृतौ—

"आपत्काले तु विप्रेण भुक्तं शूद्रगृहे यदि।
मनस्तापेन शुध्येत्तु द्रुपदां वा शतं जपेत्॥" इत्यादि

तस्मादापद्धर्मस्य राजनैतिकपरिस्थितीनां च विचारतः साम्प्रतं हि यदि कश्चित् सनातनधर्मावलम्बी समितिसम्मेलनोत्सवादिषु, आहोस्वित् युद्धकार्येषु, देशविप्लवादिषु वा निम्नश्रेणीसम्भूतवर्णैराचारभ्रष्टैरन्त्यजविधर्मिभिश्च सार्धं तत्र तत्र कार्यसम्पादनात् स्पृश्यास्पृश्यदोषदूषितहेतवे तदा कथमपि प्रायश्चित्तार्हो न भविष्यति।

शान्तिप्रियेषु उदारेषु हिंदुवर्गेषु निर्यातनमसकृत् समजनि, भाविन्यपि समये तद्भवितुमर्हति। दाक्षिणात्ये मो-

प्रानाम्नी यवनजातिः राजकीयविप्लवे कांश्चित् हिंदुवर्गान सबलं स्वधर्मच्युतिमनयत्। अत्रानेकधार्मिकविदुषामनुमतिं प्राप्य ते यथोक्तं प्रायश्चित्तं कारयित्वा पुनःस्वपदे स्थापिताः। ईदृश्यामापदि अवलम्बनीया व्यवस्थेयं प्रकाश्यते। आपस्तम्बे लिखितं यथा—

बलाद्दासीकृता ये तु म्लेच्छचाण्डालदस्युभिः ।
अशुभं कारिताः कर्म गवादिप्राणहिंसनम् ॥
उच्छिष्टमार्जनं चैव तथोच्छिष्टस्य भोजनम् ।
खरोष्ट्रविड्वराहाणामामिषस्य च भक्षणम् ॥
तत्स्त्रीणां च तथा संगस्ताभिश्च सहभोजनम् ।
मासोषिते द्विजातौ तु प्राजापत्यं विशोधनम् ॥
चान्द्रायणं त्वाहिताग्नेः पराकस्त्वथवा भवेत् ।
चान्द्रायणं पराकं वा चरेत्संवत्सरोषितः ॥
संवत्सरोषितः शूद्रः कृच्छ्रपादेन शुध्यति ।
उर्ध्वं संवत्सरात् कल्प्यं प्रायश्चित्तं द्विजोत्तमैः ॥ इत्यादि

बलात् छद्मना वा म्लेच्छादिभिः स्वधर्मतः प्रच्युतिं नीता आर्या आपस्तम्बोक्तं प्रायश्चित्तं विधाय पुनरार्य्येषु व्यवहार्य्या भवितुमर्हन्ति।

भारतवर्षे सनातनधर्मावलम्बिन्यो निम्नश्रेणिकाः कियत्य एव जातयः सन्ति. तासां काचिदपि व्यवस्था नाद्यु पलभ्यते समाजस्यानुदारतया विविधैर्विधर्मिभिर्बहुवारं कृतेऽप्यत्याचारे तादृशीषु जातिषु यदि पूर्ववंशानुक्रमेणोपलभ्यते सदाचारप्रमाणं तदा ता व्यवस्थापनीया उन्नतिमार्गेषु। तथा च

यद्यं ताः पूर्ववंशानुक्रमेण सदाचारिण्य उपलभ्यन्ते, तदैतास्मां जलग्रहणमपि तत्तद्देशीयशास्त्यनुसारतो भवितुमर्हतीति।

[महामण्डलस्य व्यवस्थेयं तदीयवार्षिककार्यविवरण पुस्तिकायां प्रकाशिता, तत एव मया यथाक्रमं संगृह्यात्र प्रकटीकृता—सम्पादकः।]

भारत धर्म महा मण्डल की शुद्धि व्यवस्था

भावार्थ—सभी को मालूम ही है कि आज कल देश काल और पात्र आदि के विचार से घोर विपत्तियों में हम लोग पड़े हुये हैं इस विषय में किसी साहस के नियम या दार्शनिक युक्ति देने की आवश्यकता नहीं। वर्तमान समय ऐसा है कि देश व्यापि राजनैतिक समस्यायें भी नाना प्रकार के उपद्रवों से आच्छादित होने के कारण क्षण क्षण में अनिश्चित परिवर्तन को स्वीकार कर रही हैं, इनके अभाव से निश्चित है कि वर्णाश्रम और उच्चाचार, व्यवहार आदि में भयंकर उथल पुथल होती रही और भविष्य में होगी। इसलिये राजनैतिक परिस्थितियों और आपत्काल के धर्मों के सम्बन्ध में नीचे लिखे आवश्यक प्रश्नों पर विचार करना अत्यन्त आवश्यक है।

छुआ छूत सम्बन्धी प्रश्न तो आजकल देश काल और पात्र में उपस्थित ही हैं, जो कि वेद शास्त्रों की अनुमोदित की हुई व्यवस्था के आधार पर है।

आपद्धर्म के विचार से भाव शुद्ध होते हुए पाप कर्म

का कर लेना भी कर्तव्यकर्म कहा जा सकता है जैसा कि विश्वामित्र ने चाण्डाल के घर से कुत्ते का मांस ग्रहणकर लिया था। (महाभारत) अकाल से पीडित किसी ऋषि ने चाण्डाल के झूंठे चने चबाये थे (छान्दोग्योपनिषत् अ० १ खंड १०) इस विषय में वेदों और शास्त्रों में और भी बहुत से प्रमाण कहे हुए हैं जैसा कि मनु ने कहा है कि—

श्लोकार्थ—जो पुरुष जीवन के नष्ट होने के भय से इधर उधर का अन्न खा लेता है वह ऐसा ही निष्पाप रहता है जैसा कि आकाश कीचड़ से। देखा धर्माधर्म को जानने वाले वामदेव ने प्राण रक्षा के लिये कुत्ते का मांस को खाना भी स्वीकार कर लिया था। विश्वामित्र ने धर्मअधर्म के तत्व को समझते हुए भी चाण्डाल के हाथ से कुत्ते की जांघ लेकर अपने प्राणों की रक्षा की थी, इत्यादि बहुत से प्रमाण हैं कि देश. काल और पात्र के अनुसार छुआ छूत की कुछ न कुछ व्यवस्था अवश्य हो ही जानी चाहिये और धर्म शास्त्रों में तो आचार्यों ने इस का अनुमोदन किया है भी किया हुआ है जैसा कि आज्ञा है कि—

श्लोकार्थ—तीर्थ, विवाह, यात्रा. संग्राम. देश विप्लव (राजनैतिक क्रान्ति) और नगर ग्रामादि के दाह के समय छूआ छूत का कोई विचार न करना चाहिये वल्कि उस उस समय कोई इस बखेड़े में पड़े तो उसको दोष लगेगा। (बृहस्पति स्मृति)

देव यात्रा, विवाह, यज्ञप्रकरण और सब प्रकार के उत्सवों में छूआ छूत का विचार नहीं करना चाहिये। अनार्य देश, संग्राम, अग्निकाण्ड आदि में भी छूआ छूत का विचार ठीक नहीं है। (अत्रि स्मृति)

आपत्ति में पड़ा विद्वान् यदि इधर उधर से कुछ ग्रहण करले अथवा खा ले तो कोई दोष नहीं, क्योंकि वह तो अग्नि या सूर्य के समान निर्लेप है। (मिताक्षरा)

यदि विद्वान् विपत्ति में फंस कर शूद्र के घर से अन्न लेकर खाले तो साधारण पश्चात्ताप से शुद्ध हो जाता है अथवा उसे द्रुपदों का १००० बार जप करना चाहिये। (पाराशर)

इसलिये यदि कोई सनातनधर्मावलम्बी किसी राजनैतिक परिस्थिति या आपत्ति के समय उत्सव, संग्राम और देश विप्लव आदि के उपस्थित होने पर नीच जाति के लोगों तथा आचार भ्रष्टों और अनार्य लोगों के साथ मिल मिला कर जहां तहां काम करे और उनके साथ छूआ छूत न करें तो किसी प्रकार से वह दोषी और प्रायश्चित के योग्य नहीं कहे जा सकते।

शान्तिप्रिय उदार हिन्दू जाति में 'निकालने' का रोग अचानक आगया और सम्भव है कि वह बीमारी कुछ काल भविष्य में भी बनी रहे। दक्षिण भारत के मोपला नामक मुसलमानों ने राज्यविप्लव के समय सैकड़ों हिन्दुओं को

बल पूर्वक मुसलमान बना कर धर्म भ्रष्ट कर दिया था। जिन को अनेकों विद्वानों की अनुमति लेकर यथोचित प्रायश्चित्त के बाद उनकी अपनी अपनी बिरादरी में मिला दिया गया।

इस लिये इस प्रकार के आपत्ति काल आने पर क्या करना चाहिये इस बात की व्यवस्था दी जाती है कि—

श्लोकार्थ—जो लोग म्लेच्छ चाण्डाल या दस्युआदि के द्वारा जबरदस्ती गुलाम बनाये गये हैं और गौ आदि जीवों का वध करते रहे हैं। अथवा मल का झूंटा खाते पीते और गधा ऊंट और सुअर आदि के मांस का सेवन करते रहे हैं मुसलमान ईसाई आदि म्लेच्छ जाति की स्त्रियों के साथ सहवास और भोजन करते रहे हैं-वह लोग मास पर्यन्त द्विजाति में रह कर यदि प्राजापत्य व्रत का अनुष्ठान करें तो शुद्ध हो जायेंगे, अथवा चान्द्रायण या पराक व्रत को वर्ष भर यज्ञ करते हुये आचरण करें। यदि एक वर्ष से अधिक समय पतित हुए होगया हो तो कृच्छ्र पाद से शुद्ध होता है। वर्ष से अधिक समय पतित हुये होगया हो तो बड़े २ विद्वान ब्राह्मणों को उसकी शुद्धि के लिये स्वयं उपाय सोच लेना चाहिये। (आपस्तम्ब। म्लेच्छादिकों के छल से या बल से जो लोग अपना धर्म त्याग कर पतित हो गये हैं उनको आपस्तम्ब की प्रायश्चित्त विधि के अनुसार शुद्ध करके फिर से आर्य जाति में सम्मिलित कर लेना चाहिये और उनके साथ सब आर्यों के व्यवहार प्रचलित करने चाहिये।

भारतवर्ष में बहुत सी ऐसी नीच जातियां हैं जो सनातन धर्म के मानने वाली हैं परन्तु उनकी अभी तक कोई समुचित व्यवस्था नहीं हो सकी है। समाज के संकोच के कारण विविध विधर्मियों के अनेक अत्याचारों के होने पर भी यदि उनमें वंशानुक्रमिक सदाचार पाया जावे तो अवश्यमेव उन सब को उन्नति के मार्ग पर ले जाने का पुरुषार्थ करना चाहिये और उन के हाथ का जलग्रहणादि उस २ देश की रीति के अनुसार स्वीकार कर लेना चाहिये।

(यह व्यवस्था भारतधर्म महामण्डल की वार्षिक रिपोर्ट से उद्धृत की गई है)

बंगीय ब्राह्मण सभा व्यवस्था

"गतजुलाईमासस्य (१९२८) पञ्चविंशतितिथौ कलिकातास्थवङ्गीयब्राह्मणसभास्थाने वङ्गदेशीयब्राह्मणपण्डितानामेका महती सभा समभूत्। तत्र निम्नाङ्कितप्रस्तावाः स्वीकृताः—

(१) यदि काचन हिन्दू स्त्री विधर्मिभिर्म्लेच्छैः प्रसह्य पीडयित्वा सतीत्वनाशपूर्वकं धर्मान्तरं ग्राहिता चेत्तदा सा शास्त्रीयप्रायश्चित्तं कारयित्वा समाजे प्रवेशयितव्या। तत्संशोधने भक्तिपूर्वकं गङ्गास्नानमपि पर्य्याप्तमवगन्तव्यम्।

(२) भग्नं शालिग्रामशिलाचक्रं नदीप्रवाहे विसर्जयेत् तत्स्थाने च नूतनं स्थापयेत्। यदि चक्रं भग्नं न भवेत् तदा-

ऽनावश्यकं तद् विसर्जनम्। यदि प्रतिष्ठिता देवमूर्तिर्भग्ना, तदा पूर्वोक्तप्रकारेण तां विसर्ज्य शास्त्रोक्तरीत्या नवीना स्थापनीया। सम्पन्नहिन्दुभिः प्रायश्चित्तमवश्यं विधेयम।

(३) केवलं 'कलमा' पाठो न दोषाय प्रभवति। यदि कश्चन हिन्दुं कोऽपि विधर्मी बलात् स्वकीयमन्नं भोजयेत्' तदाऽसौ प्रायश्चित्तमनुष्ठाय निजजातौ प्रवेष्टुं शक्नोति।

(४) उपर्युक्तप्रस्तावविषये यदि कश्चित् शास्त्रीयामाज्ञां गृहीतुमिच्छेत्, तदा सा विना मूल्यं वङ्गीयब्राह्मणसभातो लब्धुं शक्यते।

काशिस्थ पण्डित—व्यवस्था

वाराणस्यां बङ्गालीटोलास्थाने श्रीमत्या राज्ञ्या भवान्या संस्थापिते गोपालमन्दिरे गतश्रावणैकादश्यां काशीस्थपण्डितानामेका महती सभा समभूत्। अत्र महामहोपाध्याय पण्डितलक्ष्मणशास्त्रिणः, महामहोपाध्याय पण्डितवामाचरणभट्टाचार्याः, श्रीयुतपण्डितप्रवरपञ्चाननतर्करत्नमहाशयप्रभृतयः समुपस्थिता आसन्। तत्र बलान्म्लेच्छीकृतानां हिन्दूनां, बलान्म्लेच्छै र्दूषितानां नारीणां च शास्त्रीयप्रायश्चित्तानुष्ठानपूर्वकं जातिप्रवेशः समुचित इतिविषयकः प्रस्तावः सर्वसम्मत्या स्वीकृतः।" समाचारोऽयं द्वितीयाब्दसूर्योदयषष्ठाङ्के प्रकाशितः।

बंगाल ब्राह्मण सभा की व्यवस्था

२५ जुलाई सन् १९२६ ई० को कलकत्ता में बंगाल ब्राह्मण सभा के स्थान पर बङ्गाल के बड़े २ विद्वान् ब्राह्मण

पंडितों की एक बड़ी भारी सभा हुई जिसमें कि निम्न लिखित प्रस्ताव स्वीकृत हुये।

१—यदि कोई हिन्दू स्त्री विधर्मी मुसलमानों से जबरदस्ती बहकाई गई हो अथवा उसका सतीत्व नाश करके उसे मुसलमान बना लिया गया हो तो वह स्त्री शास्त्र के प्रायश्चित करा कर समाज (बिरादरी) में सम्मिलित की जानी चाहिये।

२—टूटे हुये शालिगराम आदि को नदी के प्रवाह में विसर्जन कर देना चाहिये और उसकी जगह नया स्थापित करना चाहिये यदि न: टूटा हो तो विसर्जन कर देना चाहिये और उसके स्थान पर नई मूर्ति स्थापित करनी चाहिये। परन्तु सम्पन्न हिन्दुओं को प्रायश्चित अवश्य करना चाहिये।

३—केवल कलमा पढ़ने से कोई दोष नहीं लगता। यदि किसी हिंदू को कोई मुसलमान या अन्य विधर्मी अपना भोजन खिला दे तो उसको प्रायश्चित करा कर अपनी जाति में शामिल कर लेना चाहिये।

४– उपरोक्त प्रस्तावों के सम्बन्ध में यदि कोई शास्त्रीय व्यवस्था लेना चाहें तो विना किसी मूल्य के बंगीय ब्राह्मण सभा से प्राप्त की जा सकती है।

भाषार्थ

काशी के पण्डितों की व्यवस्था

बनारस—बंगाली टोला के गोपाल मन्दिर में श्रावण

कृष्ण एकादशी के दिन काशी के बड़े २ विद्वानों की एक भारी सभा हुई जिस में महामहोपाध्याय पं० वामाचरण भट्टाचार्य, महामहोपाध्याय पं० लक्ष्मण शास्त्री और श्रीयुत पण्डित प्रवर पञ्चानन तर्करत्न महाशय आदि २ विद्वान उपस्थित थे, सभा में सब विद्वानों की अनुमति से यह प्रस्ताव स्वीकृत हुआ कि--

'जो हिन्दू जबरदस्ती मुसलमान बनाये गये हैं अथवा म्लेच्छ स्त्रियों के सहवास से दूषित हो गये हैं उन सबको शास्त्र की विधि अनुसार प्रायश्चित करा कर अपनी अपनी जाति बिरादरी में मिला लेना चाहिये।''

सूर्योदय २ वर्ष-६ अंक।

लवपुरसनातनधर्मसभाव्यवस्था ।

युक्तप्रान्तीयानां राजपुत्र-गूजर जाटप्रभृतीनां विषये निश्चितमिदं यत् बलात्ते हिंदूजातितः पृथक्कृताः, क्रियालोपेन स्वजात्या सार्द्धं येषां व्यवहारो निरुद्धो विद्यते ये च स्वीयैराचारै विचारैश्च हिंदुवो विद्यन्ते, ये च स्वकीयकुलपरम्परातो दुर्गा-गङ्गा देवविग्रहादौ ब्राह्मणादिषु च श्रद्धा भक्तिं कुर्वन्ति, येषां च स्वहिंदुसमाजे समागन्तुं बलीयसी वासना वर्त्तते, तेषां प्रायश्चित्तं काश्मीर महाराजस्वर्गीयश्रीरणवीरसिंहकारितप्रायश्चित्तमहानिबन्धानुकूल्यं देशकालपात्रानुसारेण लवपुरस्थश्रीसनातनधर्मसभाप्रेरणाया निम्नलिखितप्रकारं निश्चीयते—

अतिवृद्धान्, रोगिणः, बालकांश्च विहायान्ये सर्वे शिखां विना मुण्डनं कुर्युः। स्त्रिभिस्तु स्वशिरोरुहा अङ्गुलिद्वयपरिमिताः छेदयितव्याः। अभावे किञ्चिद्दानं देयम्। तस्मिन् दिवसे पञ्चगव्यं प्राश्यम्, भोजनमेकवारमेव विधेयम्। प्रत्येकं स्त्रीपुरुषैः शिव, राम, नामादीनि जपनीयानि।

द्वितीय दिवसे गङ्गाजलमिश्रितेन जलेन स्नानं कृत्वा निराहारव्रतमाचरणीयम्। असमर्थेन फलाहारः कर्त्तव्यः। अत्राऽपि दिने शिव,राम,नामादीनां जपः कर्त्तव्यः। गायत्रीजपश्च ब्राह्मणद्वारा सम्पादयितव्यः। रात्रौ हरिगुणगानपूर्वकं जागरणं विधेयम्।

प्रतिगृहमेकेनापि पुरुषेण गङ्गास्नानमवश्यं कर्त्तव्यम्। समानीतेन गङ्गाजलेन सर्वैर्गृहनिवासिभिर्मार्जनमनुष्ठेयम् गङ्गाजलेन च सर्वैराचमनमपि कर्त्तव्यम्। गङ्गां गन्तुमसमर्थेन यमुनायामेव स्नानादिकं विधेयम्।

तदनन्तरं प्रतिगृहं दशसहस्रगायत्रीजपो ब्राह्मणद्वारा कारयितव्यः। जपदक्षिणा, भोजनदक्षिणा च ब्राह्मणेभ्यो देया। यथाशक्ति गोदानं तन्मूल्यदानं वा कर्त्तव्यम्।

आगामिन्यां दशम्यामेकवारं भोजनं कृत्वा एकादश्यामुपवासः कर्तव्यः, रात्रौ हरिभजनपूर्वकं जागरणमनुष्ठेयम् अनन्तरमेते हिंदवो देवमंदिरेषु देवदर्शनं कर्तुं, चरणामृतमादातुं, नाममन्त्रादीनां जपं विधातुं, दीक्षां गृहीतुं, कण्ठीमालादीनि धारयितुञ्चाधिकारवंतः संतो मद्यमांसादिमादक-

निषिद्धवस्तूनां व्यापारं परित्यजन्तः स्वजात्या समाजेन च गृहीतुं शक्यंते ।

महामहोपाध्यायःपण्डितशिवदत्त शास्त्री,
महामहोपाध्यायःपण्डितगिरिधरशर्मा व्याकरणाचार्यः,
दर्शनाचार्यःपण्डितनृसिंहदेवशास्त्री,
वेदान्तरत्नपण्डितगणेशदत्तशास्त्री,
विद्यानिधिपण्डितहरिहरस्वरूपशास्त्री,
विद्याभूषणपण्डितहीरानन्दशास्त्री,
पण्डितकाशीनाथशर्मा.
पण्डितजगदीशशास्त्री,
पण्डितरामचन्द्रशास्त्री,
महामहोपदेशकःपण्डितगौरीशंकरशर्मा
पण्डितराधेशशर्मा त्रिपाठी.
पण्डितरघुनन्दनशर्मा

भाषार्थ

लाहौर सनातन धर्म सभा की शुद्धि व्यवस्था

संयुक्त प्रान्त के राजपूत. गूजर और जाट आदिकों के विषय में यह निश्चित है कि ये लोग बल पूर्वक हिन्दू जाति से पृथक् किये गये हैं और क्रिया लोप होने के कारण उनकी अपनी प्राचीन जाति के साथ उनका व्यवहार बन्द सा हुआ हुआ है परन्तु इतना होने पर भी वे लोग अपने आचार विचार से पूरे हिन्दू प्रतीत होते हैं और अपनी प्राचीन परम्परा से दुर्गा पूजा. गंगास्नान, और

देवी-देवताओं तथा ब्राह्मणादि में श्रद्धा-विश्वासपूर्वक पूज्य भाव रखते हैं। उनके हृदय में यह प्रबल इच्छा प्रकट हो रही है कि उनको उनकी प्राचीन बिरादरी में शामिल कर लिया जावे। इसलिये स्वर्गीय, श्री० महाराजा रणवीर सिंह जी काश्मीराधिपति द्वारा प्रकाशित "रणवीर प्रायश्चित्तप्रकाश" के अनुसार देश, काल और पात्र को देखते हुये उन राजपूत आदि जातियों का लाहौर सनातन धर्म सभा की प्रेरणा से निम्नलिखित प्रकार से प्रायश्चित्त करने का निश्चय किया जाता है:—

बहुत वृद्धों, रोगियों और बालकों को छोड़कर अन्य सब पुरुषों का शिखा छोड़ सारे सिर का मुण्डन कराया जावे, स्त्रियों के सिर के बाल दो अंगुल पर्यन्त काटे जावें या उनसे कुछ दान कराया जावे। शुद्धि के दिन पंचगव्य का पान करना आवश्यक है। भोजन दिन में एकबार होना चाहिये तथा प्रत्येक शुद्धि की इच्छा रखने वाले स्त्री-पुरुष को शिव, राम आदि के नाम का जप करते रहना चाहिये।

दूसरे दिन जल में गंगाजल डाल कर स्नान करना चाहिये और दिनभर निराहार व्रत रक्खे, यदि दिनभर भूखा न रह सके तो कुछ फलाहार करना चाहिये और दिनभर शिव, राम आदि पवित्र नामों का जप करना चाहिये तथा ब्राह्मण से गायत्री का जप कराना चाहिये। रात्रिभर हरि के गुण गान करते हुये जागते रहना चाहिये।

घर भर में क्रम से एक एक व्यक्ति को गङ्गास्नान अवश्य करना चाहिये। शेष लोगों को गंगाजल से मार्जन करलेना आवश्यक है। साथ ही गंगाजल से सब लोगों का आचमन भी करना चाहिये। यदि गंगा जाना कठिन हो तो यमुना में ही स्नान आदि करलेना चाहिये।

इस के बाद हर घर में दस दस हजार गायत्री का जप ब्राह्मण से कराना चाहिये और ब्राह्मणों को जप की तथा भोजन की दक्षिणा भी देनी चाहिये। यदि शक्ति हो तो गौदान भी करे या उतना मूल्य दान करे।

आने वाली दशमी को एकबार भोजन किया जावे और एकादशी को उपवास रखना चाहिये। इसके बाद वे सब हिंदू देवमंदिरों में देवदर्शन करने, चरणामृत लेने, नाम या मंत्र जप करने, दीक्षा ग्रहण करने तथा कण्ठी माला आदि ग्रहण करने के अधिकारी होजाते हैं। इसके साथ ही यदि ये लोग मद्यमांसादि निषिद्ध वस्तुओं का त्याग करदें तो अपनी अपनी जाति बिरादरी में भी मिलाये जा सकते हैं।

व्यवस्थापक—(देखो संस्कृत भाग)

श्री पं० गोविन्दाचार्य वेदान्ततीर्थ-व्याकरणाचार्य की व्यवस्था

कुछ समय से क्षत्रिय आदि वर्ण से बलात् अथवा अज्ञान से धर्मच्युत किये हुये मलकाना ठाकुरों के पुनः संस्कार

विषय में जो आन्दोलन हो रहा है, वह शास्त्र सम्मत है इस विषय में मैं अधिक प्रमाण न लिखते हुए सम्प्रति कतिपय प्रमाणों से पूर्वोक्त जातियों को स्वजाति प्रवेश में अपनी सम्मति प्रकट करता हूं।

याज्ञवल्क्य प्रायश्चित्ताध्याय २२६ श्लोक.
"प्रायश्चित्तैरपैत्येनो यदज्ञानकृतं भवेत्॥

मनु० ११. ४५-४६०

अकामतः कृते पापे प्रायश्चित्तं विदुर्बुधाः।
कामकार कृतेऽप्याहुरेके श्रुतिनिदर्शनात्॥
अकामतः कृतं पापं वेदाभ्यासेन शुद्ध्यति।
कामतस्तु कृतं मोहात्प्रायश्चित्तैः पृथक् विधैः॥

बलात् धर्मच्युत किये हुओं के प्रायश्चित्त विषय में आपस्तम्भ महर्षि भी लिखते हैं:—

बलाद्दासीकृता ये तु म्लेच्छचाण्डालदस्युभिः।
अशुभं कारितं कर्म गवादि प्राणिहिंसनम्॥
उच्छिष्ट मार्जनं चैव तथोच्छिष्टस्य भोजनम्।
खरोष्ट्र विड्वराहाणामामिषस्य च भक्षणम॥
तत्स्त्रीणां च तथा सङ्गस्ताभिश्च सहभोजनम।

इत्यादि प्रमाणों से आहिताग्नियों को भी चान्द्रायण से शुद्धि लिखी गई है।

यह प्रायश्चित्त की व्यवस्था भी—

देशः कालं वयः शक्तिं पापञ्चावेक्ष्य यत्नतः।

प्रायश्चित्तं प्रकल्पंस्या यत्रोक्ता न निष्कृतिः ॥

याज्ञवल्क्य प्रायश्चित्तः ९३

इस वचनानुसार 'गंगादि तीर्थस्नान भगवच्चरित्र श्रवणादिक ही वर्त्तमान समय के लिये प्रायश्चित्त हैं। एतादृश प्रायश्चित्त ही से किरात. हूणादि की शुद्धि होना भागवत सम्प्रदाय सिद्ध है। धर्मशास्त्र की व्यवस्थानुसार सब धार्मिक सज्जनों का कर्तव्य है कि स्वयं शरणागत आगतों को शास्त्रोक्त विधि से प्रायश्चित्त करके स्वजाति में मिला लें। इस बात को याज्ञवल्क्य का व्याख्याता विज्ञानेश्वर महापातक प्रायश्चित्त के अनन्तर पतितों के त्याग विषय में लिखता है किः—

अयं च त्यागः बन्धुभिः प्रेर्यमाणोऽपि प्रायश्चित्तं न करोति तदा द्रष्टव्यः—

इस वचन से स्पष्ट कर दिया है कि जब प्रायश्चित्ती बन्धुवर्ग बार २ समझाने पर भी स्वयम् प्रायश्चित्त करने के लिए तय्यार न हों उन्हीं के लिये त्याग है।

ह० पं० गोविन्दाचार्य, व्याकरणाचार्य-वेदान्ततीर्थ

कश्मीर के पण्डितों की व्यवस्था

सनातनधर्मसभा काश्मीर (श्रीनगर) में उपस्थित धर्मानुरागियों ने अपने प्रस्ताव संख्या ५ में जो कुछ निश्चय किया वह निम्न लिखित है।

प्रस्ताव संख्या ५—सर्व सम्मतिसे निश्चय हुआ कि "हमारी सभा में आदि से शुद्धि का कार्य आरम्भ है। भविष्य में भी शुद्धि का सिद्धान्त पुष्ट किया जावे। जो लोग आपत्ति काल में इस तरह से पतित होकर दूसरी जातियों में सम्मलित हो गये हैं उनको सनातन धर्म के गुणों से चैतन्य करके जब वह सम्मत हो जांय तब प्रचलित नियमानुसार शुद्ध करके वापिस लिया जावे और बिरादरी में शामिल किया जावे।

हस्ताक्षर—पं० जगधर, पं० कृष्ठराज दान गरू पं० जनार्दन साहब टाग, पं० अमरनाथ काक, पं० माधोराम, पं० जिया लाल, पं० सिवाकोल, पं० दम्मा काल, पं० दीनानाथ कारको, पं० राजनाथ साधू, पं० नन्दराम मूट पं० ताराचन्द तिक्र इत्यादि।

हिन्दूमहासभा का निर्णय

काशी मे २२-८-२३ को पतित पावनी गंगा के किनारे हिन्दू महासभा का बृहद् अधिवेशन भारतभूषण, माननीय पं० मदनमोहन मालवीय के सभापतित्व में हुआ जिस में भारत के प्रत्येक प्रान्त के बड़े बड़े विद्वान्, पण्डित, राजे महाराजे सम्मिलित थे और सब ने सर्वसम्मति से यह प्रस्ताव पास किया कि "इस सभा की सम्मति में उन सब मलकानों को जो कुछ दिनों से नवमुस्लिम

कहलाने लगे थे चाहे वे राजपूत, ब्राह्मण, वैश्य, जाट, गूजर वा अन्य किसीजाति के हों, जो मुख्य मुख्य हिंदू आचार-व्यवहार का पालन करते हैं और जिनका विवाह सम्बन्ध शुद्ध रहा है, शास्त्रानुसार प्रायश्चित्त कराकर उनको अपनी अपनी बिरादरी में मिला लेना सर्वथा उचित है। इस लिये जो मलकाने अपनी बिरादरी में मिला लिये गये हैं उस पर यह महासभा हार्दिक हर्ष प्रगट करती है और आशा करती है, कि जिन जिन बिरादरियों से उनका सम्बन्ध है उनका हर्ष के साथ स्वागत करेंगी।" जिन प्रकांड पण्डितों की उपस्थिति में यह प्रस्ताव पास हुआ था उनके कुछ नाम निम्नलिखित हैं—श्रीमान् पं० गिरिधर शर्मा व्याकरणाचार्य जयपुर, श्रीमान् महामहोपाध्याय पं० जयदेव मिश्र काशी, श्री पं० सत्याचरण जी शास्त्री बंगाल, महामहोपाध्याय श्री पं० हाथी भाई शास्त्री गुजरात, श्री पं० सूर्यनारायण शास्त्री जयपुर, महामहोपाध्याय पं० हरनरायण शास्त्री, महामहोपाध्याय पं० प्रमथनाथ तर्कभूषण, श्री पं० श्रीपाद शास्त्री इन्दौर, श्री यू० पी० कृष्णाचार्य मद्रास, श्री० नारायण जगन्नाथ बढ़े आदि २।

महाराष्ट्र हिन्दूधर्मपरिषद् की व्यवस्था

महाराष्ट्र हिन्दूधर्मपरिषद् १७ फ़रवरी सन् २३ को यवतमाल में हुई। करवीरमठ के जगद्गुरु श्री शंकराचार्य जी की अध्यक्षता में परिषद् ने शुद्धि विषयक इस प्रकार व्यवस्था दी कि "जिन हिन्दुओं को ज़बरदस्ती मुसलमान

बना लिया गया है उन्हें फिर हिंदू धर्म में प्रविष्ट कर लिया जावे" जगद्गुरु ने उन पण्डितों को बधाई दी कि जिन्होंने मालाबार में ज़बरदस्ती मुसलमान बनाये हुये हिन्दुओं को शुद्ध करने की आज्ञा दे दी थी। आपने उन लोगों को भी बधाई दी जो उन राजपूतों को जो औरंगजेबआदि के समय में मुसलमान बनाये गये थे. और दुबारा हिंदू बनाने का प्रयत्न कर रहे हैं। इस सभा में महाराष्ट्र के बहुत से पण्डित सम्मिलित थे।

श्री० भाई कर्तारसिंह जी की सम्मति

"सब धर्मावलम्बियों को यह अधिकार प्राप्त है कि जो लोग स्वेच्छापूर्वक उनके मत में प्रविष्ट होना चाहें, उन्हें प्रविष्ट करलें। अगर मलकाने प्रसन्नता से दुबारा हिन्दू बिरादरी में सम्मिलित होना चाहते हैं तो मुसलमानों को कोई अधिकार नहीं है कि वे धमकियां देकर हिन्दुओं को शुद्धि के कार्य से रोकें अगर यह धमकियां देकर हिन्दुओं को शुद्धि के कार्य से रोकें और यदि यह धमकियां क्रियात्मक रूप धारण करने लगीं, तो न्यायानुसार सिक्ख लोग हिंदुओं का साथ देंगे।

सिक्ख नेता बाबा फतहसिंह जी की सम्मति

"आज कल मुसलमान अखबार हिन्दुओं पर मिथ्या दोष लगाकर सिक्खों को हिन्दुओं से अलग करने का

प्रयत्न कर रहे हैं। किन्तु मुसलमान याद रक्खें कि हिंदुओं का और हमारा गोश्त (मांस) तथा रक्त एक ही है। हमारी उनकी जुदाई होना असम्भव है। हम हिन्दुओं द्वारा मलकाना राजपूतों के शुद्ध होने से बड़े प्रसन्न हैं। जो बादशाही वक्त में जबरन मुसलमान बनाये गये थे।"

डा० बी० एस० मुञ्जे की सम्मति

"उन राजपूतों को जिन्होंने कि कभी इस्लाम कबूल नहीं किया किन्तु जिन्हें उनकी बिरादरी के लोगों और साधारण हिन्दू जनता ने पतित के तौर पर अलग कर रक्खा था, शुद्धि द्वारा फिर हिन्दू बिरादरी में सम्मिलित कर बड़ा अच्छा काम किया जा रहा है"।

वृन्दावनस्थ, श्रीं पं० भगवतसहाय जी की व्यवस्था।

वृंदाबन निकटस्थ दुसइन ग्राम के नम्बरदार बलवंतसिंह जी ने वृन्दाबन के विद्वानों से आदर सहित पूछा कि मुसलमानी राज्य में मुसलमानों ने बलात्कार से जिन क्षत्रियों को मुसलमान बना लिया था, जो आजकल मलकाना राजपूत कहलाते हैं, उनकी शुद्धि शास्त्रानुकूल है या नहीं? इसका उत्तर यह है कि इनकी शुद्धि अवश्य करना चाहिये क्योंकि यह शास्त्रानुकूल है। नीचे लिखे शास्त्रीय वचन इसमें प्रमाण हैं।

इन प्रमाणों से स्पष्ट सिद्ध होता है कि जो मलकाने शताब्दियों से अपने धर्म की रक्षा करते चले आरहे हैं उनको शुद्ध करके अवश्यमेव तत्काल जाति में मिलाया जासकता है।

किरात हूणान्ध्र पुलिन्द पुक्कसाः।
आभीर कङ्काः यवनाः खशादयः॥
येऽन्ये च पापाः यदपाश्रयाश्रयाः।
शुद्धयन्ति तस्मै प्रभविष्णवे नमः॥

ब्रजमण्डल वासिनो मलकानेति प्रसिद्धाः क्षत्रियाः दुस्संग वशाधर्मनाशतः स्वीकृत म्लेच्छाचाराः सम्प्रति कृत पश्चात्तापाः परित्यक्तदुराचाराः श्रीकृष्णं शरणं याताः। श्रीहरिनामोच्चारणेन श्रीयमुना-भागीरथी स्नानेनैव पवित्रा इति सिद्धान्तः।

श्रीकृष्णाय नमः

श्रीवृन्दावनीय दुसाइत प्रदेशनिवासि नम्बरदार बलवन्तसिंह वर्मभिर्महाशयैर्वृन्दावनस्थ विद्वत्प्रवराः सदार मभ्यर्थिता यद्यवन राजभिः स्वराज्यशासनकाले बलात्क्षत्रियजातितः प्रच्याविताः केचित्क्षत्रियाः साम्प्रतं मलकाना राजपूतेति नाम्ना प्रसिद्धा धर्मशास्त्रानुसारतः संशोधनीया नवेति ? तत्रोत्तरं प्रदीयते-अवश्यं संशोधनीयास्ते यदि स्व-संस्कारार्थमत्यातुरतया साभिलाषाः चेत्! कथमिति चेच्छ्रूयतामधोऽङ्कितानि धर्मशास्त्रादि वचनानि।

आपस्तम्बवचनम्

बलाद्दासीकृतोम्लेच्छैश्चाण्डालाद्यैश्च दस्युभिः ।
अशुभं कारितं कर्म गवादिप्राणिहिंसनम् ॥
उच्छिष्टमार्जनंचैव तथा तस्यैव भक्षणं ।
तत्स्त्रीणां तथा संगस्ताभिश्च सहभोजनम् ॥
कृच्छ्रान्संवत्सरं कृत्वा सान्तपनान् शुद्धिहेतवे ।
ब्राह्मणः क्षत्रियस्त्वर्धं कृच्छ्रान् कृत्वा विशुद्धयति ॥

महर्षि देवलः

अपेयं येन संपीत मभक्ष्यं येन भक्षितं । म्लेच्छैर्नीतेन विप्रेण ह्यगम्यागमनं कृतम् ॥ तस्य शुद्धिं प्रवक्ष्यामि यावदेकं तु वत्सरम् । चांद्रायणं तु विप्रस्य सपराकं प्रकीर्तितम् ॥ क्षत्रियस्यपराकैकं पादकृच्छ्रेण संयुतम् ॥ नखलोमविहीनानां प्रायश्चित्तं विधीयते ॥

जाबालिवचनम्

अकामकृतपापानां वदन्ति ऋषयो व्रतम । कामकारकृतेऽप्येके द्विजानां वृषलस्य च ॥

स्कन्द पुराण

दुराचारोपि सर्वाशी कृतघ्नो नास्तिकः शठः । समाश्रयेदादिदेवं श्रद्धया शरणं हि यः ॥ निर्दोषं विद्धि तं जन्तुं प्रभावात्परमात्मनः ॥

विष्णुपुराणे गंगास्नानेनापि शुद्धिरुक्ता

ज्ञानतोऽज्ञानतो वापि भक्त्याऽभक्त्यापि वा कृतम्।
गंगास्नानं सर्वविधं सर्वपापप्रणाशनम्॥
चान्द्रायणसहस्रं तु यश्चरेत् कायशोधनम्।
पिबेद्यश्चापि गंगाम्भः समौ स्यातां न वासमौ॥
भवन्ति निर्विषाः सर्पा यथा तार्क्ष्यस्य दर्शनात्।
गङ्गायाः दर्शनात् तद्वत् सर्वपापैः प्रमुच्यते॥

याज्ञवल्क्यवचनम्

देशं कालं वयः शक्तिं पापं चावेक्ष्य यत्नतः। प्रायश्चित्तं प्रकल्प्यं स्यात् यत्र चोक्ता न निष्कृतिः।

मनु वचनम्

अनुक्तनिष्कृतीनां तु पापानामनुपत्तये। शक्तिं चावेक्ष्य पापं च प्रायश्चित्तं प्रकल्पयेत्॥

अज्ञानाद्यदि वाज्ञानात् कर्म कृत्वा विगर्हितम्। यस्माद्धि शुद्धिमन्विच्छन् द्वितीयं न समाचरेत्॥ कृत्वा पापं हि संतप्य तस्मात्पापात्प्रमुच्यते। नैवं कुर्य्यां पुनरिति निवृत्त्या पूयते तु सः।

प्रायश्चित्तेप्सूनां ये पंडिताः प्रायश्चित्तं नोपादिशन्ति तेऽपितत्पापभाजो भवन्ति। तथाहि प्रायश्चित्त कदम्बे "आर्त्तानां मार्गमाणानां प्रायश्चित्तानि ये द्विजाः। जानन्तो न प्रयच्छन्ति तेपि तद्दोषभागिनः॥

भागवत पुराण

भगवन्नामकीर्त्तनं शुद्धिजनकम् भाग० ॥ स्क० ६
ब्रह्महा पितृहा गोघ्नो मातृहाचार्यहाऽघवान् । श्वादः पुक्कशको वापि शुध्येरन् यस्य कीर्त्तनात् । स्कंध १३।अ० ८। श्लो० ३६ ॥

एवं च चिरायवनैःसह योनि—सम्बन्धमकुर्वाणाः रजोवीर्य्येण सम्यक् शुद्धाः मलकाना क्षत्रिया अवश्यं संशोधनीया इति संमतं-पण्डित भगवत्सहायः श्री रङ्गवाटिका निवासी ।

संवत् १९८० वि० ज्ये० कृ० ८ बुध ॥

गोस्वामी श्री राधाचरण जी विद्यावागीश की व्यवस्था

जिस विष्णु भगवान् की शरण ग्रहण करने से किरात, हूण आन्ध्र, पुलन्द, पुक्कस, आभीर, कंक, यवन खस आदि पतित मनुष्य पवित्र होजाते हैं उस भगवान् को शतशः प्रणाम हो ।

व्रजमण्डल अर्थात् आगरा मथुरा आदि प्रान्तों में रहने वाले मलकाना नाम से प्रसिद्ध क्षत्रियों को जिनको बलात्कार से मुसलमान बनाया गया था और जिनमें कोई मुसलमानी रस्म पाई नहीं जाती है अब यदि वह प्रायश्चित्त कराने के उपरांत अपने आचार व्यवहार को ठीक करलें तो विष्णु

नाम के उच्चारण और यमुना गंगा के स्नान से शुद्धि कर लेना चाहिये. यह शास्त्रीय सिद्धान्त है ।

श्री वृन्दावनम् — श्री भगवान् कृष्णचैतन्य चरणानुचर
द्वि० ज्ये० शु० ५ — श्री राधाचरण गोस्वामी
सं० १९८० — विद्या वागीशस्य ।

श्री सनाढ्य महामण्डल की व्यवस्था ।

इस वर्ष सन् १९२३ ई० में अखिल भारतवर्षीय श्री सनाढ्य महामण्डल का २९ वां वार्षिकोत्सव हरदुआगंज जिला अलीगढ़ के निकटस्थ ग्राम बरौठा में नहर गंगा के तट पर बड़े समारोह के साथ मनाया गया । महामण्डल में इस बार प्रायः देश के सम्पूर्ण भागों से जहां पर सनाढ्य भाई रहते हैं, प्रतिनिधि पधारे थे । जिनमें राय बहादुर राजा कुं० मानसिंह जी एम. एल. सी. लाखनू नरेश, राय बहादुर पं० लक्ष्मीनारायण जी दूबे अलीगढ़. श्रीमान् पं० शालिगराम शास्त्री, वैद्यभूषण. वैद्यालङ्कार. साहित्याचार्य व्याकरणाचार्य बरेली. पं० व्रजवल्लभ जी मिश्र कोषाचार्य्य श्रीमान् महोपदेशक कविरत्न पं० अखिलानन्द जी अनूप-शहर, श्रीमान् पं० ब्रह्मदेव जी शास्त्री इटावा, श्रीमान् बाल-ब्रह्मचारी पं० जीवनदत्त जी शर्मा नरवर, श्रीमान् पं० जीवा-राम जी दीक्षित वकील आगरा, (निर्वाचित मन्त्री सनाढ्य महामण्डल) श्रीमान् पं० रामगोपाल जी सनाढ्य महोप-देशक मन्त्री अखिल भारतवर्षीय श्री सनातनधर्ममहा

सम्मेलन आगरा (निर्वाचित उपमन्त्री श्री सनाढ्यमहा-मण्डल) महोपदेशक श्री पं० प्यारेलाल जी शास्त्री मेड़. श्रीमान् उपाध्याय जी महाराज बरेली. श्री चौधरी नन्दनलाल जी रईस नरोरा, श्री० पण्डित श्रीरामजी उपमन्त्री श्री सनाढ्य महामण्डल आगरा, श्री० पं० शालिगराम जी शर्मा. चौधरी साहब उखलाना, श्री० पं० ताराचन्द शर्मा शास्त्री बरोठा. पं० लक्ष्मीनरायण जी पाठक पिछौ. पं० लक्ष्मीनारायण जी व्याकरणाचार्य्य सुनामई. श्री० प्रो० हरिहर शास्त्री अलीगढ़, पं० रामचन्द्र जी वैद्य शास्त्री अलीगढ़. पं० किशोरीलाल रामघाट, पं० दीनदयाल जी आयुर्वेद विशारद कर्णवास, वैद्य हरिशंकर जी शर्मा हरदुआगंज, पं० रघुनन्दन जी शर्मा आयुर्वेदाचार्य्य H. M. D. सुनामई. पं० ख्यालीराम जी कजरौठ, वैद्य कल्याणदत्त जी बदाऊं. पं० केवलराम जी तालिबनगर. पं० दामोदरदास जी सनामई, पं० किशन-लाल जी सपेरा मानपुरा, पं० शोभाराम जी सुनामई, पं० जुगलकिशोर जी शर्मा मकरन्दपुर, पं० छबीलेराम जी शर्मा वकील अलीगढ़, पं० द्वारिकादत्त जी गायत्री पाठशाला बिहारघाट, पं० बाबूराम जी वैद्य बेलौन. पं० छोटेलाल जी सनाढ्य जरगवां. पं० रामचन्द्र जी सुनामई, पं० बद्रीप्रसाद जी रामघाट. पं० मुरलीदत्त जी शर्मा रामघाट, पं० रामसहाय धरमपुर, पं० चिरञ्जीलाल जी डिबाई, पं० झमनलाल जी डिबाई. पं० दौलतराम जी तिलौरा, पं० मन्नूलाल जी जलेसर, पं० रामलाल जी रायपुर, पं० गुलजारीलाल जी फैजाबाद, पं० यज्ञदत्त शर्मा तलिय

नगर, पं० नन्दनसिंह जी अतरौली. पं० हरप्रसाद् जी गुरु कर्णवास. पं० छद्दीलाल शर्मा छैनी, पं० बाबूराम शर्मा कटेरा, पं० छदालाल जी वेम, पं० सीताराम जी वजवनपुर, पं० हरिदत्त शर्मा भारद्वाज वहलोलपुर, पं० लखीराम जी देवयरा, पं० हुलासराम जी तालिबनगर, पं० वकीलाल जी खिजौली, पं० शिवनारायण भवीगढ़, पं० सियाराम शर्मा वैद्यरत्न कठरा, पं० विहारीलाल जी शर्मा वरौठा, पं० लल्ला जी वल्द महाराज भीमसेन जी दौलतपुर, श्री० पं० जुगलकिशोर जी हकीम छौड़, पं० छोटेलाल जी छौड़, पं० मोतीलाल जी कलाई, पं० रामप्रसाद जी फटौली, पं० नन्नामल जी चौधरी रामघाट, पं० प्यारेलाल जी रामघाट, पं० जैगोपाल जी शर्मा, पं० मुकटविहारी शर्मा कविराज रामघाट, पं० रामलाल जी रायपुर, पं० पन्नालाल जी वैद्य मखेना और पं० रेवतीप्रसाद् जी के नाम विशेषतः उल्लेखनीय हैं। इस अवसर पर सर्वसम्मति से श्री० पं० रामगोपाल जी सनाढ्य महोपदेशक का निम्नलिखित प्रस्ताव स्वीकार हुआ कि—

यह सनाढ्यमहामण्डल का २९वां वार्षिकोत्सव मलकाना राजपूतों की सनातन धर्मानुसार शुद्धि के साथ पूर्ण सहानुभूति रखता है, तथा अखिलभारतवर्षीय श्री क्षत्रिय महासभा को शुद्ध हुए मलकानों को अपनी जाति में पूर्ववत् मिला लेने के लिये बधाई देता है।

इस प्रस्ताव का समर्थन कई सज्जनों ने किया, जिसमें

पं० अखिलानन्द जी कविरत्न तथा पं० व्रजवल्लभ मिश्र कोषाचार्य का नाम विशेष उल्लेखनीय है ।

आशा है कि सम्पूर्ण सनाढ्य भाई चाहे गांव में रहते हों या कस्बे व शहर में, मलकाना शुद्धि में अपना पूरा २ योग देंगे और हर प्रकार से इस कार्य को सफलीभूत बनाने की चेष्टा करेंगे, क्योंकि पूर्णसहानुभूति के यही अर्थ हैं कि व्यवस्था की बातों को शिरोधार्य मानकर कार्य में परणित करें । क्षत्रिय महासभा को बधाई देने के भी यही अर्थ हैं कि हम ब्राह्मण बधाई देते हुए क्षत्रियो ! तुमको विश्वास दिलाते हैं कि जो व्यवहार हम तुम लोगों के साथ करते हैं वही व्यवहार तुम्हारे इन बिछुड़े हुए भाइयों के साथ इनके शुद्ध होने पर करेंगे । मुझे आशा है, कि प्रत्येक सनाढ्य इस पवित्र कार्य को सफलीभूत बनाने में कोई बात उठा न रक्खेगा । क्योंकि इन मलकानों के शुद्ध होने पर असंख्य गौओं की रक्षा होगी और सनातनधर्म के लिये यह क्षत्रियवीर एक दिन अपने शिर कटाने तक के लिये तय्यार होंगे क्योंकि क्षत्रियों का जीवनोद्देश्य केवल गौ-ब्राह्मणों की रक्षा करना ही रहा है और रहेगा ।

आपका विनीत प्रार्थी—

बिहारीलाल शर्मा बी० ए०, एल-एल० बी० मन्त्री ।

अखिल भारतवर्षीय श्री सनाढ्य महामण्डल, आगरा ।

सारस्वत ब्राह्मण सभा का फैसला

स्थान बलदेवजी में ता० १६ सितम्बर १९२३ ई० को सारस्वत ब्राह्मणों की बड़ी भारी सभा हुई जिस में निम्नलिखित निश्चय हुआ:—

"सारस्वत ब्राह्मणों की यह सभा शुद्धि विषयक आन्दोलन में अपनी पूर्ण सहानुभूति प्रकट करती है, और उसे हिन्दुजाति की उन्नति और संगठन का एक अच्छा और सामयिक साधन समझती है। हम सब लोगों की सम्मति है कि जो कोई हमारा भाई शुद्धि में भोजनादि कर आवें तो हम लोगों को उनके साथ में कोई ऐतराज न होगा।

हस्ताक्षर—

१ श्यामलाल अछनेरा, २ कृष्णवल्लभ अछनेरा, ३ छदालाल अछनेरा, ४ डम्बरसिंह नगला सजर, ५ बृजकिशोर याहरे नागपुर, ६ लछमन अछनेरा, ७ रामप्रसाद आगरा, ८ लालाराम अछनेरा, ९ भगवानदास शर्मा किरारई (मथुरा) १० शालीगराम जी उर्द (आगरा), ११ जीवाराम अचरू, १२ हूडारामबिदारी (आगरा) १३ गंगाधर कोटा अलीगढ़), १४ हरदयाल तुलागढ़ी (मथुरा), १५ बद्रीप्रसाद (मथुरा), १६ सालिगराम अछनेरा, १७ रघुनन्दन शर्मा भर्थीगढ़-अलीगढ़) १८ रामस्वरूप सींगना, १९ श्यामलाल शर्मा (भई) मथुरा, २० गणेशीलाल आगरा.

लायलपुर के पण्डितों की व्यवस्था

लायलपुर की पण्डित मण्डली ने वहां की सनातनधर्म

सभाके मन्दिर में सर्वसम्मति से निश्चय किया कि "मलकाना राजपूत वास्तव में हिंदू हैं। दूसरी जातियां इन्हें भ्रम में डाल कर भ्रष्ट करना चाहती हैं. उन को अपने साथ बिरादरी में मिलाने का धर्मशास्त्र में विधान है। हिन्दू मात्र का कर्तव्य है कि वह हर उचित तरीके से उन्हें अपनी बिरादरी में मिलालें।"

हस्ताक्षर—पं० विश्वम्भर शास्त्री, पं० चेतराम जी, पं० ठाकुरदत्त शास्त्री, पं० परमानन्द शास्त्री, गोस्वामी गणेशदत्त शास्त्री, पं० हरनामदत्त शास्त्री, पं० रामदयालु शास्त्री, पं० ज्वालादत्त शास्त्री पं० प्रभुदत्त शास्त्री, पं० दुर्गादत्त शास्त्री।

अमृतसर के पण्डितों की व्यवस्था

अमृतसर के सब से बड़े सनातन धर्म मन्दिर में वहां के सनातनी पंडितों ने नीचे लिखी व्यवस्था दी। अधिवेशन के अध्यक्ष का पद पं० हेमराज जी न्यायाचार्य ने ग्रहण किया था।

अगर मलकाना राजपूत शुद्ध होकर अपनी राजपूत बिरादरी में शामिल होना चाहें तो अमृतसर के विद्वानों को कोई आपत्ति नहीं है और न वे इस कार्यवाही में कोई दोष देखते हैं"।

हस्ताक्षरः—पं० बनवारीदत्त वेदान्त रत्न, पं० गौरीशंकर जी व्याख्यान वाचस्पति, पं० कालीचरण जी, पं० देवराज जी.

पं० ज्वालासहाय जी शर्मा, पं० शिवदयालु जी, पं० वैकुण्ठनाथ जी, पं० जगन्नाथ जी, पं० भक्तराम जी, पं० विश्वेश्वरप्रसाद जी शर्मा श्री वैष्णव, पं० क्षितिचन्द्र जी, पं० गोकुलचन्द्र जी ज्योतिषी, पं० लोकनाथ जी, पं० गोविन्दराम जी शास्त्री, पं० शुकदेव जी शास्त्री, पं० हरीराम जी, पं० रामदत्त जी, पं० हेमराज जी न्यायाचार्य, पं० गोपाल शास्त्री, पं० सन्तराम जी, पं० जमुनादत्त जी, पं० रलियाराम जी, पं० राजेन्द्र मिश्र जी, पं० राजाराम जी, पं० तिलकराम जी, पं० मणिलाल जी, पं० ब्रजलाल जी शास्त्री पं० लक्ष्मीदत्त जी।

रोहतक में जाटों की बड़ी पंचायत

८ अप्रैल सन् १९२३ ई० को रोहतक में तमाम ज़िले के जाटों की पञ्चायत हुई जिस में हर एक गांव का प्रतिनिधि मौजूद था। इन प्रतिनिधियों की संख्या ९०० के लगभग थी। क़ौम के बड़े बड़े सरदार मौजूद थे। इस पञ्चायत ने सर्व सम्मति से पास किया कि उन जाटों को जो किसी कारण से मुसलमान हो चुके हैं बिरादरी में शामिल किया जावे और उनके साथ हुक्क़ा पानी खान-पान और रिश्ते-नाते में कोई परहेज़ न किया जावे।

तरौली की पंचायत

९ मार्च सन् १९२३ ई० को तरौली (मथुरा) में राजपूतों की बड़ी पञ्चायत हुई। जिसमें आगरे के कितने ही प्रति-

ष्ठित क्षत्रिय तथा दस-ग्यारह गांवों के सरपञ्च मौजूद थे। सब ने सर्व सम्मति से मलकाना राजपूतों को बिरादरी में मिलाने का प्रस्ताव पास किया।

त्यागमूर्त्ति पं० मोतीलाल नेहरू का सम्मति

लाहौर से निकलने वाले एक पत्रके प्रतिनिधिसे इंटरव्यू करते हुए श्री० पं० मोतीलाल नेहरू ने कहा कि जिस धर्ममें दूसरे धर्म के आदमियों को दाखिल करने का दरवाज़ा खुला है उसको अधिकार है कि वह उचित और शांत उपायों द्वारा अपने धार्मिक कर्तव्यों का पालन करे और किसी को उस में हस्तक्षेप करने का कोई अधिकार नहीं है। अगर किसी धर्म का, दूसरे धर्म के आदमियों को समझा बुझा कर अपने धर्म में लाना पुण्यकार्य हो सकता है तो इस कार्य को करने में किसी दूसरे आदमी को ऐतराज़ नहीं होना चाहिये। विशेष कर जब कि वह स्वयं भी ऐसा ही करता हो।

इसके बाद पण्डित जी ने पत्रों में स्पष्ट सूचना प्रकाशित करादी कि वे मलकाना राजपूतों की शुद्धि को उचित समझते हैं और इस आन्दोलन को कदापि घृणा की दृष्टि से नहीं देखते। उनकी राय में प्रत्येक हिन्दू को जो शुद्धि पर विश्वास रखता है वैसा करने का अधिकार है।

पंजाब ब्राह्मणसभा का निर्णय

पञ्जाब भर के ब्राह्मणों की महासभा का महाधिवेशन

३०, ३१ मार्च और १ अप्रैल सन् १९२३ ई० को लाहौर में हुआ। सभा की स्वागतसमिति के अध्यक्ष राजा नरेन्द्रनाथ साहब और उनके प्रधान अमृतसर के रायबहादुर सरदार ज्वालासहाय साहब थे। इस सभा ने सर्व सम्मति से निश्चित किया कि "जो लोग मलकाना राजपूतों की शुद्धि का काम कर रहे हैं उनको धन्यवाद देती हुई यह सभा विश्वास दिलाती है कि पञ्जाब के ब्राह्मण उनके साथ हैं।

श्री लालसिंह अकाली सेक्रेटरी पंचखालसा सभा समुन्दरी (लायलपुर)

मलकाना राजपूतों की शुद्धि से अप्रसन्न होकर मुसलमान लोग हिंदुओं को तरह तरह की धमकी दे रहे हैं। अगर बादशाही समय की तरह अब भी मुसलमानों ने हिंदुओं के धर्म पर अत्याचार किया तो कर्तव्यवश ३२ लाख सिक्ख उनकी रक्षा में बलिवेदी पर चढ़ जायंगे। यह असम्भव है कि ३२ लाख अकालियों की मौजूदगी में हिंदुओं पर अत्याचार हो सके।

हिन्दूसभा पसरूर जिला सियालकोट

सनातनधर्मसभा पसरूर की अध्यक्षता में वहां की समस्त हिंदू जनता का एक बड़ा अधिवेशन हुआ, सबने एकमत होकर मलकाना राजपूतों को फिर हिंदूधर्म में वापस लेने के कार्य का प्रसन्नता पूर्वक समर्थन किया।

पलवल में राजपूतों की बडी पंचायत

३१ मार्च सन् १९२३ को पलवल (गुड़गांवा) में राजपूत बिरादरी की एक बड़ी पञ्चायत हुई। विविध स्थानों के राजपूत जमा थे. सबने एकमत होकर मलकाना राजपूतों को शुद्ध कर उनके साथ रोटी-बेटी का सम्बन्ध स्थापित करना निश्चित किया।

भारतीय कायस्थ सम्मेलन की सम्मति

भारतीय भटनागर कायस्थ सम्मेलन ३१ मार्च सन १९२३ ई० को देहली में हुआ। प्रधान दीवान लक्ष्मीनारायन थे। सम्मेलन ने उन नौमुस्लिम कायस्थों को बिरादरी में वापिस लेने का प्रस्ताव स्वीकार किया जो शाही ज़माने में बलपूर्वक मुसलमान बना लिये गये थे।

श्री पं० रघुवरदयालु जी प्रिंसिपल सनातनधर्म कालिज लाहौर की सम्मति

सनातन धर्म का मर्यादा में शुद्धि की आज्ञा है, इसी लिये वह मलकाना राजपूतों की शुद्धि चाहता है। हिंदू-धर्म आदेश करता है कि जो लोग किसी कारणवश पतित होगये हैं और फिर अपने धर्म में आना चाहते हैं तो पण्डित और आचार्य लोग उन्हें शुद्ध कर वापिस ले लें अगर ऐसा नहीं करते तो धर्म का उल्लङ्घन करते हैं।

व्याख्यान वाचस्पति श्री पं० दीनदयालु जी शर्मा के सुपुत्र पं० मौलीचन्द्र एम० ए० की सम्मति

मलकाना राजपूत, हिंदू और पक्के सनातनधर्मी हैं स-सनातनधर्मी हिन्दुओं का कर्त्तव्य है कि वे उन्हें प्रसन्नता पूर्वक तुरन्त गले लगा लें। अगर सनातनधर्मी हिन्दुओं ने अपना फ़र्ज़ पूरा न किया तो उनके लिए शरम की बात होगी और उनके माथे पर कलङ्क का टीका लग जायगा।

श्री स्वामी दयानन्द जी की सम्मति

१४ अप्रैल सन् १९२३ ई० को देहली में आपने भाषण देते हुए कहा:—अब जबकि इनके (मलकानों) दिलों में सनातन धर्म का प्रेम जागृत हुआ है. तब भूले भटके भाइयों को अपने में मिला लेना चाहिये। जिसके अन्दर ज़रा भी बाप का सच्चा खून है वह कभी न कभी जोश मारता ही है। मलकानों के सम्बन्ध में पता लग चुका है कि इनमें कोई दोष नहीं है। कश्यप. भारद्वाज का खून जब तक न बिगड़ेगा, चाहे कोई किसी कदर भी बिगड़ जावे उसको हम शुद्ध कर सकते हैं। सिर्फ ऋषियों का रुधिर ठीक रहना चाहिये। मलकानों को शुद्ध करने का जो काम भारत धर्म महामण्डल करता. वही आज किया जा रहा है। हिन्दुओ उठो! अपने भूले भटके भाइयों को

गले लगाओ। इनको समझा बुझा कर गोद में बिठा लेना चाहिए। यही हमारा मुख्य धर्म है।

हिन्दू सभा पूना की सम्मति

हिन्दू सभा पूना के तीसरे अधिवेशन में शहर के गण्य मान्य पण्डित उपस्थित थे। सबने मिलकर निश्चत किया कि बिछुड़े हुए भाइयों को यथोचित शुद्धि के पश्चात् हिन्दू धर्म में मिला लेना सर्वथा उचित है।

ब्रह्मावर्त्त सनातनधर्म महामण्डल की राय

उपर्युक्त महामण्डल का अधिवेशन १८ अप्रैल सन् १९२३ को कानपुर में श्री स्वामी दयानन्द जी की अध्यक्षता में हुआ। उत्सव में अनेक सुप्रसिद्ध सनातनी पण्डित सम्मिलित थे। सबने एकमत होकर मलकाना राजपूतों को हिन्दू बिरादरी में वापिस लेने की व्यवस्था दी। इस प्रस्ताव को कार्य रूप में परिणित करने के लिये प्रसिद्ध सनातनी पण्डितों की एक कमेटी भी बनाई गई है।

वैष्णव सम्प्रदाय की व्यवस्था

'वैदिक सर्वस्व' श्री वैष्णव सम्प्रदाय का मुख पत्र है। यह कांची के प्रतिवादी भयङ्कर मठ से प्रकाशित होता है। यह पत्र अपनी मीन की संख्या में लिखता है:—हमारा तो

यह कहना है कि चार पांच लक्ष नहीं यदि इससे बहुत कम संख्या में भी मुसलमान हिन्दू बनना चाहें तो भी यह सौभाग्य की बात होगी।'

एटा में क्षत्रियों की बड़ी सभा

यह पंचायत एटा में १८ अप्रैल १९२३ ई० को हुई। इसने निश्चित किया कि जिला एटा के समस्त राजपूतों की यह सभा क्षत्रिय उपकारिणी महासभा के मलकाना राजपूतों को शुद्ध कर बिरादरी में मिलाने विषयक प्रस्ताव का पूर्ण समर्थन करती है। यह सभा प्रस्ताव करती है कि जहां कहीं मलकाने हों उनको शुद्ध कर बिरादरी में मिलाया जाय। सब राजपूत शुद्धि में शरीक हों और शुद्ध हुओं के साथ खान-पान रिश्तेदारी आदि करने में किसी प्रकार का संकोच न करें।

इस पंचायत के अध्यक्ष सरनऊ के राजा दुर्विजयसिंह साहब थे। सभा में राजा साहब मैनपुरी की चिट्ठी पढ़ कर सुनाई गई, जिस में आपने शुद्धि के कार्य से सहानुभूति प्रकट की थी।

लखनऊ हिन्दू सम्मेलन की सम्मति

१६ अप्रैल सन् १९२३ ई० को पं० कालिका प्रसाद मिश्र वैद्य की अध्यक्षता में लखनऊ नगर के हिंदुओं का

एक सम्मेलन हुआ। निश्चित हुआ "कि यह हिन्दू सम्मेलन मलकाना राजपूतों तथा रोहतक निवासी मूले जाटों की शुद्धि को न्यायसंगत और धर्मसम्मत समझता है और 'भारतीय-हिन्दू शुद्धि सभा' के साथ पूर्ण सहानुभूति प्रकट करता है"।

लेफ्टिनेण्ट राजा दुर्गानारायण सिंह जी तिर्वा नरेश की सम्मति

शुद्धि आन्दोलन जिसपर कि हम सम्प्रति विचार कर रहे हैं वह महर्षि जी ने आज से ४३ वर्ष पूर्व ही बता दिया था। यदि कोई भाई अपने घर से रुष्ट होकर चलाजाय तो उसको उसके सम्बन्धी मनाने को जाते हैं। अब आपके सामने भी ऐसा ही प्रश्न है। मैं उन भाइयों को धन्यवाद देता हूं कि जिन्होंने हमसे पृथक् होकर भी अपने रस्मो रिवाज और रहन सहन को नहीं छोड़ा। मेरी सम्मति में बिछुड़े हुए भाइयों का गले लगाना ही सबसे अपूर्व कार्य है।

राजा बरखण्डी महेशप्रताप नारायणसिंह जो, शिवगढ़ नरेश की सम्मति

मेरी सम्मति में तो शुद्धि कार्य सनातन तथा शास्त्रोक्त धर्म है, जो कुछ दिनों में शिथलता को प्राप्त होगया था।

परन्तु स्वामी दयानन्द जी महाराज की असीम कृपा से इसकी पुनः जागृति हुई है। अतः हम लोगों को उनका आजन्म कृतज्ञ रहना चाहिये तथा बिछुड़े हुए भाइयों को सुसंस्कृत (शुद्ध) करके उनके साथ वैसा व्यवहार करना चाहिये जैसा कि परस्पर आपस में करते हैं। मैं इस (शुद्धि) कार्य्य को हृदय से समर्थन करता हूं।

श्रीमान् राजा दुर्विजयसिंह जी मरनऊ नरेश की सम्मति

शुद्धि आन्दोलन कोई नया नहीं है। इसका उल्लेख सर्वत्र धार्मिक ग्रन्थों में आता है। मैं शुद्धि आन्दोलन को दिल से चाहता हूं। इसलिये प्रत्येक हिंदू को चाहिये कि अपने संकुचित विचारों को छोड़कर बिछुड़े हुए भाइयों को गले लगावें (शुद्ध करें)।

सर राजा रामपालसिंह जी के० सी० आई० ई० की सम्मति

सर राजा साहब ने हिन्दू जनता के नाम निम्नप्रकार अपील की है:—

प्राचीन काल में हमारे बहुत से भाई अनेक कारणों से मुसलमानों ने धर्म से पतित करने के लिये बाध्य किये परन्तु ऐसा होने पर भी उन्होंने और उनकी

सन्तानों ने अब तक हिंदू रस्म रिवाज को हाथ से नहीं जाने दिया। विवाहादि सम्बन्ध भी उनके उन्हीं लोगों से होते रहे जो पहिले हिंदू थे और उन्हीं की तरह विवश होकर मुसलमानी धर्म ग्रहण किये हुए थे। वैसे लोगों की संख्या प्रत्येक जाति में न्यूनाधिक पाई जाती है। इस वर्ष क्षत्रियोपकारिणी महासभा ने हिज़हाइनैस श्रीमान् राजाधिराज सर नाहरसिंह जी, के० सी० आई० शाहपुराधीश के सभापतित्व में यह प्रस्ताव स्वीकार किया कि, "जो राजपूत उपरोक्त रीति से मुसलमानी धर्म का अवलम्बन किये हुए थे किंतु जिनके आचार विचार सब हिंदुओं जैसे हैं, वे क्षत्रिय समाज में ले लिये जावें"। इस प्रस्ताव के स्वीकार होने के बादही भिन्न भिन्न सम्प्रदाय के देश भक्तों ने देशहितैषिता और भ्रातृ-प्रेम से प्रेरित होकर इस उत्तम कार्य को अपने हाथ में बड़े उत्साह के साथ लेकर उसको कार्यरूप में परिणत करना आरम्भ कर दिया है। हर्ष का विषय है कि, वे भाई जो दीर्घकाल से धर्म परिवर्तन के कारण हम से बिछुड़े हुए थे बड़े प्रेम और उत्साह के साथ हमारे मध्य में आने के लिये तैय्यार हो रहे हैं। इस समय तक अनुमानतः ११ हजार हमारे बिछुड़े हुए भाई हममें सम्मिलित हो चुके हैं और दूसरे भी सम्मिलित होने के लिये उत्सुक हो रहे हैं। इस कार्य के लिये द्रव्य की आवश्यकता है, जिस के बिना संतोषजनक सफलता कदापि प्राप्ति नहीं हो सकती।

यह कार्य हिंदू जाति के लिये सामाजिक तथा धार्मिक दृष्टि से बहुत ही आवश्यक और लाभदायक है। अतएव

उन हिन्दू भाइयों से और विशेष कर क्षत्रिय भाइयों से जिनको हिंदू जाति की उन्नति में सहानुभूति है, अनुरोध है कि वे इस उत्तम कार्य में सहायक बनें और अपने जातिप्रेम तथा देश हितैषिता का परिचय दें। यदि प्रत्येक भाई यथाशक्ति कुछ धन दान करने के लिये तत्पर हो जाय तो इस पवित्र कार्य में पूर्ण सफलता प्राप्त होने की आशा की जा सकती है।

यहां पर इतना कह देना अनुचित न होगा कि एक तो ऐसे ही जैसा कि मर्दुमशुमारी की रिपोर्टों से प्रगट होता है कि हिंदुओं की जन संख्या क्रमशः कम होती जाती है। दूसरे यदि हमारे यहां से ऐसे ही तुच्छ कारणों से लोग बिलग होते जायेंगे तो हमारे समाज को बहुत बड़ी हानि पहुँचेगी।

इसलिये जो महानुभाव इस परम पवित्र कार्य में सहायता देना चाहते हों तो वे 'मन्त्री भारतीय हिंदू शुद्धि सभा देहली' के पते पर भेज सकते हैं। रामपालसिंह

राजाधिराज सर नाहरसिंह जी शाहपुराधीश की सम्मति

धर्म मन से सम्बन्ध रखता है। आज कल शुद्धि के विषय में रुकावटें डाली जा रही हैं। इसके मुतअल्लिक़ आगरे में क्षत्रिय उपकारिणी-महासभा के सालाना उत्सव

पर मेरी उपस्थिति में व प्रधानता में शुद्धि का प्रस्ताव पास किया गया। इस लिये मैं चाहता हूं कि इसके मुतअल्लिक़ और प्रकाश डालूं ताकि किसी को इसके विषय में शंका न रहे और कोई भी इस शुद्धि संस्था का जातीय लाभ के विरुद्ध न समझे। आप सब जानते हैं कि मुसलमानों के राज्य में अन्य धर्मावलम्बियों को किस प्रकार अपने जीवन व्यतीत करने पड़ते थे। उस समय धार्मिक स्वतन्त्रता न थी, लेकिन आज इस समय ब्रिटिश राज्य में हमको पूरी पूरी तरह से धार्मिक स्वतन्त्रता प्राप्त है और गुलामी का शब्द केवल कोष में रह गया है। आप देख ही रहे हैं कि एक बाजार के भीतर एक ही स्थान पर सनातन धर्मी उपदेशक अपने धर्म की उत्तमता समझा रहे हैं—इस से थोड़ी ही दूर आगे मौलवी साहिबान अपने इस्लामी धर्म की तारीफ़ कर रहे हैं और इससे आगे एक पादरी साहब ईसाई धर्म की बड़ाई सुना रहा है। वह सब पूर्ण स्वतन्त्रता में अपने अपने धर्म का उपदेश कर रहे हैं और कोई भी रुकावट पैदा करने का कारण नहीं है, जिसे जो धर्म अच्छा लगे वह उसी को ग्रहण करे क्यों कि धर्म का प्रभाव दिल पर है न कि किसी तरह के लोभ में या भय इत्यादि में। शुद्धि संस्करण केवल उनका ही किया जा रहा है जो मन से हिंदू धर्म को चाहते हैं और अपने आप संस्कार कराने के लिये तैयार होते हैं, इस में किसी के साथ बलात्कार नहीं किया जा रहा है। इस लिये इस समय शुद्धि संस्कार के सम्बन्ध में अन्यधर्मावलम्बियो को आन्दोलन करना बेफ़ा-

यदा है। सारा संसार जानता है कि आज कल मुसलमानों व ईसाइयों ने कितने हिंदुओं को ईसाई और मुसलमान बना लिया है। लेकिन हिन्दू धर्मावलम्बियों सनातन-जैन और बौद्धों ने इस विषय में कभी भी कुछ नहीं किया. क्यों कि वह अच्छी तरह से इस बात को जानते थे और जानते हैं कि जिस मनुष्य को जो धर्म अच्छा लगे वह उसको स्वीकार करे। इस वक्त भी जिनकी शुद्धि की जा रही है वह ऐसे भाई हैं जो बलात्कार मुसलमान बनाये जाने पर भी अब तक हिन्दुओं जैसे नाम रखते हैं, चोटी रखते हैं मुर्दों को जलाते हैं. और बहुत रस्म हिन्दुओं के अनुसार कर रहे हैं। बुद्धिमान यह सोच सकते हैं कि आज से पहले भी कितने मुसलमान भाई ईसाई बनाये गये हैं लेकिन उन मुसलमानों के कानों पर जूं तक न रेंगी और आज इस वाजिबी शुद्धि संस्कार से न जाने यह क्यों अप्रसन्न हैं? मैं तो यह कहूंगा कि संसार भर में जितने धर्म हैं वह परमात्मा की तरफ ले जाने वाले हैं। कोई भी भाई किसी भी धर्म को स्वीकार करे और धर्मात्मा बने।

इति विद्वन्मण्डल शुद्धि-व्यवस्था

लोक-व्यवस्था

हिन्दी केसरी ।

शुद्धि का काम ज़ोरों से चल रहा है, केवल आर्यसमाजी ही नहीं बल्कि हिंदू धर्म के सर्व पन्थों के लोग शुद्धि सभा में सम्मिलित हैं ।

प्रणवीर

मुसलमानों द्वारा शुद्धि के कार्यकर्त्ताओं को मार डालने की धमकी देने पर सहयोगी प्रणवीर लिखता है:—

मुसलमानों के इन रहनुमाओं के दिल में हिंदू-मुसलिम एकता का कितना ख्याल है, यह ऊपर के लेख से साफ़ प्रकट हो रहा है । हम "वकील" से कहना चाहते हैं कि आप जैसे मुसलमान शेर होंगे, पर जब उनको सवा शेर मिल जाता तो कुत्ता बनते देर नहीं लगती । आगरे के हिंदुओं से कहना है कि उनको इन प्रलापों से डरने की कोई वजह नहीं । बड़े शहरों में गुण्डे लोग रोज़ भलेमानसों को लूटने और छुरी भोंकने का डर दिखाते रहते हैं तो क्या डर कर हमको उनकी बात को मान लेना चाहिये ? अन्त

में इतना कहना और है कि अब ये मुसलमान साहिबान अपने होश की दवा करावें तभी अच्छा है।

नारद

जिन मलकाना राजपूतों की शुद्धि की इस समय धूम मची हुई है वे यथार्थ में हिंदू ही हैं। उन्होंने कभी इस्लाम को ग्रहण नहीं किया। उन्हें राज भय से मुसलमान होने को तैयार होना पड़ा था पर हृदय से उन्होंने कभी हिंदु पने को नहीं त्यागा। शुद्धि करने वाले देश का बड़ा उपकार कर रहे हैं।

वर्तमान

अब हिंदू लोग अपने कर्तव्य को पहचान कर इतने दिनों से बिछुड़े हुए परन्तु वास्तविक हिन्दुओं को पुनः अपने भीतर स्वीकार करने को तैयार हो गये हैं तो हमारे मुसलमान भाइयों का कोलाहल मचाने और ज़मीन आसमान एक करने का प्रयत्न करना कदापि बुद्धिमानों की दृष्टि से उचित नहीं ठहर सकता।

नवीन राजस्थान

इस समय जो नव मुस्लिम हिंदू हो रहे हैं वे बरसों से इसके लिए तैयार थे और प्रसन्नता से अपने धर्म को

वापिस ग्रहण कर रहे हैं। इस मामले का हिंदू-मुस्लिम ऐक्य से कोई सम्बन्ध नहीं।

कर्तव्य

मलकानों को हिंदू जाति में मिला लेने में ज़रा भी देर न करनी चाहिये।

राजस्थान केसरी

मलकाना राजपूतों की शुद्धि का विरोध करना भाई को भाई से मिलना रोकना है और अपनी मूर्खता दिखाना है, तथा हिंदू धर्म को कलंकित करना है।

लायल गज़ट

मोपलों ने सैकड़ों हिंदुओं को ज़बरदस्ती मुसलमान बना लिया और हज़ारों हिंदू औरतों को जबरन अपने घरों में डाल लिया तब तो हिंदू मुस्लिम इत्तिहाद को कोई खतरा पेश न आया लेकिन मलकाना राजपूतों के बखूबी हिन्दुओं में मिलने पर हिन्दू मुसलिम इत्तिहाद का शीराज़ा बिखर जायगा। मुसलमानों को हक़ हासिल है कि वे मलकाना लोगों में प्रचार कर उन्हें हिन्दू बनने से रोकें। लेकिन उनको इस लिये हिंदुओं से नाराज़गी है कि यह हिंदू धर्म से खारिज शुदा हिंदुओं को जो मुसलमान कहलाते थे,

अज़सरे नौ हिंदू बना रहे हैं, हरगिज़ मुन्सिफ़ाना व जायज़ नहीं कहा जा सकता। गुज़िश्ता साल सैंकड़ों हिंदू औरतों को लाहौर में मुसलमान किया गया लेकिन हिन्दुओं ने उफ़ तक नहीं की। मुसलमानों को भी नज़रदिली के मुतअल्लिक कम-अज़ कम हिंदुओं की सी फ़राखदिली का सबूत देना चाहिये।

हिन्दी वन्देमातरम्

शुद्धि के कार्य में बड़ी सहायता की ज़रूरत है। लोगों को शुद्धि सभा की सहायता करनी चाहिए।

सोशल रिफ़ार्मर

हिंदू जाति जग कर अब अपने कर्त्तव्य की ओर आ रहा है और उसने भेद भाव एवं भिन्नता की दीवारें दूर कर अपने बिछुड़े हुये भाइयों को फिर से गले लगाना शुरू कर दिया है।

श्री वेंकटेश्वर समाचार

आगरे के आस पास मलकाना नाम के मुसलमान राजपूत नाम मात्र के मुसलमान हैं। मुसलमान भी यह मानते हैं कि मलकाना राजपूत नाममात्र के मुसलमान हैं, यदि अब वे अपने इस नाम मात्र के धर्म को त्याग, आर्य

समाज में प्रवेश करना चाहते हैं तो मुसलमानों को कदापि इससे न चिढ़ना चाहिये। क्या वे धार्मिक विचार के सम्बन्ध में व्यक्तिगत स्वतंत्रता नहीं मानते? जबरदस्ती 'शुद्धि' और धन के लालच की बात कहते हैं उसे सुन, गधे भी हंस पड़ेंगे। समाजी क्या मोपले हैं जो जबरदस्ती किसी से धर्म त्याग करा सकते हैं? और हिंदू-मुसलमान एकता के टूटने की दुहाई दी जाती है वह उस वक्त कहां थी जब मालाबार के मोपले हिंदुओं को जबरदस्ती मुसलमान बना रहे थे? क्या उस समय एक भी ऐसी मुसलमान सभा मोपलों के पैशाचिक अत्याचारों का विरोध करने के लिये कहीं हुई थी?

[नोट—सहयोगी वेंकटेश्वर समाचार ने मलकाना राजपूतों का आर्य समाजी होना लिखा है पर यह गलत है। वे शुद्ध होकर आर्य समाजी नहीं बनते बल्कि अपनी हिन्दू बिरादरी में मिलते हैं। आर्य सनातनी जैन आदि सभी लोग उनके हाथ का भोजन करते हैं। स०]

भारतमित्र

मलकाना राजपूतों को मुसलमान समझना भूल है। जो रिपोर्टें आ रही हैं उनसे यही पता चलता है कि मलकाना राजपूत समाज के बहिष्कृत हिंदु हैं।

हिन्दी प्रताप

आगरे आदि कई जिलों में कई लाख मलकाने रहते हैं ये लोग पुराने जमाने में तलवार के बल पर मुसलमान

बनाये गये थे और हिंदुओं ने अपनी मूर्खता और जड़ता वश सदैव इनका बहिष्कार किया। हिंदू जाति में न तो इतनी शक्ति ही थी कि वह अपनी रक्षा कर सके और न इतनी क्षमता तथा बुद्धिमत्ता ही, कि दूसरे लोग उसके जिन अंगों को काटना चाहें उन्हें वह अपने में मिला ले। फल स्वरूप हमारे ये मलकाने भाई हृदय से हिंदू परन्तु विवश होकर मुसलमान बने रहे। इनकी रीति-रिवाज, इनका रहन-सहन सब हिंदुओं का सा है लेकिन, चूंकि हिन्दू इन्हें स्वीकार नहीं करते थे इस लिये इन बेचारों को विवश हो कर कुछ मुसलमानी रीतियों को ग्रहण करके अपना जीवन कृत्रिम बनाना पड़ता है। हर्ष की बात है कि अब अपने इन भाइयों को मिला लेने का बीड़ा उठाया है। आगरे के जिलों में शुद्धि का काम सरगरमी के साथ जारी हो गया है। बस, इसी बात पर हमारे कुछ मुसलमान भाइयों का पारा बेहद चढ़ गया है। किसी नज़ीर अहमद खुजन्दी नामक मौलाना ने यहां तक कहना शुरू कर दिया है कि "संयुक्त-प्रान्त मे आगरा और मथुरा ज़िलों में स्वामी श्रद्धानन्द मुसलमानों को जबरदस्ती आर्यसमाजी बना रहे हैं। हिन्दू मुसलिम एकता पर इसका बड़ा बुरा प्रभाव पड़ेगा। इस कार्य को तुरन्त रोक देना चाहिये अन्यथा मुसलमानों का भाव बिगड़ जायगा और वे उत्तेजित हो जायेंगे।" मौलाना साहब की यह बात महज़ बेबुनियाद है कि "मुसलमान ज़बरदस्ती आर्य समाजी बनाये जा रहे हैं।" अगर कोई हिन्दू खुशी से मुसलमान और

ईसाई होता हो तो जैसे हिन्दुओं को मुसलमानों और ईसाइयों के प्रति अपना "भाव बिगाड़ने और उत्तेजित होने" का कोई अधिकार नहीं वैसे ही अगर कोई मुसलमान और ईसाई और खास करके वे मुसलमान और ईसाई जो हिन्दुओ से जबरदस्ती या छल से मुसलमान या ईसाई बन गये थे और फिर अपने धर्म में आना चाहते हैं, हिन्दू होना चाहें और हिन्दू उनको अपनी छाती से लगाना मंजूर करें तो मुसलमान भाइयों को नाराज होने की कोई वजह नहीं। अगर हिन्दुओं के इस सर्वथा न्याय पूर्ण कार्य से भी हिन्दू मुसलिम एकता कल टूटती हो तो आज टूट जाय। हमें आशा है लखनऊ की मुसलिम परिषद् के नियुक्त किये हुए प्रतिनिधि जांच करके उसी निष्कर्ष पर पहुँचेंगे जिस पर कि हम पहुँचे हैं।

लीडर

"यहां मलकाना राजपूतों की शुद्धि का या उन्हें आर्यों के पञ्जे से छुड़ाने का तो कोई प्रश्न ही नहीं अगर है भी तो उन्हें मौलवियों के चुंगल से बचाने का है। हमें आशा है कि मुसलमान लोग घटना के विरुद्ध बातें कह कर अपने को हास्यास्पद न बनायेंगे। मुसलमानों की धमकियों के भय से डरकर हिंदू लोग अपने चिरकाल से बिछुड़े भाइयों को अपनाना कदापि बन्द नहीं कर सकते। दायित्व पूर्ण मुसलमान नेताओं का कर्तव्य है कि वे मौलवियों के इस प्रकार भड़काने वाले मजहबी जोश की निन्दा

करें । ... हिंदुओं का कर्तव्य है कि वे इस अवसर पर शुद्धि सभा को जन-धन द्वारा सहायता दें । ... मुसलमानों को वस्तुस्थिति पहिचानते हुए मिथ्या बातों द्वारा लोगों को भ्रम में डालने का प्रयत्न न करना चाहिये । इन बातों पर हिंदू-मुसलमानों की एकता की दुहाई देकर उछल कूद मचाना व्यर्थ है ।

बंगला हित वादी

इस समय मलकाना राजपूत स्वेच्छापूर्वक किसी समुदाय में मिल रहे हैं और वह उन्हें मिला रहा है तो इसमें किसी को आपत्ति करना बिलकुल व्यर्थ है ।

"अभ्युदय"

अब आशा प्रबल होती है कि हिंदू जाति फिर एक बार शक्ति शाली होगी । हिंदू भाइयों ने हिन्दू धर्म और हिंदू जाति की लाज रखली-जो साढ़े चार लाख राजपूत किसी समय में दबाव से या अपनी कमजोरी से मुसलमान हो गये उनको शुद्ध कर धर्म में ले लेने का हिंदू जाति जोरों से प्रयत्न कर रही है । वास्तव में जीती जागती जाति का एक यह ज्वलन्त प्रमाण है कि वह गैरों को अपनाले और अपनासा बनाले । यदि देखा जाय तो ईश्वर की भी तीन विशेष विभूतियां हैं । ब्रह्मा के रूप में वह सृष्टि की रचना करता है, विष्णु के रूप में वह सृष्टि का पालन करता है और

शिव के रूप में वह सृष्टि का संहार करता है। जबतक किसी जाति में अपनी वृद्धि करने का बल होता है, तबतक वह अपना पालन, अपनी रक्षा और समय पड़ने पर अपना संहार कर सकती है और तभी तक उस जातिकी गणना जीवित जातियों में होती है। हिंदू जाति का इतिहास यदि देखा जाय तो यह छिपा नहीं है कि कितने ही अवसरों पर इसने दूसरों को अपने धर्म में ले लिया था। इसके विरुद्ध इतिहास की यह भी घोषणा है कि जिस दिन से हिन्दू जाति ने अपनी संख्या में इसतरह की वृद्धि को ख्याल छोड़ा उसी दिन से उन्नति के मार्ग की ओर उसकी पीठ हो गई है! आज हिंदू जाति को फिर अभिमान करने का अवसर प्राप्त है क्योंकि हमारा यह दृढ़ विश्वास है कि इन साढ़े चार लाख बिछुड़े हुए भाइयों के मिलने के साथ ही ऐसे ही अन्य भाइयों को भी मिलाने से हमारा सौभाग्यसूर्य शीघ्र ही गगनमण्डल में चमकता हुआ दिखाई देगा। हम हिन्दूजाति को इस अवसर पर बधाई देते हैं।

अन्यत्र छपे समाचारों से पाठकों को विदित हो जायगा कि शुद्धि का प्रयत्न ज़ोरों से जारी है और विशेष रूप से वह सफल होरहा है। इस प्रयत्न के लिये हिन्दूजाति श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी, श्रीनारायण स्वामी जी, कुंवर हनुवन्तसिंह जी, क्षत्रिय महा सभा और कितने ही अन्य सनातनी, जैनी और आर्यसमाजी भाइयों की ऋणी रहेगी। हिंदू भाइयों का यह धर्म है, यह कर्तव्य है कि वे इस महान् प्रयत्न में जो लोग लगे हुए हैं, उनकी हर तरह से सहायता करें। जो

समय देसकते हों वे समय दें और जाकर शुद्धि के काम में काम करने वालों का हाथ बटावें और जो धन दे सकते हैं उनका यह फ़र्ज़ है कि वे धन से सहायता करें।

मरहठी केसरी

मरहठी केसरी में शुद्धि सम्बन्धी एक लेख प्रकाशित हुआ है उसका अनुवाद हम 'हिन्दी केसरी' से नीचे उद्धृत करते हैं:—

मलकानों की शुद्धि से मुसलमान असन्तुष्ट हो गये हैं. मलकाने पहले राजपूत थे। यदि मान लिया जाय कि मुग़लों के समय में ही वे मुसलमान होगये. तथापि इन सैकड़ों वर्षों में भी उन्होंने हिन्दू रहन सहन को नहीं छोड़ा हिन्दू-समाज उनको हिंदू कहने के लिये तैयार न थी। यही कारण है कि वे इतने दिनों तक मुसलमान बने रहे। प्रत्येक मनुष्य को अपनी इच्छा के अनुसार किसी भी धर्म के अनुयायी बन कर उसी के अनुसार आचरण करने की स्वतन्त्रता होनी चाहिये। दोनों पक्ष सभ्य समाज के इसी सहिष्णुतापूर्ण तत्व को स्वीकार करते हैं। आज तक बहुत जगह मलकानों की शुद्धि हुई है, पर कहीं भी किसी के ऊपर बल-प्रयोग नहीं हुआ हैं न किसी को कुछ लोभ ही दिखाया गया है। शुद्धि सम्बन्धी जो समाचार आते हैं उनसे यह मालूम होता है कि सब काम शांति और उत्साह के साथ हो रहे हैं। कोई मुसलमान यह नहीं बता सकता

कि अमुक बात अनुचित है, अमुक स्थान में बल-प्रयोग हुआ या अमुक लोग बहकाये गये हैं। ऐसी परिस्थिति में होने वाली शुद्धियों से मुसलमान क्यों क्षुब्ध हैं, इस को समझना हिंदुओं के लिये पहिले से कम कठिन न था।

मुसलमानों के इस आक्षेप का कि राजनैतिक उद्देश्य से ही शुद्धि-आन्दोलन का जन्म हुआ है, क्या आधार है? शुद्धि-आन्दोलन के आरम्भ होते ही हिंदुओं ने उसका स्वागत किया। सैंकड़ों वर्षों से बहुत से परधर्म-निरत हिंदू, हिंदू धर्म में सम्मिलित होने की इच्छा कर रहे थे, पर हिन्दुओं की संकुचित वृत्ति के कारण वे सम्मिलित नहीं हो सकते थे। हिन्दुओं ने अपना यह दोष अब त्याग दिया है अब हिंदू धर्म के द्वार खुल गये हैं। अब तक हिंदूधर्म रूपी हौज़ में पानी के सिर्फ़ बाहर जाने के लिये ही नलें थीं, पर अब उसमें ऐसी नलें भी लग गई हैं जिन से बाहर से भी पानी आ सकता है। इसमें एक बड़ी आवश्यकता पूरी हो गई है और धार्मिकदृष्टि से लाभ हुआ है, पर जहां तक हमें मालूम है, किसी हिंदू व्यक्ति या पत्र ने यह नहीं बताया है कि इससे राजनैतिक हानि या लाभ क्या हुआ है। हिंदू समाज, मुसलमान समाज को निगल जाना नहीं चाहती। यह बात उनके ध्यान में नहीं है, हिन्दुस्तान में जिसको क्रिस्तान होने की इच्छा हो वह क्रिस्तान हो सकता है और जिस को मुसलमान बनने की अभिलाषा हो वह मुसलमान बन सकता है। इस देश की स्थिति ऐसी है कि जिस को जो धर्म अच्छा मालूम हो वह उसी को स्वीकार कर सकता

है। इसी तरह हिन्दू धर्म में सम्मिलित होने की इच्छा करने वाले सज्जन भी हिंदू हो सकते हैं। हिंदुधर्म की अ-कर्मन्यता उन्हें रोक नहीं सकती। ऐसी स्थिति में यदि 'संगठित' प्रयत्न की आवश्यकता हो गई है तो अपने मुसलमान भाइयों से यही प्रार्थना करेंगे कि वे उसे संगठित' होने के कारण राजनैतिक न कहें और अपने को भ्रम में न डालें।

स्वामी श्रद्धानन्द जी ने अपने ऊपर होने वाले आक्षेपों का मुंह तोड़ जवाब दिया है। स्वामी जी संन्यासी हैं और शुद्धि के लिये मनोयोग पूर्वक अविरल परिश्रम कर रहे हैं। कुछ लोग कहते हैं कि यह आन्दोलन असमय में ही आरम्भ हुआ है, इस लिये उसे स्थगित कर देना चाहिये।

मुसलमान लोग यदि एक अवधि निश्चित करते तो ठीक था पर जब तक वे ऐसा नहीं करते और जब तक यह नहीं कहते कि फलां तारीख़ के बाद हम कोई आपत्ति न करेंगे तब तक तो यही कहना पड़ेगा कि वे दूसरों के उचित अधिकार में अनुचित हस्त क्षेप कर रहे हैं।

॥ इति लोक-व्यवस्था ॥

इतिहास-व्यवस्था

इतिहास से अनभिज्ञ प्राय: भोले भाले मनुष्यों से कहते सुना जाता है कि वर्तमान शुद्धि आन्दोलन मुसलमान और ईसाइयों की देखा देखी आरम्भ किया गया है। ऐसे सज्जनों को हम अधिक कुछ न कहते हुए उदाहरणार्थं पाठकों के सन्मुख रख रहे हैं जिन से स्पष्ट सिद्ध है कि शुद्धि का कार्य पहिले से ही प्रचलित है। यथा—

१. दस हजार म्लेच्छों की शुद्धि

सरस्वत्याज्ञया कण्वो मिश्र देशमुपाययो ।
म्लेच्छान् संस्कृत्य चा भाष्य नदादश सहस्रकान् ॥

भ० पु० प्रतिसर्ग पर्व खण्ड ४ अ० २१ श्लोक १६

अर्थः—सरस्वती देवी की आज्ञा से कण्व ऋषि ने मिश्र देश में जाकर दश हजार म्लेच्छों को शुद्ध किया। इसी पुराण के अगले श्लोकों में लिखा है—कि उन दस हजार शुद्ध हुए में से दो हजार मनुष्यों को वैश्य बनाया गया और एक मनुष्य को जिसका नाम 'पृथु' रक्खा गया था—वेद वेत्ता कण्व ने उसको राजा बनाया और राजपूत नामक

नगर दिया। जिसका नाम आगे चलकर मगधपुत्र हुआ और जिससे मगध राज्य की नींव डाली गई।

२. लाखों मुसलमानों की शुद्धि

यन्त्राणि कारया मासुः सप्तस्वेव पुरीपुच।
तदधो वै गता लोका स्सर्वे ते म्लेच्छतां गताः॥
भविष्य पु० प्र० पर्व ख० ४ अ० २१-५२

अर्थः—जिस समय मुसलमानों ने भारतवर्ष पर आक्रमण करके, जगन्नाथ, अयोध्या, काञ्चीपुर, हरिद्वार, काशी आदि सातों पुरियों में मंदिरों को तोड़कर मसजिदें बनालीं और बहुत से मनुष्य उसके पञ्जे में फंसकर मुसलमान बनाये गये। तब समस्त आर्य जाति मे भारी हलचल मच गई उस समयः—

श्रुत्वा ते वैष्णवाः सर्वे कृष्णचैतन्य सेवकाः।
दिव्यं मन्त्र गुरोश्चैव पठित्वा प्रययुः पुरीः॥
भ० पु० प्र० प० ख० ४ अ० २१-५४।

अर्थः—आर्य जाति के कोलाहल को सुनकर और आर्य धर्म के ऊपर आई विपत्ति को देखकर कृष्ण चैतन्य के शिष्य अपनेगुरु से समयोचित शिक्षा लेकर सातों पुरियोंको चलदिये उनमें सेः—

रामानन्दस्य शिष्यो वै चायोध्याया मुपागतः।
कृत्वा विलोमं तं मन्त्रं वैष्णवांस्तान कारयत्॥

भाले त्रिशूल चिन्हं च. श्वेत रक्तं तदा भवत् ।
कण्ठे च तुलसी माला, जिह्वा राम मयी कृता ॥
म्लेच्छास्ते वैष्णवाश्चासन् रामानन्द प्रभावतः ।
आर्याश्च वैष्णवा मुख्या अयोध्यायां बभूविरे ॥
भ० पु० प्र० प० ख० ४-२१-५५-५६-५७ ।

अर्थ—महात्मा रामानन्द के शिष्य अयोध्या पुरी में पहुँचे, और वहां मुसलमानों के सिद्धान्तों का खण्डन कर के उन को शुद्ध कर वैष्णव धर्मानुयायी बनाया, शुद्ध हुओं के माथे पर त्रिशूलाकार तिलक लगाया 'जो बीच में लाल रंग का और दोनों ओर श्वेत होता है' गले में तुलसी की माला पहिरा-मुहं से 'राम' नाम जपाया । इस प्रकार अयोध्या के सम्पूर्ण मुसलमान रामानन्द के प्रभाव से शुद्ध होकर वैष्णव बनाये गये और अयोध्या में आर्य होकर रहने लगे । कृष्ण चैतन्य का दूसरा शिष्यः—

निम्बादित्य गतो धीमान् सशिष्यः काञ्चिकापुरीम् ।
म्लेच्छ यन्त्र राजमार्गे स्थितं तत्र ददर्श ह ॥
भ० ख० ४ । ५८ ॥

अर्थः—बुद्धिमान निम्बादित्य कांची पुरी में गये और मुसलमानों की पोल खोलकर लोगों को विष्णुधर्म का उपदेश दिया और सबको अपने वश में करके वैष्णव बनाया और उनको शुद्ध करके मस्तक पर वंशपत्र के तुल्य तिलक, कण्ठ में तुलसी माला तथा गोपीबल्लभका मन्त्र सिखा कर आर्य जाति में शामिल किया । इसी प्रकारः —

विष्णु स्वामी हरद्वारे जगामस्वगणैर्वृतः ।
तत्र स्थितं महामन्त्र म्लेच्छान् तद्धकारह ॥
भ० पु० ख० ४-२१-६२

अर्थः—विष्णु स्वामी अपने गणों के साथ हरिद्वार में गये और वहां मुसलमानों के विरोद्ध प्रचार करके सब को शुद्ध कर वैष्णव बनाया ।

इसी प्रकार से 'वाणी भूषण' आदि महात्माओं ने काशी आदि पुरियों में जाकर हजारों मुसलमानों को शुद्ध करके आर्य जाति में मिलाया ।

३. कवि जमालुद्दीन की शुद्धि—सम्वत् १८२५ के लग भग ग्राम पिहनी जिला हरदोई के रहने वाले कवि जमालुद्दीन शुद्ध होकर श्री कृष्ण के भक्त 'जमाल कवि' नाम से विख्यात हुए । आपने शुद्ध होकर कृष्ण की भक्ति में बहुत सी कविताओं की रचनायें कीं जिनमें दो निम्न प्रकार हैं ।

मोर मुकट कटि काछिनि, गल मोतिन की माल ।
कह जानों कित जात हैं ? जग को जियन जमाल ॥ १ ॥
इत आवत उत जात हैं, भक्तन के प्रति पाल ।
बंशी बजावत कदम चढ़ि, कारण कौन जमाल ॥ २ ॥

४ मिर्जा अब्दुल कादिर की शुद्धिः—औरंगजेब के राजत्वकाल में मिर्जा अब्दुल कादिर ६० वर्ष की आयु में महात्मा विट्ठलदास से मधुपुरी में शुद्ध किये गये और शुद्ध होने

के पश्चात् उनका हिंदू नाम 'चन्द्रनयन' रक्खा गया इन्होंने शुद्ध होकर रामायण का फार्सी में अनुवाद किया है। मिलाप लाहौर सन् १९२४ ई०।

५ दिलेरखां की शुद्धि—फलटन जिला सितारा तालुके का मालिक दिलेर खां जिनको बीजापुर के मुसलमान बादशाह ने लोभ-लालच और दबाव से मुसलमान बना लिया था और उनके साथ अपनी लड़की का निकाह भी कर दिया था। उनको श्री शिवाजी की अनुमति से उनकी माता जीजीबाई, ने अपने सर्दारों के सामने शुद्ध किया और हिन्दू नाम वही पुराना 'बजाजी राव निम्बालकर' रक्खा। शुद्ध करने के पश्चात् शिवाजी ने अपनी पुत्री सुखाबाई का विवाह संस्कार 'बजाजी राव निम्बालकर' के साथ कर दिया।

६ सुखपालकी शुद्धि—हिजरी सन् ३९८ में राजा सुखपाल धोखे और दबाव से मुसलमान बना लिया गया था किन्तु अवसर पाते ही वह पुनः शुद्ध होकर हिन्दू बन गया देखो अब्दुल कादिर बादायूनी मुन्तखिब अलतवारीख।

७ सिकन्दर के समय में शुद्धि- "सिकन्दर के समय जो ब्राह्मण बलात् मुसलमान बनाये गये थे वे पुनः इसलाम मजहब को छोड़ कर हिन्दू हो गये जैसा कि लिखा है--

'वे जमइये ब्रिहमनां कि दर ज़माने सिकन्दर वज़ोर व अकरः मुसलमान करदः बूदन्द अज़ इस्लाम बर गश्त हज़ बाज़ रसूमे हनूद दर पेश गिर फतन्द"

(देखो मिस्टर ज़फ़र हसन बी० ए० की छपाई खुलास तुल् तवारीख़)

८- बादशाह मुहम्मद शाह के दामाद की शुद्धि—बादशाह मुहम्मद शाह के राज्य काल में दीवान मनसाराम मोहन मुहयाल (त्यागी ब्राह्मण) पंजाब का सूबेदार था। उसके पुत्र का नाम राजाराम और राजाराम के पुत्र का नाम जयराम था।

बादशाह ने जयराम को बलात् अपने राज भवन में बन्द करके मुसलमान बना लिया और उसका नाम यूसूफ सानी रख कर उसके साथ अपनी बेटी का निकाह पढ़ दिया।

कुछ दिनों के पश्चात् उसकी जाति वालों ने बादशाह के दामाद यूसूफ़ सानी को शुद्ध करके फिर अपनी बिरादरी में शामिल कर लिया।

(मि० लाहौर)

९- कामरान शीराज़ी की शुद्धि—महोदय कामरान शीराज़ी मशायिख़ों के अनुयायी और पूर्ण विद्वान् थे। वे हिंदुस्तान में आये और यहाँ के राजाओं से परिचय करने के पश्चात् हिन्दू धर्म को ग्रहण कर (शुद्ध होकर) ब्राह्मणों से हिंदू शास्त्रों का अध्ययन किया। १०५० हिजरी में उनकी मृत्यु अकबराबाद के समीप फ़रूख़सराय में हुई। जो सामग्री उस समय उनके पास थी उसको बीमारी की अवस्था में ही बांट दिया। उसमें से नक़द रुपया वैष्णव ब्राह्मणों को दिया, पुस्तके हुशियार को" इत्यादि (देखो 'दबि-

स्ताने मजाहब. का उर्दू तर्जुमा पृष्ठ ४१५ पर कामरान नामी हकीम का जीवन चरित्र

१०- रुस्तम खां की शुद्धि—इस्लाम के राज्य काल में 'रुस्तम खां' पठान शुद्ध हुआ और उसने अपना नाम रस खानी. रक्खा और उसने कृष्ण की भक्ति के सम्बन्ध में बहुत सी कवितायें बनाई।

या लकुटी अरु कामरया पर. राजतिहूँ पुर को तजि डारो।
आठ हूं सिद्धि नवों निधि को, सुख नन्द की गाय चराय बिसारो।
रस खानि कवो इन आंखन. वृज के वन नाग तडाग निहारे।
को दिन ह्वै कल धौत के धाम. करीर के कुंज ऊपर वारों॥
मानस हों तो वही रस खानि. बसों ब्रज गोकुल गांवके ग्वारन।
जो पशु हों तो कहा बस मेरा, चरों नित नन्द की धेनु मझारन॥
वाहन हों वही गिरि को. जो धरयो कर क्षत्र पुरन्दर वारन।
जो खग हों बसेरो करों. कालिन्दी कूल कदम्ब की डारन॥

११- 'ताज बेगम' की शुद्धि—दारा(औरंगजेब का भाई) के समय में 'ताज' नाम की एक मुस्लिम महिला शुद्ध होकर हिन्दू बनी और शुद्ध होने के पश्चात् उसने कृष्ण की भक्ति में निम्न प्रकार कविताओं की रचना की।

"छैल जो छबीला रंगीला बड़ा'
चित्त का अड़ीला कहूं देवतों से न्यारा है।
माल गले सोहे नाक मोती सी सेत सोहे.
कान मोहे मन कुण्डल मुकुट सीस धारा है॥

दुष्ट जन मारे सन्त जन रखवारे 'ताज'
चित हित वारे प्रेम प्रीत कर वारा है।
नन्द जू का प्यारा जिन कंस को पछारा है,
वह वृन्दावन वारा कृष्ण साहेब हमारा है॥

(कुरान से विश्वास हट जाने के पश्चात् की कविता)

सुना विश्व-ज्ञानी मेरे दिल की कहानी,
तेरे दस्त हूं बिकानी बदनामी ही सहूंगी मैं।
देव पूजा ठानी नमाज़ हूं भुलानी,
तजे कलमा कुरान सारे गुनन हूं तजूंगी मैं॥
श्यामला सलौना सिरताज 'सिर' कुल्ले दिये,
तेरे नेह दाग में निदाग हो रहूंगी मैं।
नन्द के कुमार कुरबान तेरी सूरत पै,
हां तो मुसलमानी पर हिंदुआनी हो रहूंगी मैं॥

(शुद्ध होने के पश्चात्)

कलमा कुरान छोड़ आई हूं तिहारे पास,
भाव में भजन में दिल को लगाऊंगी।
पाऊंगी विनोद भर के सुबह शाम,
गाऊंगी तिहारे गीत नेक न लजाऊंगी॥
खाऊंगी प्रसाद प्रभु मन्दिर में जाय जाय,
माथ पै तिहारे पदरज को चढ़ाऊंगी।
आशिक दिवानी बन पद पुजि पुजि,
श्याम की तात में राधिका सी बन जाऊंगी॥

✽

१२- सिहाढ्य की शुद्धि—"धेनुकाकटा यवनसिंह ध-यानमझा दानं" (पूना के समीप की कारली गुफा में लिखा हुआ शिला लेख ।

अर्थः—धेनु काकट से आये हुये यवन (यूनान देशवासी) ने शुद्ध होकर अपना हिंदू नाम 'सिंहाढ्य' रक्खा और उस ने यहां (मन्दिरों में) भेंट चढ़ाई ।

१३- धम्म की शुद्धि धेनुकाकट धम्म यवनस. पूना के समीप कारली गुफा में लिखा हुआ शिला लेख ।

अर्थ—धेनु काकटा से आये हुये यवन ने शुद्ध होकर अपना हिंदू नाम 'धम्य' रक्खा ।

१४- इरिला की शुद्धि—यवनस इरिलस गतान देव धम बे पोटियो"

(जुन्नार के शिला लेख से उद्धृत)

अर्थ—इरिला नामक यवन को शुद्ध करके हिंदू बनाया गया और उसने शुद्ध होने के पश्चात् मन्दिर के लिये दो कुण्ड बनवाये ।

१५- मुसलमान स्त्रियों की शुद्धि—सम्वत् १७८७ वि० में काठियावाड़ में भयङ्कर अकाल पड़ा। उसका वर्णन करते हुये 'तारीख सोरठा' का मुसलमान लेखक लिखता है कि—

"अकाल के समय मारवाड़ के कई पुरुषों ने मुसलमान स्त्रियों को अपने घर में आश्रय दिया और उनके सिर

पर जौ जलाकर (किसी पात्र में रखकर) तथा गौ मूत्र पिला कर उनकी शुद्धि की गई। इस प्रकार उन मुसलमान स्त्रियों को हिंदू बनाया गया। उस समय मारवाड़ी लोग कहते थे कि औरंगजेब बादशाह ने जब जोधपुर को फतह किया तो उसने यहां के बहुत से हिंदुओं को तलवार का भय दिखला कर मुसलमान बनाया था। इस लिये हम उन मुसलमान स्त्रियों को शुद्ध करके उस समय का बदला ले रहे हैं।"

१६- महमूद के सरदारों की शुद्धि—सम्वत् १०८१ वि० में महमूद गजनवी जब हिन्दुस्तान में आया तब अनहिलवाड़े के राजा भीमदेव ने उसकी फौज के कई मुसलमान (सरदारों) को गिरफ्तार कर हिन्दू बनाया। और हिन्दुओं ने तुर्की, अफगानी, मुग़ल, आदि अनेक अविवाहित मुसलमान स्त्रियों से विवाह किये। विवाह से पहिले उन स्त्रियों को वमन और जुलाब की औषधि खिला कर शुद्ध किया था।

(देखो तारीख 'सोरठा' जिसका लेखक मुसलमान है)

१७- बादशाह फर्रुखसियर की शुद्धि—बादशाह फर्रुखसियर की मृत्यु के पश्चात् अब्दुल्ला खां ने उनकी बेगम उसके हिंदू पिता को वापिस लौटा दी। उसकी शुद्धि हिंदू रीत्यनुसार दिल्ली में ही की गई। उसकी मुसलमानी पोशाक उतरवा कर हिंदू वस्त्र पहिनाये गये और उसको एक करोड़ रुपये की सम्पत्ति सहित उसके पिता के घर जोधपुर भिजवा दिया गया। देखो मिस्टर इरविन, लिखित-लेटर मुगल्स वाल्यूम पहिला १७०७ से १७२० तक अध्याय ५ सेकशन १५।

१८- शाही क़ाज़ी की शुद्धि—मुग़ल सम्राट् के समय में 'साम्भर (जयपुर) का शाही क़ाज़ी 'श्री दादू' जी ने उपदेश देकर शुद्ध किया और उसका नाम 'गरीबदास' रक्खा जिसको समान अधिकार दिये गये और जब 'श्री दादू' जी का स्वर्ग-वास हो गया तो उनकी नारायण गद्दी पर 'गरीब दास' ही बैठाये गये। मौलवियों के हुल्लड़ मचाने पर गरीबदास को मुग़ल सम्राट् ने बुलाकर पूछा कि तुम मुसलमान क्यों न बने? तो उन्होंने मौलवियों के सामने कुरान पर बहुत से एतराज़ किये जिनका उत्तर वे न दे सके और फिर सम्राट् ने यह कहके कि अब ये मुसल्मानों के काम का नहीं रहा, 'गरीब दास' को विदा कर दिया।

१९- पौने दो लाख की शुद्धि—अभी १३ फरवरी सन १९२३ ई० से ३१ दिसम्बर सन् १९२७ ई० तक भारतीय हिंदू शुद्धि-सभा; ने एक लाख ६३ हजार बिछुड़े हुये (नो-मुस्लिम) भाइयों को शुद्ध करके आर्य जाति में दीक्षित किया है।

२०- हज़रत सरमद का हिंदू धर्म—

"सरमद बजहां बसे निकोनाम शुदी।
ज़मज़हबे कुफ़्र, रागिब बइस्लाम शुदी" ॥
"आखिर चिह खता दीदी ज़ल्लाह व रसूल।
कि बर गश्ताये मुरीदे लछमनो राम शुदी"॥
(रुबाइयाते सरमद)

अर्थ—हे सरमद! तू संसार में बड़ा अच्छा धर्मात्मा

हुआ क्योंकि कुफ्र के मज़हब से निकलकर इस्लाम का प्रेमी बन गया, परन्तु यह तो बता, कि अब तूने अल्लाह और रसूल में क्या बुराई देखी जो उनको भी छोड़ कर राम लक्ष्मण का भक्त बन गया।

हिन्दू राजा मुसलमान स्त्रियों को शुद्ध करके उनसे विवाह करते थे

१. उदयपुर के महाराणा बापा रावल ने मुसलमान राजकुमारी से विवाह किया था और उनकी संतान आज तक सूर्य वंशी मानी जाती है।

२. जोधपुर के महाराजा 'गजसिंह' ने बादशाह शाहजहां के प्रसिद्ध वज़ीर 'असद खां' की स्त्री 'अनारां' को उस से छीन कर अपनी बीबी बना लिया। देखो मारवाड़ का इतिहास।

३. मारवाड़ के राजा 'रायपाल' जी ने ६०० मुसलमानियों को छीन लिया और उनका विवाह अपने सर्दारों के साथ कर दिया (देखो मारवाड़ का इतिहास)

४. सम्वत् १५४८ वि० चैत सुदी ३ को बादशाही हाकिम मल्लू खां पीपाड़ (मारवाड़) के ग्राम 'कोसाने' के तालाब पर से १४० राजपूत कन्याओं को जबरदस्ती पकड़ लगया। इस पर मारवाड़ के राजा 'राव सातल' जी

ने मुसलमानों पर चढ़ाई की और उन हिंदू कन्याओं को मुसलमानों से छुड़ाकर व्याज स्वरूप कई मुसलमान अमीर ज़ादियों को भी ले आया और उन्हीं के साथ मुसलमान सेनापति 'घुड़लाखां' की रूपवती कन्या को भी छीन लिया और उसका विवाह हिंदू सरदार के साथ करादिया। घुड़ले खां की लड़की ने अपने हिन्दू पति से प्रार्थना की कि उसके बाप की कोई यादगार बना दी जाय। जो स्वीकार हुई तब से राजपूताने भर में गण गोरियां के दिनों में जो गाउस्थान का प्रसिद्ध मेला है घुडल्यो घुमेलो का खेल जारी हुआ और अब तक लड़कियां इस खेल को खेलती हैं

(मारवाड़ का इतिहास)

५. मारवाड़ के राव मल्लीनाथ राठौर (शरीरान्त सम्वत् १४५६ वि० में हुआ है) के ज्येष्ठ पुत्र 'कुंवर जगमाल' जी ने मांडू (मालवा) के मुसलमान बादशाह का युद्ध में परास्त किया और उसकी रूपवती पुत्री (गीदोली) के साथ अपना विवाह किया। मारवाड़ के वाडमेरा राठोर जमींदार इसी शुद्ध शुदा गीदोली की सन्तति हैं (देखो परिहार वंश प्रकाश पृष्ठ ९६)

६. अर्जुन ने 'उलोपी' नामी नागवंश की पुत्री अमेरिकन से विवाह किया (महाभारत अ० २१४ आदि पर्व)

७. श्रीकृष्ण जी के पोते अनिरुद्ध ने मिश्र देश की लड़की उषा के साथ विवाह किया (हरिवंश पुराण अ० १८७-१८८)

८. शालिबाहन राजपुत्र ने शाक जाति के यूनानी राजा रुद्रदमन की पुत्री से विवाह किया।

९. 'रावत चैचक' जैसलमेर के हिंदू राजा ने सेवातियों के सुलतान 'हेवत खां' की पोती 'सालन देवी' से विवाह किया था। (टाड राजस्थान भाग सफा २३३।

१०. गंगा लहरी के रचियता श्री पं० जगन्नाथ जी ने मुसलमान बादशाह की कन्या 'लवङ्गिका' के साथ विवाह किया।

इसी प्रकार और भी बहुत सी शुद्धियां भिन्न २ काल में भिन्न २ महात्माओं द्वारा होती रही हैं। किन्तु पुस्तक के बढ़ जाने के भय से यहां नहीं लिखी गई। इतिहास व्यवस्था का केवल यही उद्देश्य था कि प्राचीन काल में शुद्धियां हुआ करती थीं सो वह इससे सिद्ध होगया है।

॥ इति इतिहास व्यवस्था ॥

अन्तिम निवेदन

पाठक महानुभाव! उपरोक्त शास्त्रीय प्रमाणों विद्वानों, बड़े २ नेताओं और धर्माचार्यों की व्यवस्थाओं ने वेद, शास्त्र, पुराण और इतिहास के प्रमाणों से यह भली प्रकार सिद्ध कर दिया है कि शुद्धि सनातन है और जो मनुष्य किसी भी कारण और किसी काल में हिंदू धर्म से पतित हो गये हों, उनको देश कालानुसार प्रायश्चित्त कराके (शुद्ध करके) पुनः हिंदू जाति में शामिल कर लेना चाहिये। हिंदू-जाति और हिंदू-शास्त्र का गौरव तथा उनका महत्व भी इसी बात में है कि ईश्वर प्राप्ति के मार्ग से विचलित हुए मनुष्यों को सन्मार्ग दिखलावें, पतितों को उठावें, तथा दीनों की रक्षा करें। शास्त्र की आज्ञा है कि यदि पतितों का प्रायश्चित्त करा कर अपने में न मिला लिया जावे तो पतित लोग जो पापकृत्य करते हैं, उनका किया हुआ सम्पूर्ण पाप उस जाति को लगता है जो उन्हें शुद्ध करके अपने में नहीं मिला लेती। पुरातन ऋषि शास्त्राज्ञा का अनुसरण करते थे यही कारण है कि उस समय की आर्य जाति और आर्यावर्त देश सन्मानित तथा उन्नत था। आज ऋषि--सन्तान ने उसे छोड़ दिया है, अतः दुर्दशा प्रसित है, अवनत और दूसरों के पादाक्रान्त है। इसलिये आर्य जाति के पुजारियों से यह निवेदन है कि यदि वे आर्य जाति को जीवित देखना चाहते हैं, तो बिना ननु नच के "शुद्धि" करें, और शुद्धि करने वालों को हर प्रकार से सहायता दें।

॥ इति शुद्धि-व्यवस्था समाप्तम् ॥

छपगई ! छपगई !! छपगई !!!

शीघ्रता करो !

"शुद्धि-संस्कार-पद्धति" जिसकी बहुत दिनों से आवश्यकता थी, छपकर तैयार हो गई है। इस पुस्तक में आर्येतर अर्थात् मुसलमान आदिकों को शुद्ध करने की सरल विधि है। जिसके पास 'शुद्धि-संस्कार-पद्धति' होगी वह बड़ी आसानी से शुद्धि-संस्कार बिना किसी पण्डित की सहा‌यता के करा सका है। यह पद्धति जहां सरल है वहां प्रमाणिक भी है। इसलिये प्रत्येक आर्य समाजी, सनातन धर्मी, सिक्ख आदि प्रत्येक सम्प्रदाय के हिन्दू-आर्य को मंगानी चाहिये। इस पुस्तक में शुद्धि-संस्कार के अतिरिक्त शुद्धि सम्बन्धी अन्य कई आवश्यक बातों का भी समावेश है। पुस्तक केवल चार हज़ार छपी है जो धड़ा धड़ बिक रही है। समाप्त होने पर दूसरी बार छपने तक प्रतीक्षा करनी होगी-इसलिये ग्राहक महाशय जल्दी करें। कागज़ छपाई सफाई उत्तम है। साइज २०X३० के १६ पेजी ६० पृष्ठों की पुस्तक है। मूल्य लागत मात्र ।) चार आना।

नोट:—पच्चीस रुपये की या इससे अधिक की मंगाने पर २५) रुपया प्रति सैंकड़ा कमीशन दिया जावेगा। डा० महसूल हर हालत में पृथक् देना होगा।

मिलने का पता:—

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा,

दिल्ली।

श्रद्धानन्द प्रेस श्रद्धानंद बाजार देहली में मुद्रित